CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

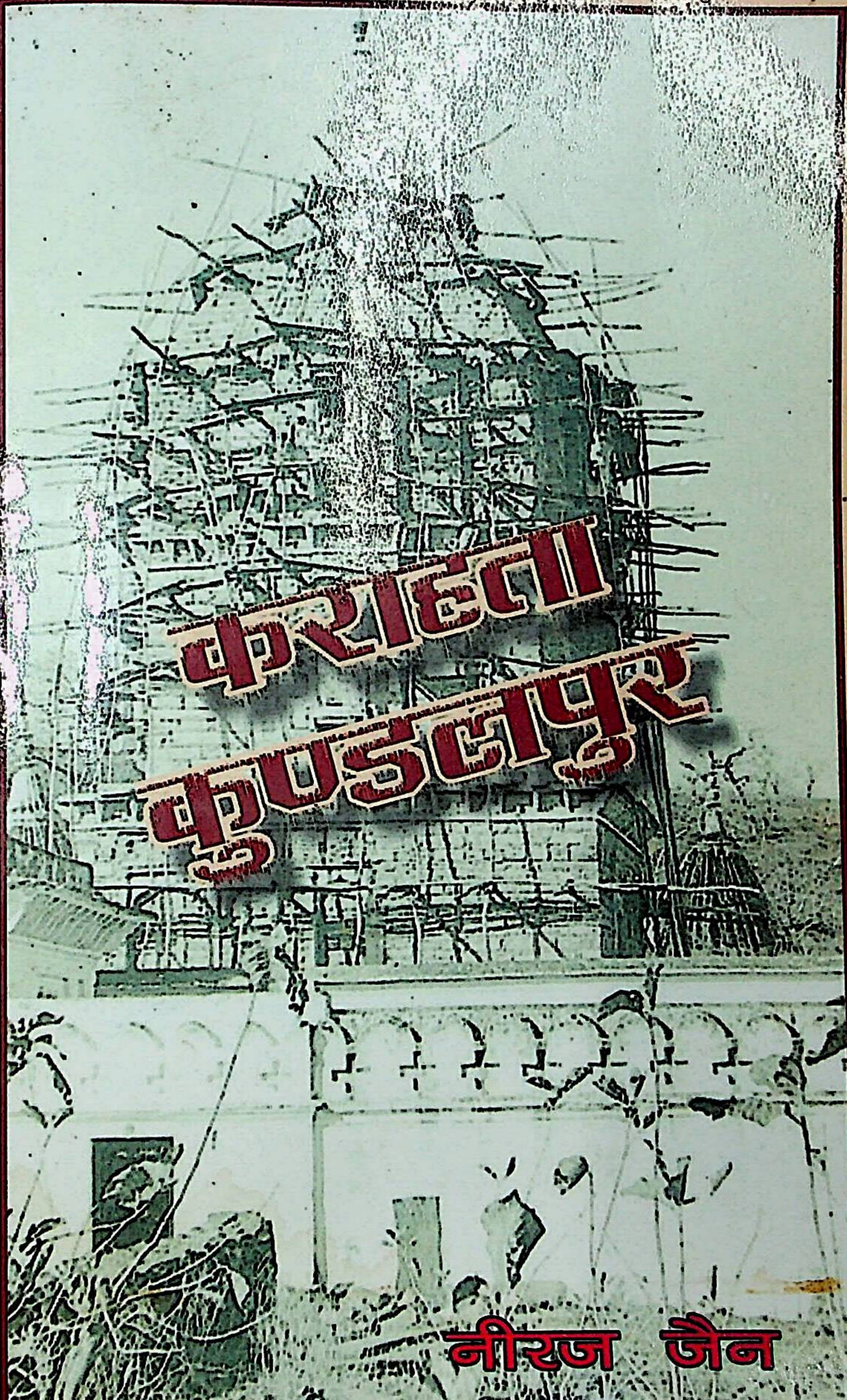

कराहता कुण्डलपुर

नीरज जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

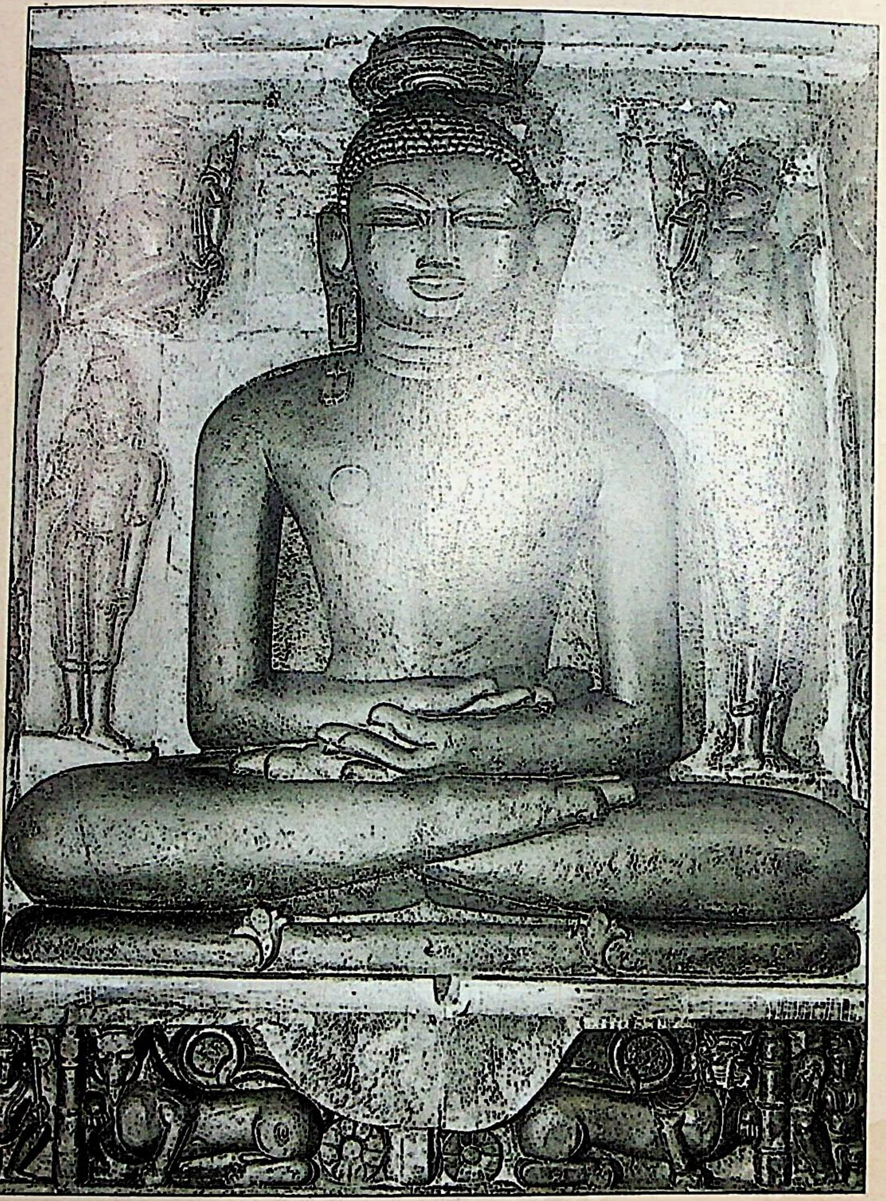

कुण्डलपुर के बड़ेबाबा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवनितल गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणाम्,
वन भवन गतानां दिव्य वैमानिकानाम्।
इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानाम्,
जिनवर निलयानां भावतोऽहं नमामि।

अखिल भूमण्डल में
और पाताल लोक में,
वनों में, भवनों में तथा
देव विमानों में विद्यमान
कृत्रिम तथा अकृत्रिम,
मानव कृत और इन्द्रों द्वारा पूजित,
समस्त जिनालयों को
मैं भक्ति-भाव पूर्वक नमन करता हूं।

(कुण्डलपुर में जो थे, और जो बचे हैं, वे सभी मन्दिर इनमें शामिल हैं)

यह पुस्तक दूसरों को भी पढ़ायें, वितरित करायें और मन्दिरों में रख कर
प्राचीन मन्दिरोंको विनाश से बचाने में सहयोगी बनें.
इस प्रति का यह मूल्य भी आपसे अपेक्षित है.

आवरण पर चित्र

मुख पृष्ठ : बड़ेबाबा मन्दिर का सुदृढ़ शिखर जिसे अकारण गिराया गया।
पृष्ठ 2 : बड़ेबाबा की मनोहारी छवि।
पृष्ठ 3 : बड़ेबाबा के माथे पर दरारें, पहले और आज।

सम्मति / समीक्षा के लिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षेषु वर्षान्तर पर्वतेषु, नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु,
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वन्दे जिनपुंगवानाम् ।

क्षेत्रों में और क्षेत्रान्तरों में, पर्वतों पर और
नन्दीश्वर आदि सभी द्वीपों में,
लोक में भगवान जिनेन्द्र के जितने भी जिनालय हैं,
मैं भक्ति-भाव पूर्वक उनका वन्दन करता हूं ।

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ, रजतगिरिवरे, शाल्मलौ जम्बुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे, रतिकर रुचके, कुण्डले मानुषांके ।
इष्वाकारे अंजनाद्रौ दधिमुख शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भुवन महितले यानि चैत्यालयानि ।

मेरु पर्वतों पर, कुलाचलों पर और रजतगिरि पर,
शाल्मली, जम्बू तथा वक्षारगिरि के चैत्य वृक्षों पर,
रुचिकवर, कुण्डल पर्वतों पर और मनुष्य लोक में
ईक्ष्वाकार, अंजनगिरि तथा दधिमुख आदि पर्वतों पर,
व्यंतरलोक में, स्वर्गलोक में और ज्योतिर्लोक में,
पृथ्वी पर और तीनों लोकों में जितने भी जिनालय हैं,
मैं भक्ति-भाव पूर्वक उन सबकीअभिवन्दना करता हूं।
(कुण्डलपुर में जो थे, और जो बचे हैं, वे सभी मन्दिर इनमें शामिल हैं)

यह पुस्तक दूसरों को भी पढ़ायें, वितरित करायें और मन्दिरों में रख कर
प्राचीन मन्दिरोंको विनाश से बचाने में सहयोगी बनें.
इस प्रति का यह मूल्य भी आपसे अपेक्षित है .

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5345

ॐ

कलात्मक कुण्डलपुर

लेखक एवं छायाकार
नीरज जैन

प्रकाशक
मनीशा ट्रस्ट,
शान्ति-सदन, कम्पनी बाग,
सतना. म.प्र. ४८५ ००१.

ग्यारहवां संस्करण   मूल्य : पच्चीस रुप्या   अप्रैल २०००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Karahta Kundalpur

Text & Photographs by

Niraj Jain

Published by

Manisha Trust

Shanti-sadan, Company Baug,

SATNA. (M.P.) 485 001.

Printed by

Deep Printers

A-8, Mayapuri Industrial Area, Phase - I,

New Delhi 110 064

Eleventh Edition **Rs. 25.00** **April 2000**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया पहले इसे पढ़ें : तब फिर आगे बढ़ें

मैंने अपने जीवन में अन्याय कभी बर्दाश्त नहीं किया। हमेशा और हर जगह अन्याय के खिलाफ स्व-प्रेरणा से आवाज उठाई है। यह प्रवृत्ति अब मेरी आदत ही बन गई है।

जब कहानपंथी भाइयों ने हमारे पूज्य मुनियों-आचार्यों को 'काछी-कुंजड़ा' जैसे अपशब्द बार-बार लिखे-छापे और शास्त्र की गद्दी पर से बोले तथा श्रीकहानजी को 'सद्गुरुदेव' लिखकर कमल पर विराजमान उनका चित्र छापना शुरू किया तब १९८७ में मैंने ही 'सोनगढ़-समीक्षा' पुस्तक लिखकर उस दुष्प्रवृत्ति का कारगर विरोध किया था। किसी अन्य ने यह दुस्साहस नहीं किया।

गोमटेश्वर को श्वेताम्बर मूर्ति बताने वाले कपटी लेखक की पुस्तक के खण्डन में मैंने ही 'परम-दिगम्बर गोमटेश्वर' पुस्तक लिखी। अन्य कोई विद्वान इसके लिये सामने नहीं आया।

हिम्मतनगर में कहान-पंथी समुदाय ने कुछ मूर्तियों के प्राचीन लेख घिसवाकर अपने लेख खुदवा दिये। यह प्रकरण मैंने ही समाज के सामने उठाया और टोडरमल स्मारक के अधिकारियों तथा प्रतिष्ठाचार्यों को दिगम्बर आचार्य पूज्य विद्यानन्दजी के सामने खड़ा करके लिखित रूप से क्षमा-याचना कराकर ही विराम लिया। उस दिन श्रीमान् साहु अशोककुमारजी स्वयं मेरे साथ जयपुर गये। बादमें उन्होंने अपने हस्ताक्षर से यह समाचार सारी जैन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया।

रीवा में एक अविवेकी अधिकारी ने जैन पाठशाला के अधिग्रहण का बहाना लेकर भगवान जिनेन्द्र को ताले में बंद कर दिया। रीवा के पंच मेरे पास आये। समाज के कुछ मित्रों को साथ लेजाकर मैंने रीवा में अधिकारियों को अल्टीमेटम दिया, तथा अपने सुपुर्दनामे पर ताला खुलवाया। उस दिन मैंने अपनी प्रतिज्ञानुसार मूर्ति को मुक्त कराकर, अभिषेक पूजन करके ही भोजन किया।

सतना जैन मन्दिर की प्रबंध समिति ने मन्दिर के हाल को चौकोर करने के लिये तीसरी वेदी को तोड़ने का निर्णय लिया, विरोध के स्वर दबा दिये गये और निर्धारित तिथि को वेदी की मूर्तियां उठाने के लिये अंतिम पूजा कर ली गई, तभी इसे रोकने के लिये समितिको न्यायालय का स्थगन आदेश थमा दिया गया। परिणाम स्वरूप वह वेदी आज भी सुरक्षित और पूजित है। स्थगन आदेश निकलवाने में मेरी प्रमुख भूमिका थी जिसे दादू प्रेमचन्दजी अंत समय तक याद करते रहे।

अशोकनगर में एक कहानपंथी महिला ने पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी को लेकर अपने प्रवचन में कुछ अनर्गल बातें कह दीं। समाज के अनुरोध पर मैं प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी को साथ लेकर वहां गया और हम लोगों ने उस बहिनके सारे आक्षेपों के उत्तर देकर उसे निरुत्तर किया।

मैं आज ये संस्मरण आत्म-प्रशंसा के लिये नहीं लिख रहा हूं। आज तक अपनी कलम से कहीं नहीं लिखे। अपना कर्तव्य समझकर जो बना सो किया, पर **जीवन में अन्याय कभी बर्दाश्त नहीं किया।** आज यह पुस्तक भी इसलिये मैंने लिखी है कि कुण्डलपुर में श्रीक्षेत्र के साथ, बड़ेबाबा के साथ और समाज के साथ अन्याय हो रहा है। बड़ेबाबा का शिखर ध्वस्त कर दिया गया है और तीन वेदियां तथा चार मन्दिर खोदकर फेक दिये गये हैं। एक मन्दिर बनाने के लिये आठ-दस प्राचीन-पूजित मन्दिरों का विनाश कैसे सहा जाये ? वहां ऐसी निर्दयता पूर्वक प्राचीनता का विनाश हो रहा है कि उस हानि की पूर्ति शायद कभी सम्भव नहीं होगी। यही मेरी चिन्ता है।

मैं बहुत छोटा व्यक्ति हूं, समाज ही मेरा सर्वोच्च न्यायालय है। समाज मेरे लिये माता-पिता की तरह है। माता जैसे शिशु की पीड़ा समझ लेती है, उसी तरह समाज मेरी पीड़ा समझे और आप कुण्डलपुर का दर्शन करके ही अपनी धारणा बनायें, बस, इसी अनुरोध के साथ,

सदैव सा, आपका, - नीरज जैन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतों के मंगल आशीष

बड़ेबाबा की सुरक्षा को लेकर देश में सर्वत्र गहरी चिन्ता व्यक्त की जा रही है। बड़ी संख्या में हमने समाज के हर वर्ग के लोगों से चर्चा की। हमारा साहस बढ़ा है कि समाज के हर वर्ग के लोगों ने बड़ेबाबा को अपने स्थान से हटाने का और उनके मन्दिर को गिराने का विरोध किया है। किसी ने भी इस हानिकर अनुष्ठान का समर्थन नहीं किया।

पिछले छह महीनों में हमने जगह-जगह जाकर पूज्य आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों और प्रायः सभी पूज्य भट्टारकों से भी इस बारे में चर्चा की है। हमें यह लिखते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि सभी पूज्य संतों ने इस प्रसंग में प्राचीनता की रक्षा को जैन संस्कृति की सेवा का काम बताया और प्राचीन जिनालयों को गिराने-मिटाने की प्रवृत्ति को धर्म-विरोधी कृत्य बताते हुए उसका निषेध किया है। उनमें से अनेक के पत्र, टेप मैसेज और वीडियो हमारे पास हैं। हमारी सफलता के लिये उन सभी पूज्य संतों का मंगल आशीर्वाद हमें प्राप्त हुआ है। इस वात्सल्य पूर्ण कृपा के लिये हम उन पूज्य महात्माओं के कृतज्ञ हैं। उन सभी की वाणी विस्तार से हम प्रकाशित करेंगे, परन्तु यहां तो उनमें से आठ आचार्य भगवन्तों के नामोल्लेख मात्र से हमें संतोष करना पड़ रहा है -

पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज

पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी महाराज

पूज्य आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज

पूज्य आचार्य (स्व.) श्री आर्यनन्दीजी महाराज

पूज्य आचार्य श्री बाहुबलीसागरजी महाराज

पूज्य आचार्य श्री देवनन्दीजी महाराज

पूज्य आचार्य श्री पद्मनन्दीजी महाराज

एवं पूज्य श्री कुशाग्रनन्दीजी महाराज

इन संतों के अलावा भी प्राचीनता की रक्षा के इस अभियान का समर्थन करने वाले सज्जनों की लम्बी तालिका हमारे पास है।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ेबाबा के चरणों में लेखकके साथ श्री रूपचन्द्र बजाज

(१९७४ का एक चित्र)

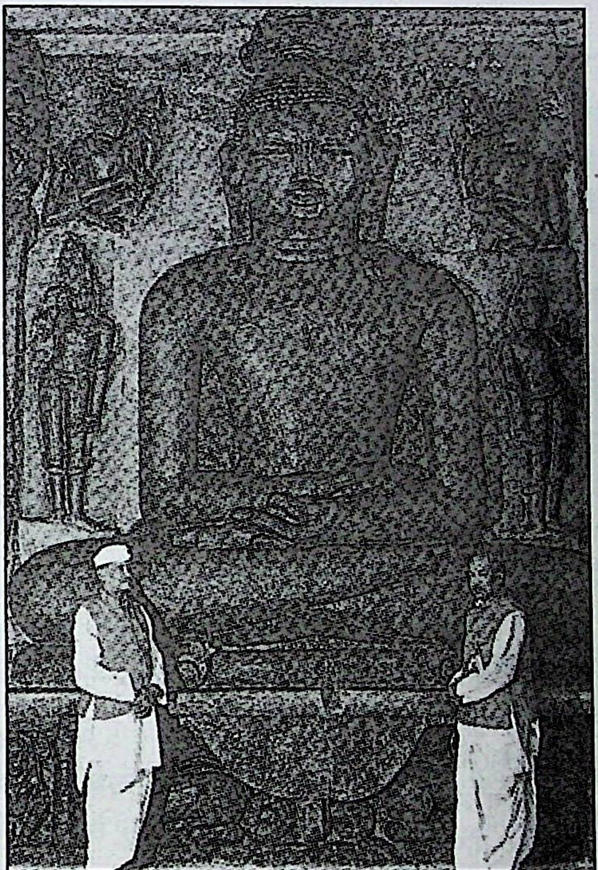

छाया: सुधाकर जैन

बड़ेबाबा के आस्थावान भक्त और मेरे स्मृतिशेष मित्रद्वय
स्व. रूपचन्द्र बजाज तथा स्व. भागचन्द्र इटौरया
को
सादर समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तालिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	जिनालय वन्दना	१
२.	संतों के मंगल आशीष	६
३.	समर्पण	७
५.	भूमिका	९
६.	निषेधाज्ञा प्रभावशील है	१२
७.	कराहता कुण्डलपुर	१३
८.	सिंह-द्वार की असलियत	१८
९.	श्रीक्षेत्र का परिचय	१९
१०.	वन्दना (कविता)	२६
११.	अगले पृष्ठों पर पढ़िये	३०
१२.	कुण्डलपुर के शिखामणि : बड़ेबाबा	३१
१३.	क्या कल्पना करते थे मन्दिर-निर्माता	४४
१४.	बड़ेबाबा के बारे में एक छोटा सा अनुरोध	४५
१५.	यह जीर्णोद्धार है या विनाश ?	५५
१६.	मन्दिर, मन्दिर हैं : सिर्फ इमारतें नहीं	६७
१७.	यह उपसर्ग भी निवारित होगा	७०
१८.	मूर्ति-भंजकों का प्रहार (कविता)	७१
१९.	क्या कहा प्रतिष्ठाचार्य ने ?	७६
२०.	हम क्या सोंपकर जायेंगे नई पीढ़ी के हाथ में ?	७९
२१.	श्रद्धा छोटी-बड़ी होती है : मन्दिर छोटे नहीं होते	८२
२२.	सुहाना सपना (कविता)	८४
२३.	कब से चल रहा है जीर्णोद्धार	८८
२४.	पुरातत्व विभाग सहयोगी है : विरोधी नहीं	९३
२५.	हमारे खिलाफ निन्दा-प्रस्ताव	१०६
२६.	बनाना कठिन है : मिटाना आसान	११३
२७.	मित्रों के मंतव्य	११७
२८.	नैसर्गिक सौन्दर्य भी तीर्थ की शोभा है.	१३५

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर हमारा इष्ट-तीर्थ है। हमारे लिये वह निकटतम होने से सुगम भी रहा है। मैंने जबसे होश सम्हाला है, लगभग प्रतिवर्ष कुण्डलपुर की वन्दना करने का सौभाग्य पाता रहा हूँ। मेरे संघर्षमय विगत जीवन की अनेक स्मृतियों में कुण्डलपुर की यात्राएं माला के मोती की तरह गुँथी हुई हैं। यहाँ आकर मुझे अनेकों बार साहस और धीरज प्राप्त हुआ है, अनेकों बार मेरे मनकी घोर चिन्ताएं वर्द्धमान सागर के जल में डूब मरी हैं, और अनेकों बार मैं निराशा से भरा यहाँ आया और नई आशाओं-उमंगों से निहाल होकर लौटा हूं।

सन 1948 में, जब कविता करने में मेरा उपयोग लगता था, क्षेत्र की प्रबन्ध समिति के तत्कालीन मन्त्री, भाई रूपचन्द बजाज ने इस क्षेत्र को एक काव्य-मय परिचय और बड़े बाबा की पूजन लिखने का प्यार भरा आदेश मुझे दिया था। मैं कुण्डलपुर के पूर्व इतिहास तथा-श्रुतियों से परिचित तो था ही, क्षेत्र की अनुपम और मनोहारिणी शोभा-सुषमा का भी मेरे भावुक मन पर बचपन से ही अमिट और गहरा प्रभाव था। भाई रूपचन्दजी के आग्रह से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और लगा कि मेरी भक्ति-प्रवण अनुभूति को अभिव्यक्ति का मार्ग मिल गया है।

इतिहास और तीर्थ-पूजा के साथ मेरा यह खण्डकाव्य १९४९ की जनवरी में पहली बार साइकिलोस्टाइल मशीन पर मैंने अपनी हस्तलिपि में प्रकाशित किया था। उसके बाद इस पुस्तक के दस संस्करण हो चुके हैं। यह ग्यारहवां संस्करण आपके हाथ में है। रचना में शब्द मेरे हैं, मन को छू लेने की शक्ति क्षेत्र की सुषमा ने ही इन शब्दों को दी है। उसमें मेरा कोई कौशल नहीं है।

आप भी किसी शाम, वर्द्धमान सागर की सीढ़ियों पर, पानी में पैर डालकर बैठ सकें, कभी छहघरिया के मन्दिर की बाउण्ड्री पर से, बड़े बाबा के मन्दिर के पीछे भामण्डल की तरह उगते हुये सूर्य को देख पायें, या किसी दूधिया रात में बड़े बाबा के मन्दिर के पीछे निर्भीक विचरते हिरनों की क्रीड़ा, और (जब-तब ही दर्शन देने वाले) तेंदुए की छलांगें देख सकें तो विश्वास रखिए कुण्डलपुर पर आप इससे भी अच्छी कविता लिख सकेंगे। अभिव्यक्ति तो अनुभूति का रस है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस क्षेत्र की पौराणिकता, ऐतिहासिकता तथा बड़े बाबा की अद्वितीय प्रतिमा के बारे में कुछ शोध कार्य हुआ है, जिसका संक्षिप्त विवरण मैंने आगे दिया है। अपनी धारणा भी मैं स-प्रमाण उपस्थित कर रहा हूँ। एक बात यहां कह देना आवश्यक है कि हमारी कला और संस्कृति के ऐसे महत्वपूर्ण स्थान शोध के लिये सदैव खुले हैं। आगे कभी भी निष्पक्ष शोध से जो प्रमाण-समर्थित तथ्य सामने आयेंगे, वे मुझे भी स्वीकार्य होंगे।

आज मैंने लिखा है कि यह मूर्ति प्रथम-तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की है। पर आधी शताब्दी पूर्व, जब क्षेत्र का पद्यमय-परिचय और बड़े बाबा की पूजन मैंने लिखी थी तब तो महावीर के रूप में ही मुझे उनका दर्शन हुआ था। उस परिचय-पूजन में आज कुछ भी सुधार या परिवर्तन करना मुझे अच्छा नहीं लगा अस्तु वह कविता ज्यों-की-त्यों इस संस्करण में भी जा रही है। आशा है मेरे पाठक इसे उसी प्रकार अपनाकर मुझे स्नेह प्रदान करेंगे।

यह आपात् कालीन संस्करण –

'कुण्डलपुर' का यह ग्यारहवां संस्करण **आपात्कालीन संस्करण** है और इसे मैं अपने पाठकों को प्रसनन्ता पूर्वक समर्पित नहीं कर पा रहा हूं। दुर्भाग्य से पिछले चार-पांच वर्षों में श्रीक्षेत्र पर बहुत कुछ अप्रिय घटित हो गया है, और हो रहा है। सबसे अधिक लज्जाजनक यह है कि स्वयं क्षेत्र कमेटी ने, नव-निर्माण के प्रलोभन में पड़कर, बड़ेबाबा मन्दिर का शिखर तोड़कर गिरा दिया है और बड़ेबाबा मन्दिर परिसर के चार प्राचीन मन्दिरों को तथा मण्डप की तीन वेदियों को खोदकर फेक दिया है। सबसे अधिक चिन्ता की बात यह है कि कमेटी द्वारा किये जा रहे पूजित मन्दिरों के इस ध्वंस और नवीन मन्दिर के निर्माण की कोई प्रस्तावित योजना समाज के सामने नहीं रखी गई। **आगे अभी और कौन से मन्दिरों की बारी है, इसके लिये समाज में चिन्ता तो है पर उसे कुछ भी पता नहीं है। इस प्राचीन तीर्थ पर निरर्थक तोड़-फोड़ का सारा काम गुपचुप, जैसे किसी रहस्यमय षडयंत्रके घेरे में चल रहा है।**

इस विनाशक अभियान की जानकारी मिलते ही समाज में जागरूकता आई है। सरकार के पुरातत्व विभाग और राजस्व विभाग भी वैधानिक कार्यवाही करके, शेष को बचाने के लिये कृत-संकल्प हैं। कुण्डलपुर कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र सिंघई के नेतृत्व में श्री चन्द्रकुमार बजाज तथा समिति के कुछ पूर्व सदस्यों सहित समाज का प्रबुद्ध वर्ग और श्रीक्षेत्र का भक्त समुदाय इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनाश-विरोधी आन्दोलन में सक्रिय सहयोगी है। समाज के अनेक नेता और प्रतिष्ठाचार्य भी मन्दिर-ध्वंस और बड़ेबाबा को हटाने-सरकाने में भारी हानि देखते हैं और इस सबका विरोध कर रहे हैं। पूज्य आचार्य भगवन्तों, मुनिराजों और भट्टारकों में हमें एक संत भी ऐसे नहीं मिले जो इस प्राचीनता के विनाश का समर्थन करते हों, वे सब इस विनाश-लीला को पापकार्य बताते हुए उसका निषेध कर रहे हैं। विरोध के उन हजारों स्वरों के बीच, यह एक स्वर हमारा भी है।

आधी शताब्दी से अधिक हो गया, बड़ेबाबा की महिमा गाता-छपाता-और आपके हाथों तक पहुंचाता आया हूं, आज इस 'आपात् कालीन संस्करण में कुछ 'प्रतिक्रियात्मक लेखन' भी मजबूरन मुझे करना पड़ रहा है, पर वह मेरी पद्धति नहीं है, उसे मेरी परवशता मानकर आपको सहना है। उसे किसी प्रकृतिस्थ लेखक की स्वस्थ्य मानसिकता ने नहीं, एक दुखी और अपमानित भक्त की आवेश-प्रेरित मानसिकता ने लिखा है। आशा है मेरे कृपालु पाठक इसे इसी प्रकार ग्रहण करेंगे और इस अतिक्रमण के लिये मुझे क्षमा करेंगे।

एक बात और मुझे कहनी है। तीर्थ हमारे शास्वत साधना धाम हैं और उनकी सार-सम्हार करते रहना हम सबका दायित्व है। आप साल में कम से कम एक बार कुण्डलपुर की वन्दना करें और उसकी व्यवस्था में रुचि लें। आज वहां जो अवांछित घटित हो रहा है, वह एक सामयिक प्रमाद है। कल नहीं रहेगा। जिस प्रकार मौत हारती है, जीवन कभी हारता नहीं, उसी प्रकार ध्वंस पराजित होगा, निर्माण कभी हारेगा नहीं। बस, यही आस्था और विश्वास लेकर आइये, कुण्डलपुर आपकी प्रतीक्षा करता है।

पुस्तक की तैयारी में अनेक मित्र सहयोगी रहे हैं। किसी ने मैटर दिया, किसी ने प्रोत्साहन और परामर्श दिये, किसी ने कुछ चित्र जुटाये। दीप प्रिण्टर्स के श्री मनोहरलालजी ने अल्प समय में यह सुन्दर मुद्रण किया है। मैं इन सबका आभारी हूं। आपकी सम्मति/समीक्षा सदा की तरह मेरा मार्ग-दर्शन करेगी।

सदैव सा, स्नेहाधीन,

शान्ति सदन, सतना.
बसंत पंचमी,
१० फरवरी २०००.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निषेधाज्ञा प्रभावशील हो चुकी है –

कुण्डलपुर की प्राचीनता की रक्षा के लिये पुरातत्व विभाग सतत जागरूक है। मन्दिर गिराने की कार्यवाही सामने आते ही विभाग ने इसके खिलाफ विधिवत् निषेधाज्ञा लागू कर दी है -

भारत सरकार पुरातत्व विभाग

डॉ. फणिकान्त मिश्र — **अधीक्षण पुरातत्वविद्**
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
टी.टी. नगर, भोपाल- 462003 अर्धशा. पत्र सं.18/16/98-स्मारक

दिनांक ३-६-१९९९

बड़े बाबा मंदिर एवं मूर्ति के प्राचीन स्मारकों को
मूलतः बचाना शासनका काम

जैसा कि आपको विदित है कि आदिनाथ बड़े बाबा के मंदिर जो भारत सरकार द्वारा संरक्षित स्मारक है उसके पास **जैन समाज कमेटी कुण्डलपुर द्वारा एक नये मंदिर का निर्माण अवैध रूप से किया जा रहा है तथा यह भी जानकारी मिली है कि नये मंदिर में बड़े बाबा की मूर्ति को ले जाकर स्थापित करने की भी योजना तैयार की जा रही है।**

यह कार्य भारत सरकार द्वारा जारी प्राचीन स्मारक स्थल एवं अवशेष अधिनियम 1958 तत्सम्बन्धित नियम 1959 तथा अधिसूचना 4 जुलाई, 1992 के तहत अवैधानिक/ नियम के विरुद्ध है, अतः **आपसे अनुरोध है कि इस अवैध कार्य पर रोक लगाने हेतु सम्बन्धित अधिकारियोंको तत्काल आदेश प्रदान करनेकी कृपा करें ताकि समाप्त हो रही प्राचीन स्मारक की मूलता को बचाया जा सके।**

आदर सहित,
आपका
डॉ. फणिकान्त मिश्रा

प्रति
श्री एस. एन. मिश्रा
जिलाध्यक्ष, दमोह (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5345

ॐ

कराहता कुण्डलपुर

कुण्डलपुर-काण्ड की तथा-कथा

क्या आप जानते हैं कि श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर में सैकड़ों साल पुराने चार पूजित और मजबूत मन्दिर गिरा दिये गये हैं, बड़ेबाबा के विशाल मन्दिर का ऊंचा शिखर गिरा दिया गया है और अभी कई मन्दिर गिराये जाने की योजना है। कहा जाता है कि बड़ेबाबा को उठाकर अन्यत्र किसी स्थान पर ले जाने की भी योजना कमेटी ने बना रखी है।

यह खेदजनक है कि प्राचीनता के विनाश की इस अनैतिक और अवैध ध्वंस-लीला से असहमत होते हुए भी उसके खिलाफ खुलकर बोलने और लिखने की हिम्मत अधिक लोग नहीं जुटा पा रहे हैं। समाज की यह उदासीनता या चुप्पी टूटना चाहिये। हम सोचते हैं कि आखिर किसी न किसी को तो पहल करनी ही पड़ेगी, तब पहली टोली में खड़े होने से क्यों डरें? कभी तटस्थता पाप भी हो जाती है। दिनकर की यह पंक्ति हमें सदा स्मरण रखनी चाहिये कि-

जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध।

कुण्डलपुर में जो भी घटित हुआ है, और हो रहा है, उसके पीछे पूरे पांच साल की कहानी है। सबसे पहले बाबू ताराचन्दजी की कमेटी ने यह योजना बनाई थी कि बड़ेबाबा के मन्दिर के मण्डप को विस्तार देना है। श्रीधरस्वामी के चरण-चबूतरे वाली दीवार हटा कर पूरे मण्डप का फर्श एक हाथ नीचा कर दिया जाये जिससे कुछ अधिक दर्शनार्थी वहां बैठ सकें और बड़ेबाबा का दर्शन सुगमता से कर सकें। इस योजना में मन्दिर के गर्भालय और शिखर को तोड़ने-गिराने की कोई बात कभी नहीं थी। कमेटी ने कई बार देव-शास्त्र-गुरु के सामने भरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभाओं में यही आश्वासन देकर अपील की और इसी के लिये बार बार दान राशियां समाज से लिखवाई गईं।

कमेटी प्रबंध के लिये या विध्वंस के लिये ? –

फिर समय के फेर से नये अध्यक्ष के रूप में श्री संतोष सिंघईजी का आगमन हुआ और उन्होने अपनी प्रबंध समिति का गठन किया। पर शीघ्र ही यह सिद्ध हो गया कि इस कमेटी ने 'प्रबंध' के अलावा सब किया। नव-निर्माण की आड़ लेकर क्षेत्र पर प्राचीनता का विनाश प्रारम्भ हो गया। कमेटी ने अपनी अधिकार सीमा का सरे-आम, बार बार उल्लंघन किया। जल्द ही प्रबंधन के सारे दस्तूर बदल गये। नक्शा और प्लान, ब्लूप्रिण्ट और माडल, एस्टीमेट और वर्किंग डिजाइन, बजट और आडिट, तथा पुरातत्व विभाग की अनुमति और समाज की अनुमोदना आदि सारी प्रजातांत्रिक और वैधानिक पद्धतियों को नजरअंदाज करते हुए चन्द लोगों की मनमानी से श्रीक्षेत्र पर सारे काम होने लगे।

इसी बीच सिंह-द्वार की कल्पना का अशुभोदय हुआ। शासन द्वारा जिस जमीन को लेकर कमेटी के खिलाफ अतिक्रमण का मुकदमा चल रहा था, ऐसी विवादास्पद भूमि पर सिंह-द्वार का निर्माण कराया गया। उसके लिये श्रीक्षेत्र के पर्यावरण का निर्दयता पूर्वक विनाश हुआ।

अस्सी साल से पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित और अपने मस्तक पर मन्दिरोंका मुकुट पहने कुण्डलपुरका शान्तिधाम बारूदके धमाकों से गूंजने लगा। प्राचीन मन्दिरों के साथ भी सब्बल-कुदाली का खेल शुरू हो गया। बड़ेबाबा का उत्तुंग शिखर गिराकर उसकी जगह एक छोटा बेमेल निर्माण क्यों कराया गया ? चार पूजित प्राचीन मन्दिर क्यों नींव से खोदकर फेक दिये गये। पता नहीं।

एक अनोखे रहस्य के आवरण में वहां सब कुछ हो रहा था। कुछ भी पूछना गुनाह था और बताने वाला कोई नहीं था। सिर्फ कुछ अफवाहें हवा में तैरती रहती थीं। किसी को बीच में बोलने का हक नहीं था।

कहां से हुई शुरुआत –

१४-१५ अगस्त ९९ की बात है। श्रीसिद्धक्षेत्र द्रोणगिरिजी में स्व. पं. गोरेलाल स्मृतिग्रन्थ के विमोचन के सिलसिले में, पूज्य आचार्यश्री देवनन्दीजी के सान्निध्य में, विद्वानों का सम्मेलन था। उस मंच पर तीर्थों के रख-रखाव पर बोलते हुए मैने श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर की वर्तमान दुर्दशा पर अपनी पीड़ा समाज के सामने रखी। कुण्डलपुर क्षेत्र प्रबंध समिति के अनेक जिम्मेदार पदाधिकारी और सदस्य तथा दमोह समाज के कुछ गण्यमान्य व्यक्ति वहां उपस्थित थे। एक सज्जन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने मेरे कथन पर टिप्पणी करते हुए कहा - *'नीरजजी ने पूरी जानकारी के बिना यहां कुछ भी बोल दिया है। यदि वे कुण्डलपुर की कमेटी से पूरी योजना की जानकारी लेकर बोलें या लिखें तो अधिक अच्छा हो।'*

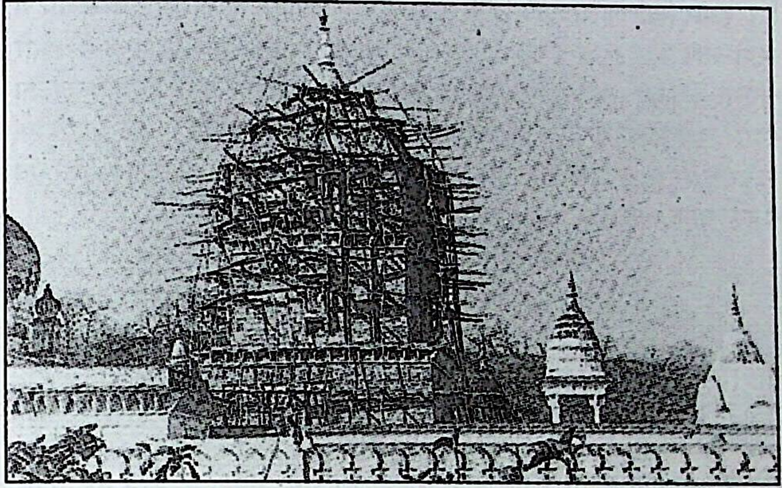

१९७९ में साहू परिवार के सहयोग से शिखर की मरम्मत कराई गई। उस समय मन्दिर का प्लास्टर उतारने पर इन्जीनियर का यह मंतव्य सिद्ध हो गया कि यह शिखर पत्थरों की चिनांई से निर्मित है और सैकड़ों साल तक बिना किसी मरम्मत के खड़ा रह सकता है। इस मजबूत शिखर को गिराकर श्रीक्षेत्र की गरिमा को खंडित किया गया है।

हमनें वहां से लौटते ही २१ अगस्त को कमेटी की सेवा में एक विनय-पत्र भेजकर लिखित रूप में अपनी पीड़ा रखी और भविष्य के लिये कमेटी का जो भी प्लान हो, उसकी जानकारी भेजने की प्रार्थना की। पत्र की प्रतियां उन मित्र को तथा कमेटी के अधिकांश सदस्यों को व्यक्तिगत तौर पर भी भेजी गईं। उस समय हमारी पुस्तक के इस *'आपात् कालीन संस्करण'* की तैयारी चल रही थी अतः हमने यह कारण दर्शाते हुए दो महीने के भीतर जानकारी भिजवाने का अनुरोध कमेटी से किया। मेरा यह २१-८-९९ का यह पत्र आप आगे पढ़ेंगे।

मांगी थी जानकारी, मिला निन्दा प्रस्ताव-

हमें खेद है कि हमारे पत्र का आज तक कमेटी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उत्तर के नाम पर कुण्डलपुर प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई के हस्ताक्षरों से युक्त एक निन्दा प्रस्ताव हमारे खिलाफ प्रसारित किया गया। कमेटी से हमने श्रीक्षेत्र के बारे में पूरी योजना की जानकारी मांगी, इसे हमारा अक्षम्य अपराध मानकर सुनवाई का अवसर दिये बिना यह दण्ड प्रचारित किया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब अवसर है जब हमें कुण्डलपुर में मन्दिरों को तोड़ने के बारे में कमेटी के हठाग्रह और छल-कपट को उजागर करके समाज के सामने रखना है। आज मुझे चुप कराने के लिये, या मेरी लेखनी छीनने के लिये कुछ लोग अनेक उपाय कर रहे हैं। हमारें खिलाफ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष द्वारा प्रसारित निन्दा-प्रस्ताव के बारे में आगे आप पढ़ेंगे। खतरनाक धमकियों से भरे पत्र पिछले एक-डेढ़ साल से हमारे परिवार के लिये सामान्य बात हो गई है। मुझ पर आतंक जैसा दबाव बनाने का प्रयास कुछ लोगों के द्वारा बराबर किया जा रहा है मगर शायद वे नहीं जानते कि कायरता मेरे लिये अपरिचित शब्द है। मैं पुरुषार्थवादी व्यक्ति हूं। धमकी भरे पत्र भेजने वाले भाईयों से इस समय मुझे इतना ही कहना है कि-

इनसान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज,
तुम खुद ही समझ लोगे खुदा भी है कोई चीज।

न दैन्यं न च पलायनम् -

टेलिफोन सन्देशों और पत्रों के माध्यम से यह चेतावनी दी गई है कि मुझे कुण्डलपुर के बारे में कुछ भी बोलना और लिखना तत्काल बंद कर देना चाहिये। यदि मैं ऐसा नहीं करता हूं तो उसके घातक परिणाम भोगने के लिये मुझे तैयार रहना चाहिये। *मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आखिर धार्मिक संदर्भों में पनपती इस दादागिरी का अंजाम क्या होगा ?*

ऐसे अनैतिक दबावों के आगे झुक जाना, या मृत्यु के भय से चुप हो जाना मेरी प्रकृति में नहीं है। अपनी सोची-समझी यात्रा में मेरी प्रवृत्ति रही है कि-***न दैन्यं, न पलायनम्।*** अंतरात्मा की आवाज को अनसुनी करते हुए, आतंक के साये में जीना मेरे लिये दुर्बह है। इस की अपेक्षा, अपराजित मन से, निर्भय होकर अपने आपको कर्तव्य-मार्ग पर अग्रसर करते रहना और अपने संकल्प की रक्षा के लिये अपने आपको उसी वेदी पर होम देना मुझे अधिक सुकर लगता है। ***क्षणेकं ज्वलितं श्रेयं न तु धूमायते चिरम्।*** बस, इसी भावना से प्रेरित मैं यह पुस्तक अपने पाठकों के हाथों तक पहुंचाने की हिम्मत कर रहा हूं। मान-अपमान की मैं परवाह नहीं करता क्योंकि हम सब एक ही नाव में सवार हैं। निन्दा का काम किसने किया है और निन्दा किसकी हो रही है, किसकें द्वारा हो रही है और क्यों हो रही है ? समाज विचार करेगी। अभी तो मुझे इतना ही कहना है कि-

फूल फेंके कोई मुझ पर चाहे पत्थर फेंके,
जो भी फेंके पै' जरा सोच समझ कर फेंके।
मैं गुनहगार सही, फिर भी जरा शर्म करो,
जो गुनहगार न हो मुझ पर वही पत्थर फेंके।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

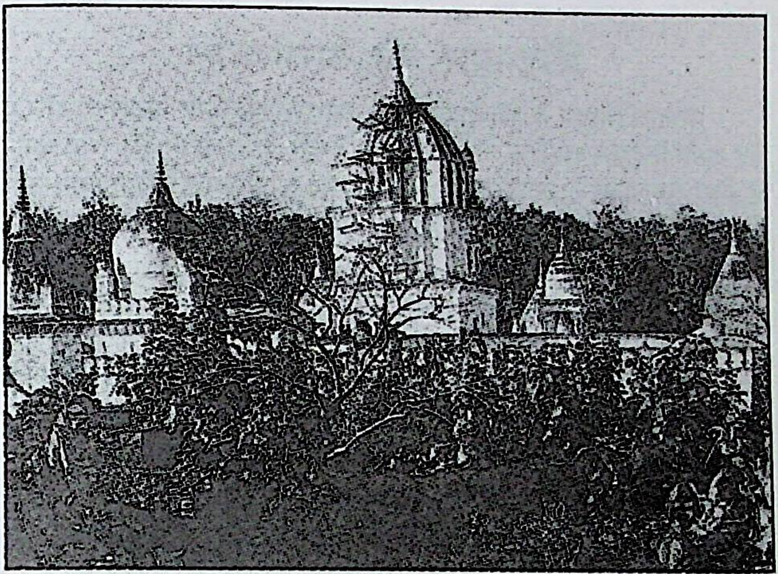

आगे से मुड़ कर देखने पर ऐसी सुहानी दिखती थी बड़ेबाबा मन्दिर की झांकी। पर अब यह कभी नहीं दिखेगी। शिखर गिरा दिया गया है और चार मन्दिर नींव से खोदकर फेक दिये हैं। इस महाविनाश का उत्तरदायी कौन?

बड़ेबाबा जिनालय जैसे मजबूत, सुन्दर और भव्य मन्दिर को अकारण ध्वंस कर देना न तो किसी भी प्रकार कमेटी के कर्तव्यों में शामिल है, और न ऐसा करने का उसे अधिकार है। यह कमेटी द्वारा अधिकारों का अतिक्रमण है और श्रीक्षेत्र के लिये हितकर नहीं, अहितकर ही है।

बड़ेबाबा के अस्तित्व को बचाने की यह लड़ाई मेरे सामाजिक जीवन की शायद आखिरी लड़ाई हो। भले ही अधिक लोग अभी बोलने का साहस न कर पा रहे हों, पर मैं जानता हूं कि समाज का बहुमत मन्दिर गिराने के पक्ष में नहीं है। इस लड़ाई में समाज ही मेरे लिये पहली और आखिरी अदालत है और उस पर मुझे पूरा भरोसा है। उसी का मुझे बल है। मैं अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हूं। ***रात्रि में जलने वाला छोटा सा दिया यह कब सोचता है कि अंधकार कितना गहन और विस्तृत है?*** यदि मैं इन धमकियों के सामने समर्पण कर दूं तो यह उन्माद-पूर्ण आतंक मेरे लिये सतत भाव-मरण का निमित्त बनेगा। यह मैं नहीं चाहता। मेरा संकल्प यही है कि -

हमें मालूम है इसके लिये वोह क्या सजा देंगे,
मगर हम सरे-महफिल आज उनको आईना दिखा देंगे।

❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंह-द्वार की असलियत

पुरातत्व विभाग के रोकते-रोकते कमेटी ने इस सुन्दर अटवी के बीच में वह अनोखी दीवार खड़ी कर दी है जिसे 'सिंह-द्वार' कहा जा रहा है। जिसे बनाने के लिये कुण्डलपुर के आधे पहाड़ को खन-खोद कर कुरूप कर दिया गया, और जिसके निर्माण में हजारों हरे-भरे वृक्षों का बलिदान हुआ, **उस सिंह-द्वार में न कहीं सिंह है, न कोई द्वार है।**

जिस भूमि पर यह बिजूका बनाया गया है, वह संरक्षित स्मारकों के पास निषिद्ध सीमा में होने से एक अवैधानिक निर्माण है। अनुविभागीय अधिकारी हटा की रिपोर्ट के अनुसार सिंहद्वार की नींव खुदते समय उस भूमि को लेकर कमेटी के विरुद्ध कोर्ट में अतिक्रमण का मुकदमा चल रहा था। **इस प्रकार तो वह भूमि उस समय किसी भी धार्मिक निर्माण के लिये योग्य ही नहीं थी,** तब उस पर इतना व्यय-साध्य निर्माण करना क्या उचित था ?

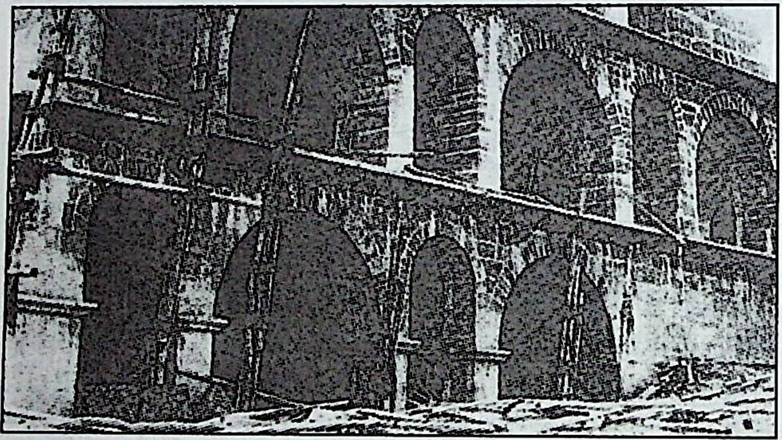

सारी नैतिकता को तिलांजलि देकर, कानून की अवहेलना करके बनाई गई यह बेमेल और बेमानी इमारत, हमारे सौन्दर्य-बोध को मुंह चिढ़ाती और शास्वत साधनाधाम मन्दिरों को अपनी ओट में छिपाती, एक दृष्टि-बाधा बन कर वर्धमान सागर और बड़ेबाबा परिसर के बीच खड़ी है।

हमने सिंह-द्वार को बेमेल कहा है क्योंकि जैन मन्दिर शैली के साथ उसका कोई मेल नहीं है। वह मुगल शैली का बहुत घटिया सा नमूना है। उसे बेमानी हम इसलिये कह रहे हैं कि उसकी कोई उपयोगिता नहीं है। न सुविधा की दृष्टि से, न सुरक्षा की दृष्टि से और न ही किसी निस्तार के लिये। पूरे पर्वत की सुन्दरता मिटाकर ऐसी अपव्यय-मूलक और निरर्थक योजना का कार्यान्वयन जिसके द्वारा हुआ है, उस कमेटी का नाम श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर के इतिहास में बड़े अक्षरों में अंकित रहेगा, पर अफसोस, **वे अक्षर सुनहरे नहीं होंगे।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीक्षेत्र का परिचय

मध्य-प्रदेश के दमोह जिले में कुण्डलपुर एक अतिशय प्राचीन तीर्थ है। बड़ेबाबा मूर्ति की मनोज्ञता के लिये और अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये यह क्षेत्र विख्यात है। इस क्षेत्र की नयनाकर्षक संरचना अत्यंत मनोहारी है और वातावरण को तीर्थानुकूल बनाने में सहायक होती है। गोल-कुण्डलाकार पर्वतमाला के बीचोंबीच निर्मल जल से भरा 'वर्द्धमान सागर' नाम का सरोवर है, जिसमें मन्दिरोंका प्रतिबिम्ब झलकता है। सम्भवतः पर्वत की कुण्डलाकार गोलाई ने इस क्षेत्र को 'कुण्डलपुर' नाम दिया है।

बड़ेबाबा की प्रतिमा और मन्दिर का मूल स्थापत्य छठवीं-सातवीं शताब्दी का है पर मन्दिर में अनेक बार जीर्णोद्धार होता रहा है। उसका वर्तमान स्थापत्य मराठा काल का है। इस मन्दिर के अलावा यहाँ बासठ जिनालय और हैं जिनका निर्माण पिछली तीन-चार शताब्दियों के भीतर हुआ लगता है पर उनमें पुरातत्व की महत्वपूर्ण सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

क्षेत्र की अवस्थिति –

बीना कटनी रेल्वे लाईन पर दमोह स्टेशन से ४० किलोमीटर दूर कुण्डलाकार पर्वत श्रेणियों के मध्य यह पवित्र क्षेत्र कुण्डलपुर अवस्थित है। यहां पर्वत पर और उसकी तलहटी में ६२ जिनालय हैं। मुख्य जिनालय 'बड़ेबाबा का मन्दिर' पर्वतों के बीचोंबीच विशाल परकोटे से घिरा हुआ है। उत्तर भारत के जैन तीर्थक्षेत्रों की विशाल और मनोज्ञ मूर्तियों का उल्लेख करते समय कुण्डलपुर के बड़ेबाबा का नाम प्रमुख रूप से और सबसे पहले आता है।

मूल मन्दिर में तीन फुट ऊँचे सिंहासन पर भगवान तीर्थंकर ऋषभनाथ की बारह फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इस महामूर्ति के दर्शन से शान्ति का सहज अनुभव होता है। इसके दोनों ओर इसी ऊँचाई की भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन मूर्तियां हैं। गर्भालय की दीवारों में तीनों तरफ कुछ और भी प्राचीन काल की ही तीर्थंकर प्रतिमाएं लगी हैं। दो स्थान जो आजकल रुक्मिणी मठ ओर ब्रम्हमठ के नाम से जाने जाते हैं, उनमें भी जैन शासन देवताओं की मूर्तियां हैं, यह उनके मुकुट में अंकित तीर्थंकर आकृतियों से प्रमाणित होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यहां की विशाल और अतिशयकारी मूल नायक प्रतिमा बड़े बाबा के नाम से पूरे देश में जैन और जैनेतर जनता में प्रसिद्ध है।

काल के साक्ष्य और अनुमान –

इस क्षेत्र का इतिहास ई.पू. ६वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है जब भगवान तीर्थंकर महावीर का समोशरण इस स्थान पर आया था। देहली डायरेक्टरी, (प्रकाशक जैन सभा दिल्ली-सन १९६१) में इसका सप्रमाण उल्लेख हुआ है। पांचवीं शताब्दी ईस्वी के जैनाचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने अपनी निर्वाण भक्ति में इसका उल्लेख कुण्डली पर्वत के नाम से किया है। इससे इसका प्राचीन काल से ही सिद्ध क्षेत्र के रूप में विख्यात होना सिद्ध होता है।

इण्डियन एण्टीक्वैरी आरा, भाग १ के अनुसार सन १७४२ में यहां नन्दि संघ के भट्टारक श्री महाचन्द्र जी के पट्टासीन होने का उल्लेख मिलता है। बनारस से १९१४ में प्रकाशित पद्मनन्दि पंचासिका के प्रस्तावना लेखक पं. गजाधरलाल जी न्यायतीर्थ ने ऐसा उल्लेख किया है कि पद्मनन्दि आचार्य ने इसी क्षेत्र पर रहकर चूलिका सिद्धांत वृत्ति की १२०० श्लोक प्रमाण रचना की थी।

सत्रहवीं शताब्दी ईस्वी के आसपास यह मन्दिर ध्वस्तप्राय होकर, झाड़-झंखाड़ों के बीच, गुफा का रूप ले चुका था। भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति स्वामी ने यहां आकर बड़ेबाबा के दर्शन किये और इसका जीर्णोद्धार कराने का निश्चय किया। उनके शिष्य सुचन्द्रकीर्ति और उनके पश्चात ब्र. नेमिसागरजी ने इस मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया। इन घटनाओं का अंकन तीन सौ वर्ष पूर्व विक्रम संवत १७५७, सन् १७०० ई. के अभिलेखों में है जो मन्दिर के द्वार पर लगे हैं। वे अभिलेख हम आगे पढ़ेंगे।

कुण्डलपुर में और उसके आस-पास अभी अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ खुदाई तथा पुरातत्व की खोज कराने की आवश्यक्ता है। यहाँ ब्रम्ह-मठ नामक एक स्थान तो पुरातत्व-विभाग की सुरक्षा में है परन्तु दूसरा रुक्मिणी-मठ जिसे 'मन्दिर टीला' भी कहते हैं, जीर्णोद्धार के अभाव में धराशायी हो चुका है। खुदाई होने पर यहाँ ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होने की बलवती सम्भावना है।

रुक्मिणी-मठ की सभी पूज्य तीर्थंकर प्रतिमायें सैकड़ों साल पहले बड़ेबाबा के मन्दिर में लगाई जा चुकी हैं। यहाँ तो चार फुट ऊँचा और दो फुट चौड़ा एक पाषाण मात्र शेष बचा है, जिस पर पारसनाथ भगवान के शासन देवता यक्ष धरणेन्द्र और यक्षिणी पद्मावती अशोक वृक्ष के नीचे खड़े दर्शाये गये हैं। वृक्ष के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अंकित है। यहाँ के कुछ शिल्पावशेष सड़क के किनारे एक चबूतरे पर ग्राम-रक्षक देवी-देवताओं के रूप में पूजे जाते हैं।

यहाँ से करीब छह-सात किलोमीटर दूर बर्रट नामक गाँव में भी एक प्राचीन जैन मन्दिर के अवशेष मिले हैं। यहां की पूज्य तीर्थंकर प्रमिमायें भी कुण्डलपुर आ चुकी हैं, मात्र कुछ शिल्पावशेष एक चबूतरे पर रखे हैं। कहा जाता है कि कुण्डलपुर बर्रट के बीच बन रही एक पुलिया के निर्माण के अवसर पर ठेकेदार ने बर्रट और रुक्मिणी-मठ के मन्दिरों की प्रचुर सामग्री बोल्डर और गिट्टी के काम में लेकर समाप्त कर दी थी। हमारे अज्ञान से ऐसा कई जगह हुआ है।

पूजा-अभिषेक तथा अर्चना-आरती और दीपावली के दिन लाडू चढ़ाते भक्तों के लिये वे महावीर हैं। प्रतिमा-विज्ञान के माध्यम से पहचानने वाले उन्हें आदिनाथ के रूप में देखते हैं और सब से बड़े होने के कारण सैकड़ों साल से अपने लाखों भक्तों के लिये वे 'बड़े बाबा' तो है ही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसे पहचानें बड़ेबाबा को ? –

इन पर्वत मालाओं के मध्य एवं ऊँचे शिखर वाले भव्य मन्दिर में प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास की अनमोल धरोहर के रूप में, तीन फुट ऊँचे सिंहासन पर ३८२ सें.मी. ऊँची और ३४५ से.मी. चौड़ी आदिनाथ भगवान की मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इस मनोज्ञ और प्रभावक प्रतिमा को देश-देशान्तरों तक 'बड़ेबाबा' के नाम से स्मरण किया जाता है। प्राचीनता, सौन्दर्य तथा विशालता में यह हमारे देश की अद्वितीय पद्मासन मूर्ति है।

इस प्रतिमा पर कोई चिन्ह नही है अत: सिंहासन में बने सिंहों के आधार पर यह महावीर स्वामी की मूर्ति मानी जाती थी; पर अब प्रतिमा लक्षणों के अनुरूप कांधों पर जटाओं तथा सिंहासन में गोमुख यक्ष और देवी चक्रेश्वरी के आधार पर सिद्ध हो गया है कि ये प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ ही हैं।

आदि जिनेश्वर के शासन देवता गोमुख यक्ष और देवी चक्रेश्वरी

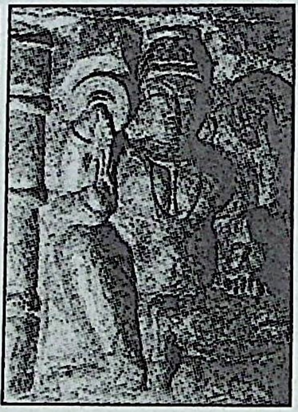

वन्दना का यात्रा पथ –

कुण्डलपुर का यात्री 'वर्द्धमान सागर' में स्नान करके अपनी वन्दना प्रारम्भ करता था। अब तो धर्मशालाओं में नल लग गये हैं। पहाड़ी की सुगम चढ़ाई चढ़कर हम छहघरिया के मन्दिर का दर्शन करते हैं। यह मन्दिर पर्वत पर सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित है, पर चढ़ाई कष्ट-प्रद नहीं है। बीस पच्चीस मिनट में हम तालाब से मन्दिर तक पहुँच जाते हैं। वहाँ से चारों और मीलों तक फैली हुई प्राकृतिक सुषमा का अवलोकन करते ही सारी थकान भूल जाती है और एक नई स्फूर्ति का अनुभव होने लगता है। यहाँ से नीचे तालाब तथा उसके किनारे के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

कुण्डलपुर में बड़ेबाबा मन्दिर परिसर का दृश्य

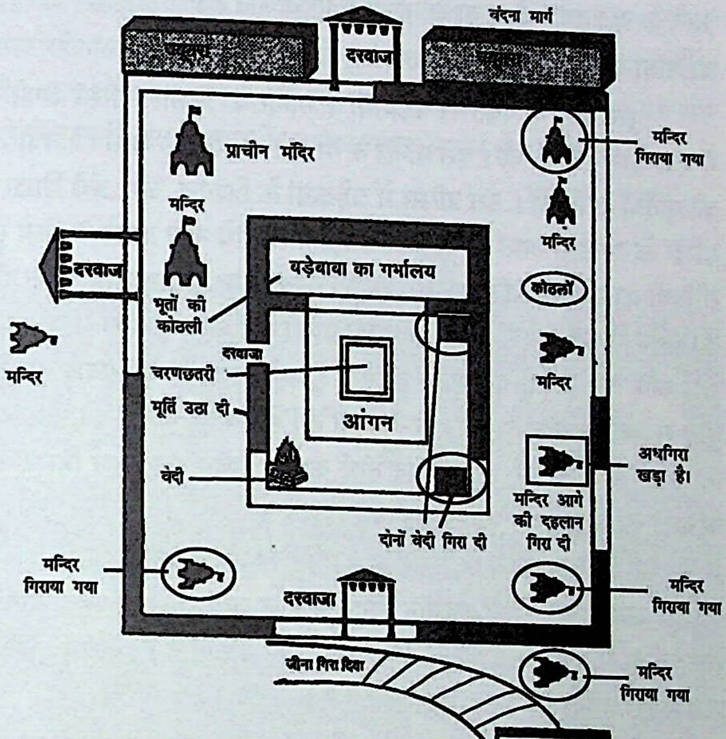

1. बड़ेबाबा मन्दिर के परिसर का दृश्य । बीच में मण्डप जिसमें तीन वेदियां थीं, उनमें से दो गिरा दी गई हैं। तीसरी खाली कर ली गई है ।
2. इस परिसर में आठ पूजित प्राचीन मन्दिर थे । उनमें से गोल घेरे वाले तीन गिराये जा चुके हैं। चौकोर घेरे वाला अधगिरा खड़ा है ।
3. परिसर के बाहर, सीढ़ियों पर, (गोल घेरे में दर्शित) प्राचीन मन्दिर भी गिरा दिया गया है ।
4. बड़ेबाबा के गर्भालय पर मन्दिर का ऊंचा तिमंजिला शिखर गिराकर छत को एक छोटे शिखर से ढंकने का प्रयास किया गया है ।

यह जीर्णोद्धार हो रहा है या विनाश ? इसका उत्तरदायी कौन ?

रेखांकन - श्री प्रकाश सिंघई, एडवोकेट दमोह के सौजन्य से ।

बडेबाबा मंदिर का परिसर अपने आपमें एक तीर्थ था। इसे मिटाकर शायद मैदान करना था। चार मन्दिर गिर पाये थे, विरोध होने पर काम रोक दिया है।

माली ने तो साजिश कर ली थी सूनी हो चमन की हर डाली,
फूलों की हिफाजत करने को कांटों ने बढ़ कर काम किया।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दिरों का दृश्य बड़ा नयनाभिराम लगता है। छहघरिया से ससुर-दामाद के युगल-मन्दिरों की शोभा मनोहारी लगती है, और तीन चार मन्दिरों की वन्दना करने के बाद हम बड़े बाबा के मन्दिर में पहुंच जाते हैं।

बड़ेबाबा का आंगन –

कुण्डलपुर के पर्वत पर बड़ेबाबा के मन्दिर का विशाल परिसर अपने आप में एक परिपूर्ण तीर्थ था। इस मन्दिर के परकोटे में भी कुछ शासन देवियों आदि की मूर्तियाँ लगी थीं। इस परिसर में बड़ेबाबा के विशाल और ऊंचे शिखरवाले मन्दिर के अलावा आठ मन्दिर और थे। यहां से सीधे नीचे उतरने के लिये सुन्दर सीढ़ियों का मार्ग भी था। यह मेरा दुर्भाग्य है कि आज बड़ेबाबा मन्दिर के परिसर का वर्णन लिखते समय मैं 'है' शब्द का प्रयोग नहीं करके उसकी जगह 'था' - 'थे' और 'थी' शब्दों का प्रयोग कर रहा हूं क्योंकि श्रीक्षेत्र की प्रबंध समिति के कुछ सदस्यों ने अकारण और गैर-कानूनी ढंग से इस पूरे परिसर को तहस-नहस कर दिया है। एक हरे-भरे आबाद तीर्थ का यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा आज बरबादी का नमूना बना भग्न-प्राय होकर खड़ा है।

मन्दिर के आंगन में से होकर आगे पर्वत की शेष वन्दना का मार्ग है। दोनों ओर से आकर यात्री नीचे वर्द्धमान सागर के बीच जल मन्दिर में पहुँच जाता है। जल मन्दिर में एक सर्वतोभद्रिका (चतुर्मुख) जिन प्रतिमा है। पावस तथा शरद ऋतु में इस मन्दिर की शोभा विशेष होती है।

इस सुन्दर तालाब के किनारे पर अनेक विशाल और भव्य जिनालयों का समूह अवस्थित है, जिनमें अनेक सुन्दर और सौम्य मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। इन मन्दिरों के अमल-धवल, उत्तुंग शिखर, जब तालाब के शान्त जल में झांकते हैं तब हमें जो अलौकिक शोभा युक्त दृश्य देखने को मिलता है, उसका वर्णन शब्दों में करना शक्य नहीं है।

यह पूरा क्षेत्र दिगम्बर जैन समाज के निर्विवाद स्वामित्व में है। क्षेत्र के पोषण और रख-रखाव के लिये दानियों ने अनेक उपजाऊ भूमियाँ क्षेत्र को दान दी थीं। **'श्री देव पारसनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर कुण्डलपुर'** के नाम से क्षेत्र के पास कई ग्रामों का स्वामित्व था। सन् १९५९ में जमींदारी उन्मूलन कानून बन जाने से बहुत सी भूमि क्षेत्र के अधिकार से निकल गईं, और इस प्रकार आर्थिक लाभ के स्थायी साधन अल्प रह गये। अब श्रीक्षेत्र की संचालन व्यवस्था पूरी तरह यात्रियों और भक्तों के आर्थिक सहयोग से ही होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीक्षेत्र का कुल प्रबन्ध जनतन्त्रीय पद्धति से निर्वाचित कमेटी द्वारा सुन्दर व्यवस्थित ढंग से किया जाता रहा है। यद्यपि आज परिस्थितियां कुछ भिन्न हैं, पर यह एक अस्थायी उपसर्ग है, निवारित हो जायेगा। धर्म-प्रेमियों ने यहाँ कई विशाल धर्मशालायें बनवा दी हैं। सारे बुन्देलखण्ड को अपने इस सुन्दर तीर्थ पर गर्व है। आप भी वर्ष में कम से कम एक बार इस तीर्थ का दर्शन अवश्य करें और विचारें कि इसकी सार-सम्हार में आपका क्या योगदान हो सकता है?

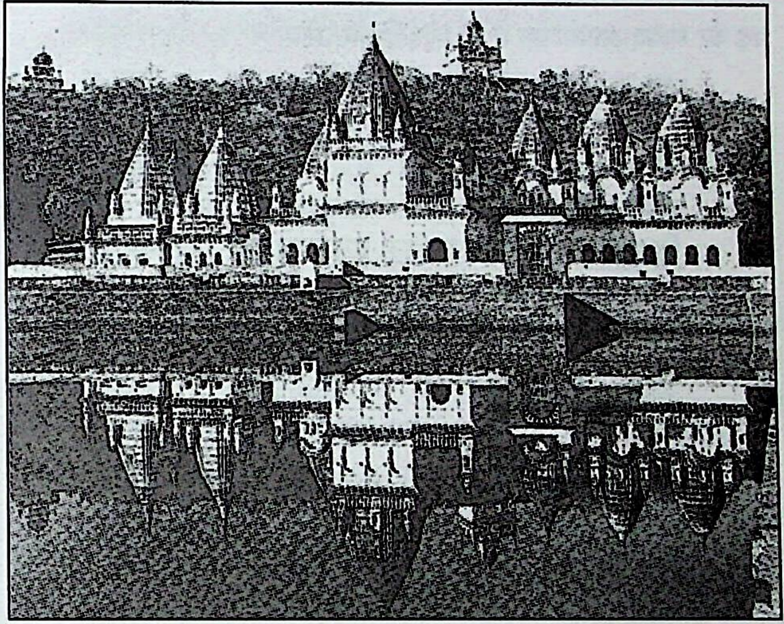

वर्धमान सागर में प्रतिबिम्बित मंदिर समूह

प्रणाम करके आगे चलेंगे –

आगे बढ़ने के पहले आईये इस रमणीक क्षेत्र के नैसर्गिक सौन्दर्य की एक झांकी देखते चलें। अतीत में झांकने के लिये कल्पना का सहारा आवश्यक होता है अतः आइये उसी रास्ते चलते हैं। आप इक्कीस-बाईस साल के एक ऐसे नौजवान की कल्पना करें जो प्रायमरी से आगे पढ़ नहीं सका हो। नून-तेल-लकड़ी का हिसाब जिसे किशोर वय में ही रटना पड़ गया हो। अगर उसके पास कोई सम्पदा थी तो वह थी एक भावुक हृदय, अपने पौरुष पर विश्वास, कृपालु गुरु का मार्ग दर्शन और बड़ेबाबा के प्रति अटल भक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही सम्पदा लेकर, जीवन के संघर्षों से जूझता वह युवा कवि एक दिन अपने आराध्य बड़ेबाबा का यशगान करने का संकल्प ले बैठा। कुण्डलपुर की शोभा को और बड़ेबाबा के इतिहास की किवदंतियों को उसने अपनी तुकबंदी में समेटने का प्रयास किया। मैं ही वह भाग्यशाली भावुक कवि हूं। मेरी वही तोतली तुकबंदी यह कविता है। पिछले बावन साल में, पचासों बार प्रकाशित होने पर भी उन पंक्तियों में कोई सुधार-परिष्कार करने की मैं हिम्मत नहीं कर सका। वे किसी प्रौढ़ कवि की पंक्तियां नहीं, एक अज्ञानी भावुक मन की हिलोरें हैं। इन्हें पढ़ कर शायद आपके मन में भी कोई हिलोर उठे।

बड़ेबाबा की वन्दना

बोलो श्री महावीर की जय, कर जोड़-जोड़ कर बार-बार
सिद्धार्थ-सुवन, त्रिशला नन्दन, सन्मतिको शत-शत नमस्कार।
जिनके सुमरण से क्षण भर में, कट जाते भव-भव के दावा,
हमको भव-सागर पार करें, वे सन्मति वीर, बड़ेबाबा।

जिनके जय-जयकारों से यह अम्बर गूंजा करता महान,
जिनके चरणों की रज-पाकर यह धरती है पुलकायमान।
लिखकर उनकी गौरव-गाथा लेखनी स्वयं पावन हो ले;
उनका चरणोदक लेकर ही निज कर्म कालिमा जग धो ले।

उनकी विरुदावलि प्रकृति मौन कण-कण में बोल रही है यह,
सन्मति सागर में मूर्तिमान् लहरें बन डोल रही है यह।
कुण्डलपुर के कण-कण में है केवल उनकी महिमा का फल,
उनकी ही महिमा का प्रतीक छाया है जंगल में मंगल।

उनके पग छूकर हुई धन्य, कुण्डलाकार पर्वत माला;
प्रतिबिम्ब निरखकर धन्य हुआ सन्मति-सागर गौरव वाला।
इसकी अति चपल तरंगा. ने, उनके चरणाम्बुज चूमे हैं,
उन चरणों का सौरभ लेकर वन के तरु-पल्लव झूमे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन इनका इतिहास विमल हमने न अभी तक पाया है,
इस गौरव के 'अथ' पर प्रकाश पड़ने न अभी तक पाया है।
पर्वत मालाओं में विलीन यह रूप प्रथम किसने देखा ?
इस सरस सृष्टि का सर्व-प्रथम किस उर ने कर पाया लेखा ?

उत्तुंग-शिखर का विजन अंश किसने सुख-थान बना डाला ?
इस वनका यह पाषाण खण्ड किसने 'भगवान' बना डाला ?
किस उर की यह कल्पना विशद किन हाथों का कौशल था यह ?
हो गया अमर कल्पान्त कौन, शिल्पी मर्मज्ञ कुशल था वह?

दर्शक जब प्रभु के चरणों में भावुक हो शीश झुकाता है;
उस कलाकार की प्रतिभा पर सहसा मस्तक झुक जाता है।
केवल प्रतिमा में नहीं; कला कुण्डलपुर के कण-कण में है,
संतप्त, त्रस्त, अभिशप्त कला सन्मति की यहां शरण में है।

रुक्मिणि-मठ सहस्राब्दियों से, अपना विस्मृत इतिहास लिये,
भूगर्भित है, नभ-चुम्बी था, इसका केवल आभास लिए।
उस ओर 'विराटा' नगरी का ऐश्वर्य फूलता फलता था;
मारुत भी जिसकी माहिमा का सन्देशा लेकर चलता था।

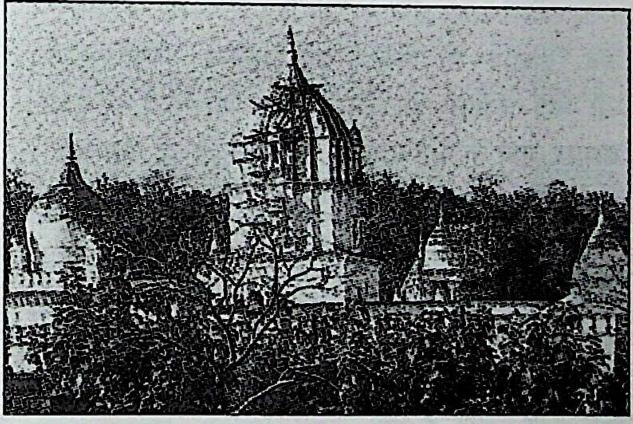

१९७९ में जीर्णोद्धार के पूर्व बड़ेबाबा मन्दिर की झांकी।
यह शिखर नव-निर्माण की भेट चढ़ गया है। अब कभी देखने को नहीं मिलेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हां उसी 'विराटा' के खंडहर 'बर्रट' बनकर हैं पड़े आज
लगता है जैसे हरे-भरे, उपवन पर आकर गिरी गाज।
साधना-मग्न कितने साधक इस पुण्य-भूमि में बसते थे,
जो कला-कसौटी पर अपनी कंचनसी काया कसते थे

बस यहीं कहीं राजसी-दृश्य सुर-पुर सा छाया करता था,
औ' यहीं वीर बुन्देलों का वैभव इतराया करता था।
उन बुन्देले वीरों की भी छोटी सी एक कहानी है,
बुन्देल खण्ड के खण्ड-खण्ड में उनकी अमिट निशानी है।

बुन्देला राजा 'छत्रसाल' क्या कभी भुलाया जायेगा,
उसका यश-गौरव घर-घर में सदियों तक गाया जायेगा।
वह महावीर का भक्त, अहिंसक पद्धति का अनुयायी था,
औ' दीन हीन दुखियों को वह रक्षक भी था सुखदायी था।

प्रभु के ढिंग आकर एक बार बोला चरणों में झुका शीश,
मैं आज मांगने आया हूँ, यह वर मुझको दीजे मुनीश!
दीजे प्रभु मुझको शक्ति-दान, मैं विज़य चाहता हूँ भगवन!
मेरी जननी माँ का आँचल कलुषित न कर सकें दुष्ट यवन।

जब छत्रसाल सा वीर, स्वयं बुन्देलों की सेना लेंकर,
औ' भव-भयहारी, महावीर का, दृढ़ जय-कारी वर लेकर;
सम्मुख आवे तो क्या मजाल दुश्मन की जो वह ठहर सके ?
उनके सम्मुख तो एक बार यह क्रूर-काल भी सहम रुके।

यों सन्मति का आराधन कर, सेना ले रणकी की ओर चला,
कुछ दिन में ही मुगलों का वह मद अहंकर सब गया दला।
विजयी भूपति ने तब तुरन्त शासन में घोषित करवाया,
जिन महावीर की अनुकम्पा से मैंने यह शुभ दिन पाया,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन महावीर की छाया को मैं मन्दिर एक बनाऊँगा,
पूरा होने पर उसी जगह मेला भी बड़ा भराऊँगा।'
मेला प्रारम्भ किया उसने अति भक्ति-भाव-वश सहोल्लास
प्रभु के अनगिनते भक्तों की तब भीड़ जुट गई अनायास।

ऐसा मेला, इतना भारी, इतना सुन्दर, इतना विशाल,
बस छत्रसाल सा नरपति ही कर सकता था जिसकी सम्हाल।
हम आप जहाँ पर बैठे हैं, इस जगह भीड़ थी बेशुमार,
कुछ जात-पाँतका भेद न था, सब पर था, सबका नेह प्यार।

पूजा-अर्चा की लहरों से गूंजा था उस दिन आसमान।
वात्सल्य भावकी किरणों से जन-जन का मन था भासमान।
जीवन भर को तब छत्रसाल ने पशु हिंसा का त्याग किया,
औ, सत्य-अहिंसा के दर्शक इन चरणों में अनुराग किया।

मन्दिर को अर्पित किये तभी पूजन के बर्तन, छत्र-चमर,
केवल इसलिए कि सेवा के ये चिन्ह सदा ही रहें अमर।
औ' क्षेत्रराज की सीमा में हिंसा अपराध हुई तब से,
जीवों की समता के साधक की पूरी साध हुई तब से।

पूछेंगे आप कि क्या सचमुच वह ऐसा था निष्ठाशाली ?
- मन्दिर में अब तक रक्खी थी, वह पीतल की मोटी थाली-
जो छत्रसाल के हाथों ही सादर मन्दिर में आई थी,
प्रभु पूजन के हित दीप, धूप, फल-फूल संजोकर लाई थी।

इस पुण्य-भूमि का वह प्रभात इस थाली ने भी देखा था,
उसकी झनकारों में युग-युग की घटनाओं का लेखा था।
केवल वह थाली नहीं यहां कण-कण की एक कहानी है,
उस स्वर्णकाल के वैभव की मिटती सी एक निशानी है।

वह गौरव-मय इतिहास किन्तु आकर बतलावे कौन यहाँ ?
मठ मन्दिर औ, खण्डहर सभी बैठे हैं होकर मौन यहाँ।

❖ ❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगले पृष्ठों पर पढ़िये

आज यह पुस्तक आपके हाथ में है पर अभी भी हमारे प्रश्नों का कोई समाधान दिखाई नहीं दे रहा। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि क्षेत्र पर प्राचीन मन्दिरों को नष्ट करना निन्दनीय कार्य नहीं है, पर कमेटी से उस विनाश-यज्ञ की जानकारी मांगना निन्दनीय भर नहीं, दण्डनीय अपराध भी है ? साठ फुट ऊंचा शिखर गिराने से श्रीक्षेत्र की अप्रभावना नहीं हो रही, पर समाज तक उस ध्वंस-लीला की जानकारी पहुंचाना 'कुप्रचार' होगा ? आपका ये दुष्कार्य करते जाना पुण्य है, और हमारा पूछना गुनाह है ? यह कैसा गणित है आपका ?

❖ ❖ ❖

जिन्होंने बड़ेबाबा का निर्माण करके पाषाण में भगवान का आह्वान कर लिया था, वे बड़ेबाबा के लिये अधिक बड़ा मन्दिर भी बना सकते थे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसे उनकी अक्षमता या साधन-हीनता मानकर उनकी हंसी उड़ाना हमारी भूल होगी।

❖ ❖ ❖

बड़ेबाबा मन्दिर के निर्माता बहुत सक्षम लोग थे। वे गर्भालय की विशालता को नहीं, बड़ेबाबा की विराटता को रेखांकित करना चाहते थे। वर्तमान गर्भालय उनकी इसी सूझ-बूझ का परिणाम है। कुछ भी अपने आप में बड़ा या छोटा नहीं होता, यह एक सापेक्ष गणित है। छोटे से गर्भालय में विराजमान हैं, इसीलिये हमारे भगवान, 'बड़ेबाबा' दिखाई देते हैं। बड़े हाल में विराजमान किये गये तो वे 'बड़े' नहीं रहेंगे, छोटे हो जायेंगे। उनके दर्शन का प्रभाव घट जायेगा।

❖ ❖ ❖

कुण्डलपुर में यदि सचमुच किसी बहुत बड़े मन्दिर की आवश्यक्ता महसूस की जा रही हो, तो उस मन्दिर के लिये उपयुक्त आकार की नवीन प्रतिमा भी बनवा लेना चाहिये। बड़े बाबा जहां हैं, वहीं ठीक हैं। उनसे छेड़छाड़ करने की न तो आवश्यक्ता है और न वैसा करना उचित है।

❖ ❖ ❖

हमारे जटाधारी बड़े बाबा को वैसा ही सुरक्षित रखा जाना चाहिये जैसे वे डेढ़ हजार साल से हैं। उनकी महिमा आज भी अपरम्पार है। अपने छोटे से पुराने मन्दिर में उनकी गरिमा पूरी तरह सुरक्षित है। वे वहाँ भी बहुत बड़े हैं। इतने बड़े हैं जितना दूसरा कोई नहीं है।

❖ ❖ ❖

बड़ेबाबा जिनालय जैसे मजबूत, सुन्दर और भव्य मन्दिर को अकारण ध्वंस कर देना न तो किसी भी प्रकार कमेटी के कर्तव्यों में शामिल है, और न ऐसा करने का उसे कोई अधिकार है। यह कमेटी द्वारा अधिकारों का अतिक्रमण है और श्रीक्षेत्र के लिये हितकर नहीं, अहितकर ही है।

❖ ❖ ❖

कुण्डलपुर में कुछ जिद्दी लोगों ने प्राचीनता के विनाश का हठाग्रह ठान लिया है। वे समझना ही नहीं चाहते कि वे स्वयं अपने हाथों जैन संस्कृति की कितनी बड़ी हानि कर रहे हैं। शिखर गिराने के हर धमाके से, और पर्वत पर होने वाले हर विस्फोट से, बड़ेबाबा की मूर्ति पर दरारें आई हैं या पुरानी दरारें बढ़ी हैं। कब चेतेंगे बड़ेबाबा के भक्त ?

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलपुर के शिखामणि : बड़ेबाबा

बड़ेबाबा कुण्डलपुर की यात्रा में सबके आकर्षण का केन्द्र होते हैं। यदि तीर्थ एक विग्रह है तो बड़ेबाबा उसमें प्राण की तरह प्रतिष्ठित हैं। यदि कुण्डलपुर एक स्वच्छ गगन का नाम है तो उसके सूर्य बड़ेबाबा ही हैं। इस विशाल प्रतिमा की पहचान के बारे में कुछ विस्तार से विचार करेगे।

पहले कुण्डलपुर अतिशय क्षेत्र माना जाता था और बड़ेबाबा ही उसका अतिशय कहे जाते थे। बाद में शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध हुआ कि यही वह प्राचीन कुण्डलगिरि नामक स्थान है जहाँ से अन्तिम केवली श्रीधरस्वामी मोक्ष सिधारे थे, *इसलिये यह अतिशय क्षेत्र नहीं, सिद्ध क्षेत्र है।* तात्पर्य यह है कि शताब्दियों से कुण्डलपुर जैनों के महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में विख्यात रहा है। इस क्षेत्र का इतिहास अत्यन्त गौरव-पूर्ण और महान है।

वर्तमान मन्दिर का निर्माण बुन्देला राजा छत्रसाल के सहयोग से सत्रहवीं शताब्दी में कराया गया कहा जाता है। उसी समय आस-पास के स्थानों से लाकर कुछ अन्य तीर्थंकर मूर्तियां भी इस मन्दिर के गर्भालय की दीवारों पर लगा दी गई प्रतीत होती हैं। बड़े बाबा का सिंहासन शायद किसी भूकम्प के प्रभाव से एक ओर, एक इंच धंस गया है, मूर्ति में भी कुछ दरारें दिखाई देती थीं। अब नव-निर्माण के लिये मन्दिर के समीप ही जो विस्फोट किये गये हैं शायद उनसे वे दरारें खतरनाक हद तक बढ़ गई हैं और कुछ नई दरारें भी आई हैं, जो बाबा के लाखों भक्तों के चित्त में चिन्ता उत्पन्न करती हैं। बायीं ओर पार्श्वनाथ की प्रतिमा के पंजों में भी पुरानी बड़ी दरार है।

वर्तमान युग में सर्व प्रथम बड़ेबाबा की महिमा का प्रचार करके उन्हें ख्याति प्रदान करने का श्रेय सत्रहवीं शताब्दी में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति और नेमिसागर ब्रम्हचारी को जाता है जिन्होने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराकर विक्रम सं. १७५७ (सन् १७०० ईस्वी) में इस स्थान पर अपने अभिलेख लगवाये। इन अभिलेखों में इस अतिशयकारी प्रतिमाको वर्द्धमान स्वामीकी मूर्ति कहा गया है। संभवतः सिंहासन के दो सिंहों को देखकर उनकी यह धारणा बनी होगी। इस आधार पर पुराने जमाने से सभी लोग इन्हें महावीर ही मानते थे। मैंने स्वयं १९४७ में अपने काव्य में इन्हें सन्मति वर्द्धमान की छवि मानकर ही लिखा था -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधारण पत्थर नहीं यहां, अशरण की एक शरण है यह,
इन्द्रादि वंद्य, देवाधिदेव, सन्मति का समवशरण है यह।

श्री रूपचन्द 'रतन' ने अपने लेख (नवभारत-जबलपुर, दिनांक ७-७-६३) में भी बड़ेबाबा के लिये इसी महावीर की मान्यता का पोषण किया है।

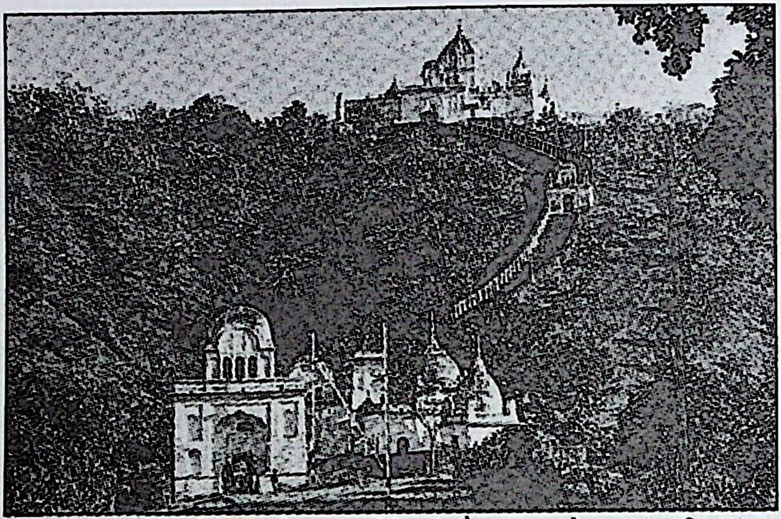

तालाब पर से पर्वत का प्रवेश द्वार, सीढ़ियां और ऊपर बड़ेबाबा का मन्दिर। यह दृश्य अब देखने को नहीं मिलता। बीच में सिंहद्वार बन गया है और मीलों दूर से दिखने वाला वह भव्य शिखर गिरा दिया गया है।

प्रतिमा की सही पहचान के लिये बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक कोई प्रयास नहीं हुआ। सिंहासन के सिंह, पार्श्व स्थित पारसनाथ की खड्गासन मूर्तियां एवं सं. १७५७ के शिला लेख में महावीर के नाम का उल्लेख, ये सब आधार बड़े बाबा को सन्मति की प्रतिमा मानने के लिये इतने निश्चित लगे कि आगे किसी शोध की आवश्यक्ता नहीं समझी गई।

विद्वानों की मान्यताएं –

सन् 1945 में सद्य स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के प्रथम कटनी अधिवेशन में बड़ेबाबा की पहचान सुनिश्चित करने के लिये एक उपसमिति गठित की गई। इस समिति के विद्वान सदस्य आदरणीय पं. दरबारीलाल कोठिया ने अनेकान्त वर्ष 8 के पृष्ठ 115 पर एक लेख प्रकाशित कराकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि कुण्डलपुर अंतिम केवली श्रीधरस्वामी का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वाण-स्थल नहीं है। परन्तु कोठिया जी की यह स्थापना पुष्ट प्रमाणों पर आधारित नहीं होने के कारण विद्वानों को स्वीकार्य या विचारणीय नहीं लगी। इस क्षेत्र की प्रबन्ध समिति के मंत्री श्री रूपचन्द बजाज तिलोय पण्णत्ति आदि के आधार पर इसे श्रीधरस्वामी का मुक्तिक्षेत्र ही मानते रहे।

किन भगवान की प्रतिमा है यह ?

सन् १९६२-६३ में मैने शोध की दृष्टि से इस मनोज्ञ मूर्ति का निरीक्षण करने के लिये भगवान के सामने बनी ईंट-चूने की वेदी को हटाया, तब कुछ नवीन तथ्य सामने आये। उन स्पष्ट प्रमाणों के आधार पर यह मूर्ति, निर्विवाद ही, प्रथम तीर्थंकर, युगादि देव, भगवान आदिनाथ की प्रतिमा निर्धारित होती है। श्रीधर स्वामी अथवा महावीर भगवान की मूर्ति यह सिद्ध नहीं होती। इस सम्बन्ध में शास्त्रीय आधार इस प्रकार हैं-

ये श्रीधरस्वामी नहीं हैं –

१. प्रतिमाएं केवल चौबीस तीर्थंकरों की ही बनाने की परम्परा रही है। भगवान आदिनाथ के तीर्थ में, उनसे भी पूर्व, कठोर तपश्चरण करके, और युद्ध में जीते षट्खण्ड पृथ्वी के वैभव को भोगे बिना ही त्यागकर बाहुबली स्वामी ने मुक्ति लाभ लिया था। इस कारण उनकी भी मूर्ति बनाने की परम्परा चली, यह एकमेव अपवाद रहा। इन पच्चीस के अतिरिक्त किसी भी अर्हंत की मूर्ति बनाने की परम्परा का कहीं कोई उल्लेख या प्रमाण प्राप्त नहीं होता।

आज भले ही नई-निराली सूझ-बूझ के बल पर इस परम्परा का उल्लंघन हो रहा है। जगह-जगह किसी भी मोक्षगामी महापुरुष की मूर्ति बनवाने की प्रथा चल पड़ी है। सीमंधरस्वामी से प्रारम्भ होकर अब कहीं राम, कहीं हनुमान, कहीं रावण के सुत आदिकुमार, इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण की मूर्तियां स्थापित हो रही हैं। कहीं चक्रवर्ती और कामदेव आदि मोक्षगामियों की भी प्रतिमाएं लगना प्रारम्भ हो गया है। लगता है इस दौड़ में हम एक दिन तेतीस करोड़ की संख्या को लांघ जायेंगे। देखादेखी की दौड़ में हम यह भूल गये हैं कि भगवत्-प्रतिमा की स्थापना एक शास्त्रोक्त, और ढाई हजार साल की दीर्घ परम्परा से पोषित अनुष्ठान है। हम यह भी नहीं सोचना चाहते कि भगवान महावीर के उपरान्त चौबीस सौ सालों तक हमारे पूर्वजों को ऐसी बुद्धि क्यों नहीं आई, या उन्होने ऐसा कुछ क्यों नहीं किया ?

मूर्तियां बनाने के लिये नायकों के चयन में इस शास्त्र-विरुद्ध उदारीकरण के दुष्फल भी सामने आने लगे हैं। इस दौड़ से प्रेरणा पाकर कुछ अति उत्साही भक्तों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने वर्तमान के आचार्यों और मुनि महाराजों की भी मूर्तियां और समाधि-मन्दिर बनाना तथा सिद्ध-क्षेत्रोंकी भूमि पर भी ऐसी स्थापनाएं करना प्रारम्भ कर दिया है। उन मुनि-मूर्तियों के अभिषेक आदि भी होने लगे हैं। शायद वह दिन भी दूर नहीं है जब मुनि-मूर्तियों को अष्ट प्रातिहार्यों से सज्जित करके तीर्थंकर भगवन्तों के समकक्ष स्थापित करने की प्रथा चल पड़ेगी। हम तरक्की के युग में आगे बढ़ रहे हैं अतः स्पर्द्धा की अंधी दौड़ में, धन-बल पर जो न हो जाये सो थोड़ा है।

इस प्रकार दिगम्बर मूर्ति-शास्त्र की सुनिश्चित परम्परा के अनुसार भी बड़ेबाबा को श्रीधरस्वामी की मूर्ति मानना न्याय-संगत नहीं है। हमारे पास इसका कोई परम्परागत आधार नहीं है। श्रीधरस्वामी के पूर्व जो सात केवज्ञानी मुक्त हुए उनमें से किसी की भी तो मूर्ति इस देश में नहीं मिली। दूसरे यदि इन्हें श्रीधरस्वामी माना जाये तो बगल में भगवान पारसनाथ की कायोत्सर्ग प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित कराना तीर्थंकर की विनय को खण्डित करता है और किसी प्रकार संगत नहीं लगता। बड़ेबाबा के परिकर में छत्र, चमर, विद्याधर और सिंहासन आदि प्रातिहार्य भी इस बात के सूचक हैं कि ये तीर्थंकर भबवान ही हैं।

इस सम्बन्ध में एक बात यह भी ध्यान देने की है कि क्षेत्र पर उसी मन्दिर में श्रीधरस्वामी के नाम के लेख सहित एक चरण प्रतिमा प्राचीन काल से स्थापित रही है। इसका विशेष वर्णन पं. जगन्मोहनलालजी ने किया है। यदि बड़े बाबाके रूप में श्रीधरस्वामी की इतनी विशाल प्रतिमा इस मन्दिर में होती तो फिर वहाँ छोटी-सी चरण-प्रतिमा स्थापित करने की आवश्यकता नहीं थी, अतः बड़े बाबा को श्रीधर स्वामी की मूर्ति नहीं माना जा सकता।

ये महावीर भगवान भी नहीं –

२. बड़े बाबा के आसन के सिंह उनके सिंहासन के प्रतीक हैं, वे मूर्ति के लांछन नही हैं। सिंहासन में सिंह-युगल का अंकन जैन प्रतिमा शास्त्र का एक सामान्य सा लक्षण है। इसके कई उदाहरण उसी गर्भालय में लगी अनेक तीर्थंकर मूर्तियों के सिंहासनों में उपलब्ध है। अतः सिंहासन के सिंहों के आधार पर इसे सन्मति की मूर्ति मानना साधार मान्यता नहीं होगी।

३. वर्द्धमान की प्रतिमा के परिकर में उनके शासन देवता गजारूढ़ मातंग यक्ष और शासनदेवी सिद्धयिका का अंकन होना चाहिये जो इसमें नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण्डित आशाधरजी ने 'प्रतिष्ठा सारोद्धार' में मातंग का स्वरूप-

मुग्दप्रभो मूर्धनि धर्मचक्रम्, विभ्रत्फलम् वाम करेथ यच्छम् ,
वरं करिस्थो हरिकेतु भक्तो, मातंग यक्षो गतु तुष्टि मिष्ट्या ।

इसी ग्रन्थ में देवी सिद्धायिका का स्वरूप इस प्रकार किया गया है -

सिद्धायिकां सप्त करोच्छितांग, जिनाश्रयां पुस्तकदान हस्ताम्,
श्रितां सुभद्रासन मन्त्र यज्ञे, हेमद्युति सिंहगति यजेऽहम् ।

इस वर्णन से युक्त शासनयक्ष और यक्षी का अंकन बड़ेबाबा के परिकर में अंकित नहीं है, इसलिए भी यह मूर्ति भगवान महावीर की नहीं मानी जा सकती।

श्री रूपचन्द्र 'रतन' ने अपने उक्त लेख में एक और आधार इस प्रकार लिखा है- 'मन्दिर के शीर्ष भाल पर अवस्थित पाषाण कृत सिंह अंकित है जो दर्शकों को दूर से ही सूचित करता है कि यह जिनालय श्रीवर्द्धमान स्वामी का है। इस सम्बन्ध में इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि मन्दिर के शीर्ष भाग पर शुकनासा बिम्ब की स्थापना नागर और नागवेशर शैली के मन्दिरों की विशिष्टता रही है। उनमें सर्वत्र न केवल जैनों, वरन शैवों और वैष्णवों में भी, केवल सिंह की मूर्ति स्थापित करने की प्रणाली रही है। वह मन्दिर के अधिष्ठाता देव की शक्ति की प्रतीक मानी जाती है। इसी प्रणाली के अंतर्गत इस मन्दिर के निर्माताओं ने वह सिंह यहाँ स्थापित किया होगा। मूर्ति का चिन्ह उसके आसन में होता है। मन्दिर के शीर्ष पर उसके पाये जाने का कोई प्रमाण कहीं प्राप्त नहीं हुआ।

इसी लेख में मातंग यक्ष को बन्दर मुखाकृति लिखा गया है पर ऐसा कोई शास्त्रोक्त प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया। आसन के इस यक्ष को देखकर स्पष्ट ही जाना जा सकता है कि प्रस्तुत अंकन, वृषभ मुखाकृति, गोमुख यक्ष का है। बन्दर मुखाकृति नहीं है। बन्दर के सींग नहीं होते, पर गोमुख की मूर्ति में सींग स्पष्ट हैं। **ये तो नाभिनन्दन ऋषभनाथ हैं –**

४. भगवान आदिनाथ के दीर्घकालीन, दुर्द्धर तपश्चरण के कारण उनकी केशराशि बढ़ गई थी इसी के प्रतीक स्वरूप उनकी प्रतिमा में जटाएं बनाने की परम्परा प्रचलित हुई। बड़े बाबा के दोनों काँधों पर जटाओं का स्पष्ट अंकन है। जटाओं के अंकन के इस रहस्य का उल्लेख आदिपुराण में इस प्रकार वर्णित है -

हे भगवन्, आपके मस्तक पर फैली श्याम केशराशि जटाओं के रूप में ऐसी लगती है जैसे वह आपकी दीर्घकालीन तपस्या से प्रगट ध्यान रूपी अग्नि में जलते हुए कर्मों का धुआं ही हो -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिरं तपस्यतो यस्य जटा मूर्ध्नि बभुस्तराम् ।
ध्यानाग्नि दग्ध कर्मेन्ध निर्मद धूम शिखा इव ॥

-आदिपुराण पर्व 1. श्लोक 9

बड़े बाबा के नाम से प्रख्यात इस प्रतिमा में जटाओं पर हमारा ध्यान गया हो या नहीं, परन्तु लोक रागिनी की परम्परा का पहरुवा, ग्रामीण गीतकार, बहुत प्राचीन काल से इस तथ्य को गाता रहा है। कुण्डलपुर में बालकों का मुण्डन संस्कार कराने की पुरानी प्रथा है। उस अवसर पर यह गीत न जाने कब से यहां गाया जाता है- ओ बड़ेबाबा, आप स्वयं तो जटाधारी हैं और हमारे बालक की चोटी भी मुड़वा दी आपने ?

कुण्डलपुर बाबा जटाधारी, मौड़ा की चुटइया मुड़ा डारी ।

'महादेव' 'युगादिदेव' आदि नाम भी सदैव से आदिनाथ के लिये ही प्रयुक्त होते आये हैं। बड़े बाबा भी वैसा ही एक वरिष्ठता सूचक नाम है।

५. हमारी इस धारणा का अन्तिम और महत्वपूर्ण आधार बड़े बाबा के सिंहासन में अंकित आदिनाथ के गोमुख यक्ष और यक्षी देवी चक्रेश्वरी का शास्त्रोक्त सायुध अंकन है। पंडित प्रवर आशाधरजी के अनुसार -

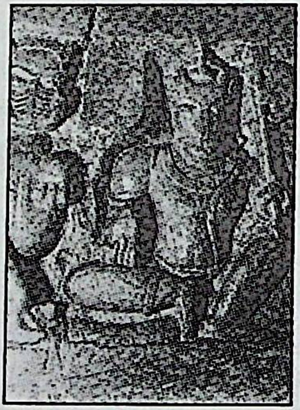

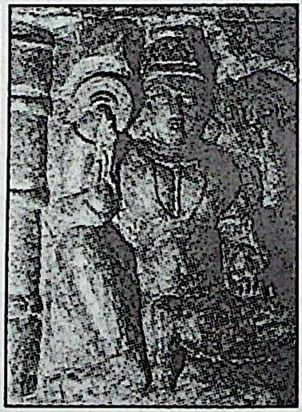

गोमुख यक्ष का स्वरूप इस प्रकार है -

'सव्येतरोर्ध्वकरदीप्र परशवधाक्ष सूत्रं, तथाधर करांक फलेष्ट दानम् ।
प्राग्गोमुखं, वृष मुखं वृषगं, वृषांक, भवतं यजे कनकभं वृष-चक्र शीर्षम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा देवी चक्रेश्वरी का स्वरूप इस प्रकार है -

भर्माभाद्य करद्वयाल कुलिशा, चक्रांक हस्ताष्टका,
सव्या सव्य शयोह्यसत्फल वरा, यन्मूर्ति रास्तेम्बुजे।
ताक्ष्ये वा सक्र युग्म मुचकत्यागैश्चतुर्भिः करैः,
पंचावाश शतोन्नात प्रभुनतां, चक्रेश्वरीं तां यजे।

इस वर्णन के अनुरूप हाथ में फरसा लिये हुए, वृषभ की आकृति वाला, सींग सहित गोमुख यक्ष, तथा नर-गरुड़ पर आसीन, दोनों हाथों में चक्र युक्त, चतुर्भुजी देवी चक्रेश्वरी की, शास्त्रोक्त स्वरूप वाली, सवा हाथ अवगाहना की ये दोनों मूर्तियां बड़ेबाबा के सिंहासन में अंकित हैं।

गोमुख के दोनों सींग, अपेक्षाकृत लम्बी आँखें, उभरे कान एवं मुकुट पर धर्मचक्र दृष्टव्य है। गले में माला तथा यज्ञोपवीत और दाहिने हाथ में मातुलंग एवं बायें हाथ में परसु अंकित है। ललितासन चक्रेश्वरी की चार भुजाओं में से ऊपर की दो भुजाओं में चक्र हैं और नीचे वाले हाथों में से एक में शंख है तथा दूसरा हाथ वरद मुद्रा में है। देवी के शरीर पर वक्षहार, मणिमाल, मोहनमाला, कंगन, कुण्डल, मुकुट आदि अलंकार यथा स्थान शोभित हैं।

इन्हीं आधारों के बल पर मैं बड़ेबाबा को भगवान आदिनाथ के नाम से नमन कर रहा हूँ। पार्श्वस्थ चामरधारी सौधर्म एवं ऐशान इन्द्रों, एवं पुष्पमाल्य सहित उड़ते हुये विद्याधरों तथा शिरोभांग पर सुन्दर छत्र और नीचे सिंहासन का अंकन बताता है कि ये तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा है। अंकन शैली एवं कला के आधार पर, इसके निर्माण का समय उत्तर गुप्तकाल और पूर्व मध्यकाल (छठवीं से आठवीं शताब्दी ईस्वी) के बीच का अनुमान किया जाता है। ***मेरा यह शोध लेख अप्रेल १९६४ में अनेकान्त पृष्ठ ४३ पर, तथा उन्हीं दिनों जैन सन्देश आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है।***

प्रारम्भ से ग्यारहवीं शताब्दी तक कुण्डलपुर का क्रमबद्ध इतिहास ढूँढने का कभी किसी ने प्रयत्न नहीं किया। सिर्फ वि. संवत ११८३ में प्रतिष्ठित, सिंघई मनसुख भाई रैपुरा द्वारा स्थापित प्रतिमा से, हम यह जान पाते हैं कि उस समय यह स्थान सर्व साधारण की जानकारी में था। इसके पश्चात् १५३२ की प्रतिमा और लेख मिलता है। इसके बाद की तो अनेक प्रतिमायें मन्दिरों में विराजमान हैं। उनके अध्ययन से भी इतिहास की कड़ियां जोड़ी जा सकती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमान् पण्डित जगन्मोहनलाल जी शास्त्री ने १९६७ में बड़े बाबा के मन्दिर के मण्डप में ही पाषाण की एक प्राचीन चरण चौकी पर एक मूर्ति लेख पढ़ा जिसमें 'कुण्ढडलगिरौ श्रीधरस्वामी' यह स्पष्ट उल्लेख है। इस विषय के कुछ शास्त्रीय प्रमाण भी उन्होंने जुटाये और सबल आधारों पर अपनी यह मान्यता स्थापित की कि **अंतिम केवली भगवान श्रीधर स्वामी की निर्वाण भूमि 'कुण्डल गिरि' यही कुण्डलपुर है,** इस प्रकार यह सिद्ध क्षेत्र है। पण्डित जी का यह विद्वत्ता पूर्ण लेख अनेकान्त सन् १९६७, वर्ष २० किरण ५ में पृष्ठ १९४ पर प्रकाशित है। प्रतिमा की पहचान के विषय में ***पंडित जी ने अपने लेख में मेरी इस मान्यता से सहमति व्यक्त की है कि यह प्रतिमा आदि जिनेश्वर भगवान ऋषभदेव की ही है।***

इस प्रकार ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह निश्चित हो जाता है कि-

१. बड़ेबाबा की प्रतिमा छठवीं-सातवीं शताब्दी ईस्वी में निर्मित हुई। उसका मन्दिर कालान्तर में जीर्ण हो गया और समय-समय पर उसका पुनर्निर्माण होता रहा। मन्दिर को वर्तमान रूप महाराजा छत्रसाल द्वारा दिया गया।

२. यतिवृषभाचार्य 'तिलोय पण्णत्ति' मे तथा पूज्यपादस्वामी 'निर्वाण-भक्ति' में श्रीधर केवली की सिद्ध-भूमि 'कुण्डलगिरि' नामसे इस क्षेत्र का उल्लेख करते हैं जिससे सिद्ध है कि छठवीं शताब्दी के पहले भी यह स्थान सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध था।

३. पांच-सात सौ वर्ष प्राचीन चरण प्रतिमा पर *'कुण्डलगिरौ श्रीधरस्वामि'* वाक्य का अंकन इस बात का सूचक है कि प्राचीन काल में आचार्यों के सामने भी यह स्थान श्रीधर केवली की निर्वाण भूमि के रूप में जाना-माना जाता था।

बड़े बाबा का मन्दिर बहुत ही सुन्दर ढंग से करीब ६ फुट चौड़ी चूना और पत्थर की मजबूत दीवारों से तीन खण्ड ऊँचा बना हुआ था। बाहरी दीवारों पर कारीगरी नहीं है। मंदिर मराठा काल की मन्दिर निर्माण कला का, १६वीं-१७वीं शताब्दी का एक अच्छा उदाहरण था जो कुछ हठाग्रही लोगों की मनमानी से आज शिखर-विहीन हो गया है। देखें अब कब उसकी गरिमा लौटती है। मंदिर के भीतर वेदी के चारों ओर परिक्रमा और नीचे तहखाना था जिसमें यात्री रुपया-पैसा डालते थे तब उसकी आवाज सुनाई देती थी, परन्तु कालान्तर में हमारे पूर्वजों ने परिक्रमा का मार्ग और तहखाना, दोनों बंद करा दिये। हमने उनके बारे में मात्र सुना है, देखा नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लुप्त हो गये थे बड़ेबाबा –

सैकड़ों वर्ष पूर्व एक बार यह मन्दिर भूकम्प के प्रभाव से ढह कर गुफा का रूप धारण कर चुका था। लोगों का गमन भी यहाँ दुर्लभ हो गया था। इस स्थान पर जंगली पशुओं और बीहड़ झाड़ियों का साम्राज्य छा चुका था। किन्तु बुन्देलों के शासनकाल में यह स्थान फिर प्रकाश में आया।

विक्रम संवत् १७५० में या इसके आस पास जैनागम अनुयायी, मूल संघ, बलात्कार-गण, सरस्वती-गच्छ, स्वामी कुन्दकुन्दाचार्य आम्नाय के विद्याधीश भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी अपने शिष्यों सहित हिंडोरिया पधारे। ये देव-दर्शन के बिना आहार नहीं करते थे। लोगों ने इन्हें कुण्डलपुर का पता दिया। सुरेन्द्रकीर्ति महाराज पता लगाते हुये लोगों की सहायता से उस निर्जन स्थान पर पहुँचे। बड़े बाबा के दर्शन से वे बहुत प्रभावित हुये। उनके शिष्य श्री सुचन्दगणी जी ने मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु भिक्षा मांगने की गुरु से आज्ञा ली और कार्य आरम्भ कराया, परन्तु दैव-दुर्विपाक से उनकी आयु पूर्ण हो गई तब उनके सहचर नमिसागर ब्रह्मचारी ने इस अधूरे कार्य को पूरा कराने का संकल्प किया।

छत्रसाल का आगमन–

इसी समय बुन्देलखण्ड गौरव, शूरवीर, महाराजा छत्रसाल कुछ मुगल आतताइयों द्वारा सताये गये, अपनी राजधानी पन्ना छोड़कर राज्य वापिस लेने के प्रयत्न में इधर-उधर भटकते हुए कुण्डलपुर पधारे। मनुष्य का जहां वश नहीं चलता वहाँ वह अपने को भगवान के भरोसे पर छोड़ देता है। यही हाल महाराज छत्रसाल का हुआ। कुण्डलपुर के वन में ब्रह्मचारी नमिसागर से उनकी भेंट हुई। ब्रह्मचारीजी ने छत्रसाल के सम्मुख भी सहायता के लिए हाथ फैला दिया, परन्तु छत्रसाल लाचार थे, फिर भी उन्होंने साहस बटोर कर वचन दिया कि यदि मैं पुनः अपना राज्य वापिस पा जाऊँ, तो बड़ेबाबा के मन्दिर का निर्माण करा दूंगा।

आप इसे अतिशय समझें या छत्रसाल का पुण्योदय, या सैन्यबल का कौशल, परन्तु शीघ्र ही उन्हें पुनः अपना राज्य वापिस मिल गया और वे पन्ना की गद्दी पर विराजमान हुये। वे अपनी प्रतिज्ञा भूले नहीं थे। बड़ेबाबा मन्दिर का सुदृढ़ और विशाल रूप में पुनर्निर्माण हुआ और एक हल्की चहार-दीवारी के भीतर पूरे परिसर की रचना की गई। उसी समय तालाब बंधवाकर चारों ओर घाट बनवाये गये। विक्रम संवत् १७५७ में यह निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

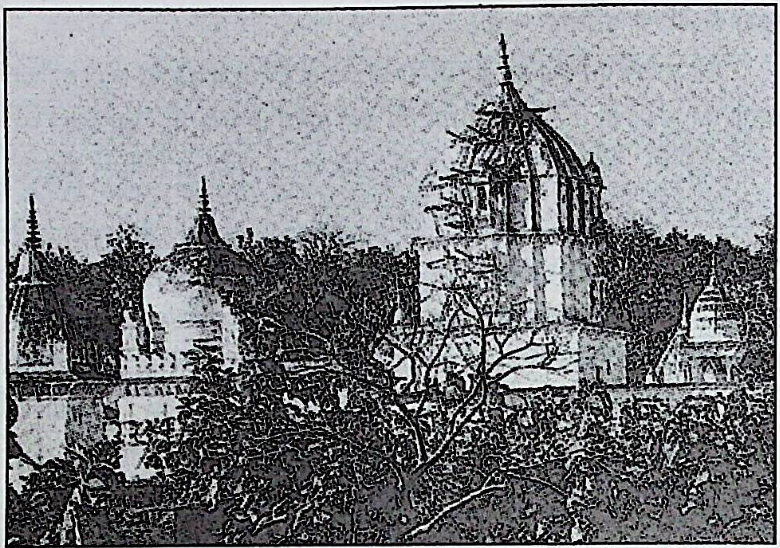

छत्रसाल द्वारा निर्मित बड़ेबाबा के मन्दिर की मरम्मत के समय साहु जैन के इंजीनियर ने कहा था अभी सैकड़ों साल तक इस मन्दिरको जीर्णोद्धार की जरूरत नहीं है। यह बहुत मजबूत बना हुआ है । इस कमेटी को वह बीस साल में ही कमजोर लगने लगा और चुपचाप उसे गिरा दिया गया ।

आज मैं सोचता हूं कि हमारे अपने ही भाईयों के द्वारा यदि यह दुर्भाग्यपूर्ण तोड़-फोड़ न हुई होती तो अभी सैकड़ों साल तक महाराजा छत्रसाल द्वारा निर्मित वह उत्तुंग शिखर वाला मन्दिर अपने निर्माता की गौरव-गाथा सुनाता हुआ हमारी पीढ़ियों को रंजायमान करता। पर जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तब कोई कब तक कुशल मनाये ?

निर्माण कार्य पूरा हुआ तब महाराजा छत्रसाल स्वयं कुण्डलपुर पधारे और विक्रम संवत् १७५७ की माघ शुक्ला १५ सोमवार को, मघा नक्षत्र के शुभ मुहूर्त में उनके सामने मन्दिर की प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हुआ। महाराजा ने इस अवसर पर मन्दिर को सोने चांदी के चमर-छत्र और पूजा के बर्तन भेंट किये। उनका दिया हुआ पीतलका एक थाल पिछली सदी तक क्षेत्रके भण्डार में था।

महाराजा छत्रसाल द्वारा तीर्थ के पुनरुद्धार की स्मृति-स्वरूप आज भी यहाँ प्रति वर्ष माघ सुदी में ऐतिहासिक मेला भरता है। इस अवसर पर सारे भारतवर्ष के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में जैन और जैनेतर आते हैं और बड़ेबाबा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करके अपने को धन्य मानते हैं। महाराजा छत्रसाल की प्रशस्ति के शिलालेख संस्कृत भाषा में लिखे मन्दिर के प्रवेश द्वार पर लगे हैं। इन अभिलेखों का भाषानुवाद सहित मूलपाठ इस प्रकार है-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ेबाबा मन्दिर का प्राचीन अभिलेख

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

संवत १७५७ वर्षे माघ सुदी १५ सोमवासरे

संवत्सरे पर्वत–वाण–युक्ते ससशते चैव सहस्रमेके,
श्रीमाघमासे सितपूर्णिमायाम् श्रीचन्द्रवारे च मघानक्षत्रे । १.

यातेयदा विक्रम राज्यकाले तदान्वये श्रीजिनमंदिरं वै,
कृतं समाप्तं बहु पुण्यहेतुः, श्री वर्द्धमानस्य जगद्गुरोर्हि । २

मूलसंघे बलात्कार गणे, परमेगच्छे सरस्वत्तयाः,
यो बभूव मुनिः धीमान्, कुन्दकुन्दो मुनीश्वरः । ३.
तस्यान्वयेव संजातो, ज्ञानवान्,- गुणसागरः,
तपस्वी संघ संपूज्यो, यशकीर्ति महामुनिः । ४.

पट्टेतदीये ललितादिकीर्त्तिः ज्ञानीसुधी श्रीजिनतत्ववेदी,
संसारभीतो जिनमार्गवेशी सुराधिपैर्पूजित पादपद्मः । ५.

तत्पट्टधारी जिनधर्मनिष्ठः श्रीधर्मकीर्तिः शुभ ज्ञानमूर्तिः,
श्रीरामदेवस्य पुराणकर्त्ता ज्ञानी विवेकी च हितोपदेशी। ६.

तत्पट्ट पंकेरुह भानुमूर्तिः पद्मालयः श्रीमुनि पद्मकीर्त्तिः,
दमी–व्रती–सत्वहितोपदेशी, संसारपायोनिधि पारसेतुः । ७.

तत्पट्ट भोक्ता गुणवान्सुधीरः श्रीशब्दशास्त्रार्णवपारप्राप्तः,
सुधीतपस्वी सुसुरेन्द्रकीर्तिः दयावगाही च क्षमीमनस्वी। ८.

ततच्छिष्यजातो सुचन्द्र....... दयी क्षमी श्री..... गणयो यः,
सुरेन्द्रकीर्तिः स्वगुरोश्चदेशात् आदाय भिक्षाटन द्रव्यभारम्। ९.

कारापितं तेन जिनालयस्य, श्री सन्मतेः मंगल कारणस्य,
जीर्णं समालोक्य महामनोज्ञं श्री नूतनं धर्म विवर्धनाय। १०.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस काव्य का भाषानुवाद इस प्रकार है

१-२. विक्रम संवत १७५७ माघसुदी १५ सोमवार को मघा नक्षत्र में जगत्गुरु श्रीवर्द्धमान भगवान के इस जीर्ण जिनालय का नवीनीकरण कराया गया।

३-४. श्रीमूलसंघ, बलात्कारगण, सरस्वती गच्छ में, श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर के अन्वय में, गुणों के सागर, सकल संघ द्वारा पूजित श्री यशकीर्ति महामुनि हुए ।

५. उनके पट्टधर ज्ञानी, सुधी, जिनागम के तत्व के ज्ञाता, संसार से भयभीत, दिगम्बर मुद्रा के धारक, इन्द्रादिवंद्य श्री ललितकीर्ति हुए।

६. उनके पट्ट पर जिनधर्म-निष्ठ, जग-हितकारी, साक्षात शुभ-ज्ञानमूर्ति श्रीरामदेव पुराण के कर्ता, ज्ञानी-विवेकी और हितोपदेशी श्रीधर्मकीर्ति हुए ।

७. उनके शिष्य, सूर्य के समान तेजस्वी और सागर के समान गम्भीर, श्रीमुनि पद्मकीर्ति हुए जो इन्द्रियों को जीतने वाले, प्राणीमात्र के लिये हितकर उपदेश देनेवाले और संसार-सागर से पार जाने के लिये सेतु के समान थे।

८. उनके पट्ट पर सुशोभित, गुणवान और धीरवीर, श्रीशब्द-शास्त्र रूपी समुद्र के पारगामी ज्ञाता, परम तपस्वी, करुणावान, क्षमानिधान और मनस्वी महामुनि श्री सुरेन्द्रकीर्ति स्वामी हुए।

९-१०. उनके शिष्य, अनेक गुणगणालंकृत (सम्भवत:) श्रीचन्द्रकीर्ति हुए जिन्होने इस जिनालय को जीर्ण-शीर्ण देखकर अपने गुरु श्री सुरेन्द्रकीर्ति के सदुपदेश से, श्रावकों से भिक्षा और दान प्राप्त करके, जिनधर्म की अभिवृद्धि और विश्व-शान्ति की मंगल-कामना से भगवान महावीर के इस परम मंगकारक जिनालय का नवर्मिाण कराया।

इसके पश्चात वहीं यह गद्य लेख अंकित है

> धर्मसागरो यदा मन्दिरटीलाग्रामे स्वायु क्षयं कृत्वा
> किंचित वेदिकादिकं न्यूनं चैत्यालयं विहाय स्वर्गतोगता
> तदात्वागत्य नमिसागरेण ब्रह्मचारिणा विदुषा स्वधर्मस्य गुरुवेऽधुना
> वेदिकादिकं सर्वपूर्णं कारायत्विा इदं संवत्सरं लिखित्वा स्थापितम्।

-सुरेन्द्रकीर्तिजी के शिष्य चन्द्रकीर्ति अपनी आयु पूरी करते हुए मन्दिरटीला ग्राम में देहत्याग कर जब स्वर्गगामी हुए, उस समय मन्दिर में वेदी आदि का काम शेष रह गया था। विद्वान बह्मचारी नमिसागर ने आकर वेदिका आदि का वह कार्य पूरा कराया और यह संवत्सर अभिलेख स्थापित कराया।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुन्देलकेसरी महाराजा छत्रसाल का अभिलेख

श्रीमहाराजाधिराज्ञः
काशीश्वर गहिरवारान्वयस्य प्रचण्ड शासनस्य
अखिलावनीभृत् शतखण्डकरणस्य अतुल्य मार्तण्डस्य
सकलप्रबलावनीपाल समूह मस्तकालिमाला
चुम्बित चरणारविन्दस्य
जिनधर्ममहिमानिरत चेतसः
प्रबलतर कठोर भुजदण्ड विशिष्ट निजविग्रहस्य
षट्दर्शन विशिष्टाभ्यासागम-सम्भाषणकरन प्रवीणस्य
सद्धर्म-सम्भाषण-समर्थस्य याजिनः शूरवीरस्य
देव-गुरु-शास्त्र पूजन तत्परस्य
श्रीमहाराजाधिराज्ञः श्रीछत्रसालस्य महाराज्ये
सकल सम्पत्संयुक्त प्रजाजनस्य चैत्यालयस्य निर्मापितम् ।
शुभम् भवतु मंगलम् ।

– गहिरवार अन्वय में काशीश्वरों के वंशज, प्रचण्ड सेनाधिप, समस्त पृथ्वीपतियों में अद्वितीय, सूर्य के समान तेजस्वी, जो समस्त बलशाली नरेशों की मस्तकमाला से पूजित हैं और जिनधर्म की महिमा से प्रभावित हैं, अत्यंत कठोर-विशाल भुजदण्डों से शोभित देह वाले, षट्दर्शन के शास्त्रों के विशिष्ट अभ्यास से जो शास्त्र-सम्भाषण में निपुण हैं, शूरवीर और देव-गुरु-शास्त्र की भक्ति में सदा संलग्न, उन महाराजाधिराज श्री छत्रसाल महाराज की ओर से, सकल सम्पदाओं से युक्त और प्रजाजनों से पूजित इस मन्दिर का निर्माण कराया गया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या कल्पना करते थे मन्दिर निर्माता ?

जब कोई श्रावक जिनालय का निर्माण कराता है, तब उसकी जिनेन्द्र-भक्ति अपनी चरम सीमा पर होती है। अपने निर्माण की कुशलता के प्रति वह बहुत चिन्तित होता है और आने वाले हजारों सालों तक के लिये अपने कृतित्व की सुरक्षा की कामना करता है। अपने जिनायतन के प्रति निर्माता का यह प्रशस्त राग उसके लिये परम्परा मोक्ष का कारण भी बन सकता है।

खजुराहो में जगत प्रसिद्ध पार्श्वनाथ जिनालय के निर्माता पाहिल सेठ ने अपने मन्दिर के द्वार पर अपनी भावना इन शब्दों में अंकित की थी कि - ***'मेरे पाहिल वंश के क्षय या क्षीण हो जाने पर भी, अन्य वंशों में कोई तो रहेगा। उनमें से जो मेरे इस दान की पालनां या सेवा-सम्हार करेगा, मैं अपने आपको उस कृपालु के दासों का भी दास स्वीकार करता हूं'*** -

> **पाहिल वंशे तु क्षयेक्षीणे अपर वंशोऽयं कोपि तिष्ठति,**
> **तस्य दासस्य दासोऽहं, मम दत्तिस्तु पालयेत।**

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, जरा विचार कीजिये कि हजार साल पूर्व के श्रावक ने जब खजुराहो में अपने मन्दिर के लिये ऐसी विनम्र कामना अपने शिलालेख में अंकित की थी, तब डेढ़ हजार साल पूर्व बड़ेबाबा के निर्माता ने, और उसके बाद उस जिनालय का जीर्णोद्धार कराने वाले पुण्य-पुरुषों ने, अपने निर्माण की कुशल कामना के लिये कितनी बार ऐसी मंगल कामनाएं की होंगी ?

आज जब श्रीक्षेत्र के प्रबंधन की बाग-डोर आपके हाथों में है तब आपको सोचना चाहिये कि अपने उन पूर्वजों की भावनाओं को सम्मान देने के लिये आपका कर्तव्य क्या है? उनके भव्य और मजबूत निर्माण को सुरक्षित रखना आपका नैतिक दायित्व है, या उन देवालयों को बिना वजह तोड़-फोड़ कर जमींदोज करने का दुष्कृत्य आपको करना चाहिये ? बड़ेबाबा के चरणानुराग में डूबा हुआ मैं, साधर्मी वात्सल्य के नाते भी आपसे प्रार्थना करता हूं कि कोई कुछ भी कहे, आप जिनायतन के विनाश का टीका अपने माथे पर और आगे मत लगाइये। यह आपके लिये पाप का बज्रलेप बनने वाला है। इसके दुष्परिणाम से आपको बचाने की सामर्थ्य किसी में नहीं होगी। किसी में भी नहीं।

शुभ अशुभ करम फल जेते भोगै जिय एकहिं तेते ....।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ेबाबा के बारे में एक छोटा सा अनुरोध

कुण्डलपुर में स्थित 'बड़े बाबा' के नाम से जगत विख्यात और महावीर भगवान के नाम से पूजित डेढ़ हजार साल प्राचीन, अतिशय-युक्त यह एक दुर्लभ विशाल पाषाण प्रतिमा है। इधर कुछ समय से बड़े बाबा के मन्दिर में कुछ तोड़-फोड़ जीर्णोद्धार के नाम से की जा रही हैं। मन्दिर का ऊंचा शिखर गिरा दिया गया है और उस परिसर के चार मन्दिर तोड़ दिये गये हैं और एक अधगिरा पड़ा है। बड़ेबाबा मन्दिरके मण्डप की तीनों वेदियां नष्ट कर दी गई हैं, और अब सुनने में आया है कि इस प्राचीन मन्दिर के पीछे एक नया मन्दिर बनाकर बड़े बाबा को वहां स्थानान्तरित करने की योजना है।

कुण्डलपुर क्षेत्र प्रबंधक समिति द्वारा इस बारे में कोई समग्र योजना समाज की जानकारी के लिये प्रसारित नहीं की गई इसलिये इस तथा-कथित जीर्णोद्धार को लेकर समाज में कई प्रकार की चर्चायें हैं।

इस संबंध में हमारी धारणा यह है कि प्राचीन प्रसिद्ध मन्दिर को मिटाकर नया निर्माण करना, 'बड़े बाबा' जैसी विशाल मूर्ति को स्थानान्तरित करना और उसकी दिशा बदलना इतना बड़ा कार्य है कि हर दृष्टि से विचार करके और समाज की स्वीकृति लेकर ही वह कार्य किया जाना चाहिये। *यहां के सभी ५८ मन्दिर, सन १९१३ से भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा विधिवत राष्ट्रीय महत्व के स्मारक घोषित करके संरक्षित किये जा चुके हैं* अतः इनमें कोई भी फेर-फार करने के पूर्व विभाग की अनुमति लेना भी अनिवार्य है। बिना अनुमति के वैसा करना कानूनी अपराध है।

हम यह भी समझते हैं कि ***यह प्रतिमा एक चट्टान में उकेरी गई 'अचल' प्रतिष्ठित प्रतिमा है। इसका अतिशय भी यही कहा जाता है कि पटेरे की ओर ले जाने का प्रयास करते ही मूर्ति अपने आप यहाँ स्थिर हो गई और बहुतेरे प्रयास करने पर भी टस से मस नहीं हुई, तब उस पर यहीं मन्दिर का निर्माण कराया गया।*** सैकड़ों साल से, हजारों नहीं, लाखों लोगों के मन में बसी हुई उस मान्यता को चोट पहुंचाकर मूर्ति को स्थानान्तरित करने की योजना कुछ युक्ति-संगत नहीं लगती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमें विश्वास था कि क्षेत्र प्रबंध समिति की ऐसी कोई योजना नहीं होगी। यह शायद किसी के द्वारा उड़ाई गई निराधार अफवाह ही होगी। परन्तु फिर भी जब समाज में चर्चा चल ही निकली थी तब, क्षेत्र प्रबंध कमेटी का यह कर्तव्य था कि वे तत्काल समाज को अधिकृत जानकारी देकर कुशंकाओं के इस कोहरे को निरस्त करते।

जो लोग बड़ेबाबा मन्दिर में, या ऐसे अन्य प्राचीन मन्दिरों की संरचना में वास्तु-संबंधी दोष निकालकर, उनके संशोधन की बात सोचते हैं, उन्हें विचारना चाहिये कि बड़े-बड़े मुनि-आचार्य और लाखों लोग, अनेक शताब्दियों से इन मन्दिरों की भक्ति-वन्दना करते आये हैं। दीर्घकाल तक पूजा-अर्चना होते रहने पर सारे दोषों का स्वतः परिहार हो जाता है। मन्दिर को गिरा देना ही दोष निराकरण का एक मात्र उपाय नहीं है।

बड़ेबाबा मन्दिर के बारे में तो दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठतम प्रतिष्ठाचार्य पण्डित नाथूलालजी शास्त्री ने स्वयं विचार करके इस मन्दिर को वास्तु और प्रतिष्ठा शास्त्र के सर्वथा अनुरूप तथा निर्दोष बताकर स्पष्ट कहा है कि- ***'वास्तु शास्त्रानुसार भी मन्दिर-मूर्ति की दिशा ठीक है।'***

समस्याएं हर तीर्थ पर हैं –

प्रसंगवश हम यह भी कहना चाहेंगे कि यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर, अथवा कहीं-कहीं सुरक्षा की दृष्टि से मन्दिरों में सुधार के विकल्प सामने आते हैं, परन्तु हर जगह उन पर पूरी गम्भीरता के साथ विचार-विमर्श करके, तथा विशेषज्ञों की राय लेकर ही ऐसे महात्वपूर्ण कार्य हाथ में लिये जाते है। सर्वत्र इसमें सुविधा और सुरक्षा के साथ प्राचीनता की रक्षा करने पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। इसके कुछ उदाहरण हमारे सामने हैं -

*१. **श्री महावीरजी में** सब लोग प्रक्षाल-अभिषेक कर सकें इसके लिये उसी रंग की, वैसी ही मूर्ति नई वेदी बनवाकर प्राचीन वेदी के सामने स्थापित कर दी गई। मूल प्रतिमा का अभिषेक नियंत्रित कर दिया गया है। यहां वार्षिक उत्सव के समय मूल मूर्ति की शोभा-यात्रा निकालने की सैकड़ों सालों से चली आ रही प्रथा भी सुधार ली गई। प्राचीन प्रतिमा के स्थान पर जुलूस में नव-स्थापित प्रतिमा को ले जाना प्रारम्भ कर दिया गया।*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. ***श्रवणबेलगोल में*** *१९८१ के सहस्राब्दी महोत्सव में, अपरिमित भीड़ की आशंका से, विन्ध्यगिरि पर्वत पर, बाहुबली स्वामी के मन्दिर में से पीछे उतरने के लिये एक रास्ता बनाने की मांग अनेक जनों ने की, पर मैनेजिंग कमेटी द्वारा ऐसा* कोई सुझाव स्वीकार नहीं किया गया। लाखों की भीड़ को अन्य उपायों से नियंत्रित किया गया। आवश्यक्ता पड़ने पर कुछ समय के लिये दर्शन रोक दिये गये, किन्तु मन्दिर में फेरफार करना स्वीकार नहीं किया गया। वह इसलिये कि प्राचीन मन्दिर शैली की कुछ अपनी विशेषताएं होती हैं। किसी एक व्यक्ति की कल्पना के आधार पर, या मात्र अहंकार-पूर्ति के लिये, प्राचीन मन्दिर की संरचना से छेड़-छाड़ करने की किसी को अनुमति नहीं दी जानी चाहिये।

३. ***हुमचा पद्मावती में*** *पार्श्वनाथ मन्दिर के बगल में एंक बड़ा हॉल बनाकर* यात्रियों को सुविधा दी गई, पर मन्दिर की शैली में परिवर्तन या मूर्तियों के क्रम में बदलाव के विकल्प को स्वीकार नहीं किया गया।

४. ***राजस्थान में*** *सॉगानेर, केसोरायपाटन, मौजमाबाद आदि अनेक स्थानों पर तलघर में विशाल, सुन्दर मूर्तियॉ रखी हैं, पर वहीं उनकी पूजा-प्रभावना की जाती है।* ***आगे क्या होगा सो तो भगवान जाने पर उन्हें अन्यत्र विराजमान करने की बात कभी नहीं कही गई। प्राचीनता का अपना महत्व होता है।***

५. ***अजैन तीर्थों पर*** *भी प्राचीनता की रक्षा को महत्व दिया जाता है। अमरनाथ की गुफा में बर्फ के शिवलिंग के दर्शनार्थ लेटकर जाना पड़ता है, पर वहां चट्टानों का विस्फोट करके मार्ग बनाने का विकल्प स्वीकार नहीं किया गया।*

ऐसे और भी अनेक उदाहरण देश में मिल जायेंगे। **देव और देवालय के इतिहासमें प्राचीनता का अपना महत्त्व है और उस प्राचीनता की रक्षा करना हम सबका दायित्व है।** नव-निर्माण की असीमित सम्भावनाएं सबके लिये खुली हैं नव-निर्माण आवश्यक है या अनावश्यक है, इस पर तो बहस हो सकती है, पर ऐसे निर्माण प्राचीनता की रक्षा करते हुए भी किये जा सकते हैं। नया कुछ बनाने के लिये पुराने मन्दिरों को तोड़ना-गिराना, या उनके रूपाकारमें आमूल परिवर्तन करना और ऐसी विशाल, अचल प्रतिष्ठित मूर्तियों को स्थानान्तरित करना 'नव-निर्माण' के लिये कहीं आवश्यक नहीं कहा जा सकता। **यह तो सीधा विनाश का काम है।** ***ऐसा करने पर उन स्थानों की जिस प्राचीनता पर हमें गर्व होना चाहिये, वही नष्ट हो जाती है। यह कैसा जीर्णोद्धार है आपका ?***

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया है। आज भी कर्नाटक में एक से एक विशाल मूर्तियों का निर्माण हो रहा है। दिल्ली में अहिंसास्थली के लिये स्व. लाला प्रेमचन्दजी ने बहुत सुन्दर मूर्ति बनवाकर स्थापित कराई थी। श्रीक्षेत्र तिजारा के लिये भी बड़ी विशाल मूर्ति बन रही है। मांगीतुंगी में एक पहाड़ी को तराश कर एक सौ आठ फुट ऊंची, यानी गोमटेश्वर भगवान बाहुबली से लगभग दूने आकार की आदिनाथ प्रतिमा बनवाने की योजना सामने आई है।

कुण्डलपुर में यदि सचमुच किसी बहुत बड़े मन्दिर की आवश्यक्ता महसूस की जा रही हो, तो उस मन्दिर के लिये उपयुक्त आकार की नवीन प्रतिमा भी बनवा लेना चाहिये। बड़े बाबा जहां हैं, वहीं ठीक हैं। उनसे छेड़छाड़ करने की न तो आवश्यक्ता है और न वैसा करना उचित है।

कुण्डलपुर में बड़ेबाबा मन्दिर परिसर का दृश्य

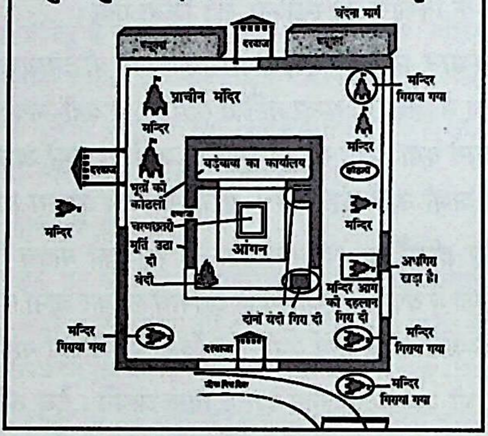

यह बड़ेबाबा मन्दिर का आंगन एक पूरा तीर्थ था जिसमें आठ अन्य मन्दिर भी थे। गोल घेरे में दिखाये चार मन्दिर नींव से गिरा दिये गये हैं। चौकोर घेरे वाला अधगिरा पड़ा है। एक नया मन्दिर बनाने के लिये इन दस मन्दिरों का विनाश? यह कैसा जीर्णोद्धार है?

जहां तक जीर्णोद्धार का प्रश्न है, मंदिर गिराना और अचल प्रतिष्ठित विशाल प्रतिमाओं को अकारण स्थानान्तरित करना 'जीर्णोद्धार' की परिभाषा में नहीं आता। इसे मन्दिर का नवीनीकरण भी नहीं कहा जा सकता। वह तो शुद्ध-शुद्ध नव निर्माण ही कहा जावेगा। **'जीर्णोद्धार' की प्रक्रिया में प्राचीनता की रक्षा पहली शर्त है। उसका अभिप्राय प्रचीनता की रक्षा और सार-सम्हार करना है, उसे गिराना या मिटाना जीर्णोद्धार नहीं कहलाता।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलपुर में बड़ेबाबा का मन्दिर

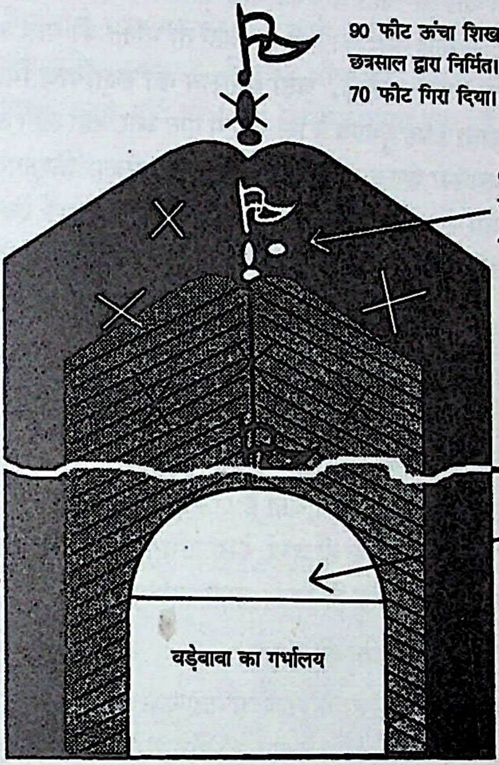

रेखांकन :
श्री प्रकाश सिंघई, एडवोकेट दमोह के सौजन्य से

बड़ेबाबा मन्दिर के निर्माता बहुत सक्षम लोग थे, पर वे गर्भालय की विशालता को नहीं, बड़ेबाबा की विराटता को रेखांकित करना चाहते थे। वर्तमान गर्भालय उनकी इसी सूझ-बूझ का फल है। बड़े-छोटे का माप निरपेक्ष नहीं, सापेक्ष गणित है। उस छोटे से गर्भालय में विराजमान हैं, इसीलिये वे 'बड़ेबाबा' दिखाई देते हैं। किसी बड़े हाल में विराजमान कर दिये गये तो वे 'बड़े' नहीं रहेंगे, छोटे हो जायेंगे। उनके दर्शन की प्रभाव-शीलता घट जायेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अस्वान बांध की डूब में आने वाले प्राचीन स्मारकों को हमारे देश के विशेषज्ञों ने शिफ्ट किया था, पर वहां जल की बाढ़ का डर था इसलिये किया। कुण्डलपुर के पर्वत पर ऐसी कोई आशंका नहीं है, वहां तो भक्ति की बाढ़ आती है, और **भक्ति की बाढ़ जहां आती है, वहां देवालय को स्थायित्व मिलता है, उसे मिटाया नहीं जाता।** यह दुर्भाग्य है कि देश में एक ओर जहां लोग अपने तीन सौ साल पुराने आराधना स्थल को सोने से मढ़ाकर उसका 'त्रिशताब्दी-उत्सव' मना रहे हैं वहीं हम पंद्रह सौ साल प्राचीन प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण देवालय को नेश्त-नाबूद करके दुनिया के सामने अपननी निष्ठा का चीर-हरण कर रहे हैं।

टैक्नालॉजी की हमारे देश में कमी नहीं है, पर क्या कुण्डलपुर के इस कार्य में टैक्नीशियन टीम की मदद ली जा रही है ? यह बात भी सही है कि मंत्रों के प्रयोग से बड़े बाबा को कहीं भी फूल की तरह भारहीन बनाकर ले जाया जा सकता है, पर प्रतिमा को हटाने की शक्ति अलग बात है और हटाने की आवश्यक्ता, अनिवार्यता तथा उसका औचित्य एक बिलकुल अलग बात है। जो-जो कुछ करना संभव हो वह सब जिनायतन के साथ किया ही जाये ऐसा उचित नहीं। वहां तो जो जितना आवश्यक हो वही और उतना ही किया जाना चाहिए।

छोटे गर्भालय में ही शोभा है बड़ेबाबा की –

यदि हम अपनी इस प्राचीन धरोहर के साथ अनावश्यक छेड़-छाड़ करेंगे तो वह कोई समझदारी का काम नहीं होगा। वह अपने पूर्वजों के साथ हमारा विश्वासघात होगा और आने वाली पीढ़ियों के साथ छल होगा। बीस साल पहले श्रावक शिरोमणि साहु श्रेयांस प्रसाद एवं साहु अशोक जी ने बड़े बाबा मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। उसे अभी कहीं किसी जीर्णोद्धार की जरूरत नहीं थी।

हमारा अनुरोध है कि बड़ेबाबा को वहीं सुरक्षित रखा ज़ाना चाहिये जहां वे डेढ़ हजार साल से हैं। उनकी महिमा आज भी अपरम्पार है। अपने छोटे से पुराने मन्दिर में उनकी गरिमा पूरी तरह सुरक्षित है। वे वहाँ भी बहुत बड़े हैं। इतने बड़े हैं जितना दूसरा कोई नहीं है।

गर्भालय का गणित अलग है –

जैन प्रतिमा विज्ञान एक अलग प्रकार का विज्ञान है। हम न तो मूर्ति में रंग भर सकते हैं, और न उसे आभरण-अलंकार से सजाने की हमें सुविधा है। ऐसी दिगम्बर छवि में मनोज्ञता और स्वस्ति-भावना का दर्शन कराना कलाकार के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुभव और कौशल से ही सम्भव होता है। इसीलिये हर मूर्ति में वह विशेषता उत्पन्न नहीं हो पाती। बड़ेबाबा जैसा आकर्षण तो हजारों मे एक मूर्ति में ही देखने को मिलता है। यह मनोज्ञता पैदा करने के लिये निर्माता को गर्भालय की स्थिति, उसमें प्राकृतिक प्रकाश का नियंत्रण और दर्शक के दृष्टिकोण आदि बहुत सी बातों पर विचार करके मूर्ति का स्थान निश्चित करना पड़ता है।

कुण्डलपुर के बड़ेबाबा की छवि में यह जो मनोहारी आकर्षण है, वह ऐसी कितनी ही धारणाओं के समन्वय से उत्पन्न हुआ है। यही मन्दिर निर्माताओं के विवेक का परिचायक है। ***जिन्होने बड़ेबाबा का निर्माण करके पाषाण में भगवान का आवाहन कर लिया था, वे बड़ेबाबा के लिये अधिक बड़ा मन्दिर भी बना सकते थे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसे उनकी अक्षमता या साधन-हीनता मानकर उनकी हंसी उड़ाना हमारी भूल होगी।*** वे हमसे अधिक समझदार लोग थे। अंतर केवल यह था कि उनका लक्ष्य था प्रतिमा की दर्शनीयता और आज हमारा लक्ष्य है अहंमन्यता और यशाकांक्षा। हमें मूल मन्दिर के निर्माता अपने पूर्वजोंका बौनापन देखने की बजाय अपने अहंकारकी शिला को नापना चाहिये।

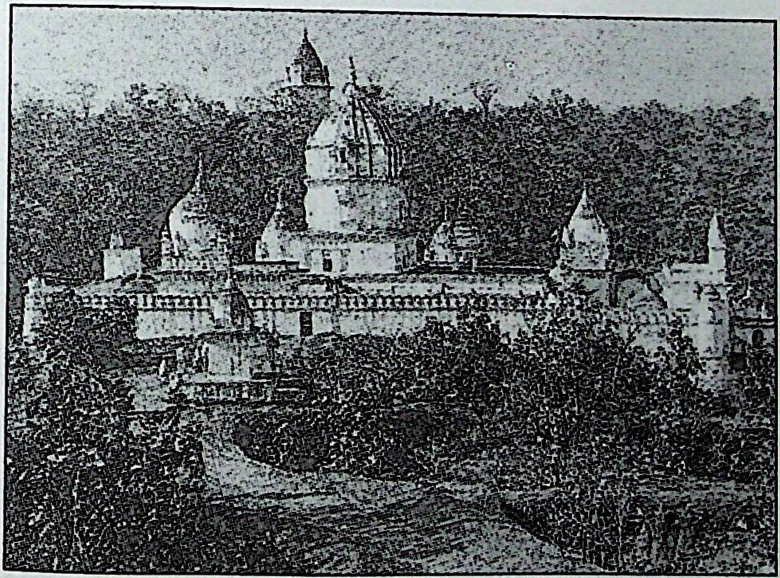

छहघरिया की ओर से देखने पर ऐसी मनोहर दिखती थी बड़ेबाबा के मन्दिर की झांकी। यदि बड़ेबाबा को पीछे की ओर सरकाना था, तो भी, ये चार प्राचीन मन्दिर, जो उसमें बाधक नहीं थे, क्यों गिरा दिये गये ? इसका उत्तरदायी कौन ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ेबाबा मन्दिर के निर्माता बहुत सक्षम लोग थे, पर वे गर्भालय की विशालता को नहीं, बड़ेबाबा की विराटता को रेखांकित करना चाहते थे। वर्तमान गर्भालय उनकी इसी सूझ-बूझ का परिणाम है। कुछ भी अपने आप में बड़ा या छोटा नहीं होता, यह एक सापेक्ष गणित है। उस छोटे से गर्भालय में विराजमान हैं, इसीलिये हमारे भगवान, 'बड़ेबाबा' दिखाई देते हैं। किसी बड़े हाल में विराजमान कर दिये गये तो वे 'बड़े' नहीं रहेंगे, छोटे हो जायेंगे। उनके दर्शन की प्रभावकता घट जायेगी।

कक्षा में ब्लैक बोर्ड पर दो लकीरें थीं, एक छोटी और दूसरी उससे बड़ी। कहा गया कि बड़ी लकीर को छुए बिना छोटी करना है। विद्यार्थी ने छोटी लकीर को बढ़ा दिया, बड़ी लकीर अपने आप छोटी हो गई। ठीक इसी प्रकार बड़ेबाबा को छोटा करने का सरल उपाय है कि आप उन्हें किसी विशाल कक्ष में विराजमान कर दें, वे छोटे दिखने लगेंगे। यह सिद्धान्त कठिन नहीं है, समझा जाना चाहिये।

कौन बना रहा है मन्दिर–

हमें ज्ञात हुआ है कि मन्दिर निर्माण के लिये सोमपुरा को अनुबंधित किया जा रहा है। उनका एक नक्शा भी प्रकाशित हुआ है। सोमपुरा परिवार मन्दिर निर्माण में दक्ष देश का माना हुआ परिवार है। उनके बनाये अनेक मन्दिर देखने का हमें अवसर मिला है। पर यह स्मरण रखना चाहिये कि सोमपुरा हिंदू मंदिरों और श्वेताम्बर जैन मंदिरों के निर्माण में दक्ष हैं। उत्तर भारत में दिगम्बर मन्दिरों की वास्तुगत परम्पराएं भिन्न रही हैं। माउण्ट आबू, कुम्भारिया और पालीताना के श्वेताम्बर मन्दिरों को खजुराहो, बानपुर, मालादेवी और देवगढ़ के दिगम्बर मन्दिरों के साथ अध्ययन करने पर यह अंतर समझा जा सकता है।

बिना किसी प्रादर्श के सोमपुराजी प्राचीन दिगम्बर मंदिर परम्परा की अस्मिता को सुरक्षित रख पायेंगे इसमें शंका है। वे स्व-कल्पना से जो बना सकते हैं उसका प्रयोग कुण्डलपुर के पर्वत पर नहीं किया जाना चाहिये। वहां से हटकर किसी नये स्थान पर उनकी कला-दक्षता का प्रयोग करना अधिक सुरक्षित होगा। वही दिगम्बर जैन संस्कृति के लिये हितंकर होगा। यदि अनजाने भी हमारे किसी प्राचीन क्षेत्र पर श्वेताम्बर शैली का कोई मन्दिर बन गया तो आने वाली पीढ़ियों को कितने विवाद झेलने पड़ेंगे, इस दृष्टि से भी विचार किया जाना चाहिए। प्रभावक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पदाधिकारियों को यह नहीं भूलना चाहिये कि -

तारीख में कुछ ऐसे मंजर भी नुमायां हैं,
लम्हों ने खता की औ' सदियों ने सजा पाई।

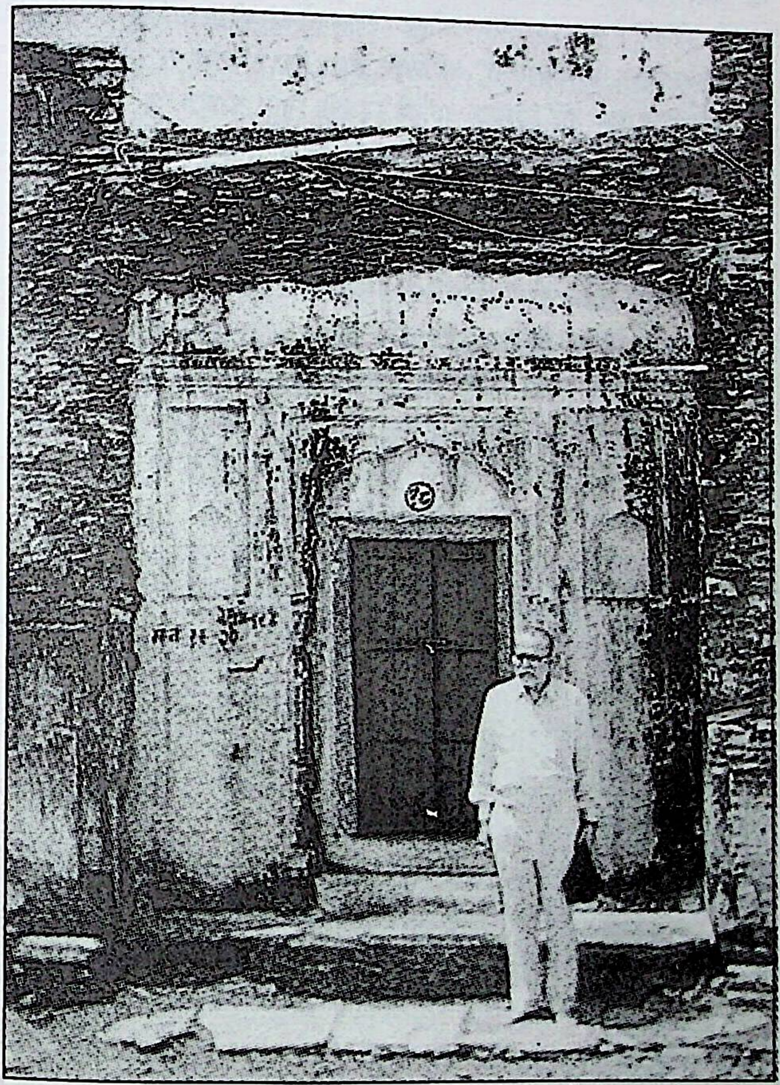

अधगिरा मं०नं० 18। सामने खड़े हैं श्री प्रकाश चन्द जैन एडवोकेट।
यह मन्दिर भी हिटलिस्ट में आ गया था। विरोध हुआ तब अधगिरा छोड़ दिया गया। मौका मिलते ही गिरायेंगे। समाज अगर आवाज नहीं उठाती है तो हर जगह ऐसी विनाशलीला दोहराई जा सकती है। हो सकता अनेवाली पीढ़ी को प्राचीन मन्दिर देखने को भी न मिलें। आप इस अभियान का क्या करेंगे, समर्थन या विरोध? आपको सोचना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिये हम पूरी शक्ति से पुकार कर श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर की प्रबंध समिति के पदाधिकारियों और सदस्यों से, यह विनम्र अनुरोध करना चाहते हैं, कि बड़ेबाबा को लेकर उनकी जो भी प्रस्तावित योजनाएं हों, उन्हें पूरी दिगम्बर जैन स माज के सामने सार्वजनिक रूप से प्रसारित करने का साहस करें। ***सभी प्रस्तावित योजनाओं की आवश्यक्ता, अनिवार्यता, औचित्य तथा वैधानिकता पर विचार करने का अवसर समाज को मिलना चाहिये।*** **इसके बिना श्रीक्षेत्र पर कोई कार्य करना न तो क्षेत्र के हितमें होगा न ही समाज के लिये उचित कहा जा सकता है।**

चार प्राचीन मन्दिर आप गिरा चुके हैं, अब तो श्रीक्षेत्र पर कृपा कीजिये।

इस ध्वंस-लीला का इतिहास लिखने-छापने की घोषणा जब अगस्त ९९ में हमने की, तभी से इस आलेख, को रोकने के लिये भांति-भांति के गर्हित उपाय किये जा रहे हैं। हमें धमकियों भरे पत्र भिजवाये गये, पर हमारे पत्र को उत्तर देने योग्य नहीं समझा गया। आज यह पुस्तक आपके हाथ में है पर अभी भी हमारे प्रश्नों का कोई समाधान दिखाई नहीं दे रहा। हम समझ नहीं पा रहं हैं कि -

क्षेत्र पर प्राचीन मन्दिरों को नष्ट करना निन्दनीय कार्य नहीं है, पर कमेटी से उस विनाश-यज्ञ की जानकारी मांगना निन्दनीय है और दण्डनीय अपराध है ?

साठ फुट ऊंचा शिखर गिराने से श्रीक्षेत्र की अप्रभावना नहीं हो रही, पर समाज तक उस ध्वंस-लीला की जानकारी पहुंचाने से 'कुप्रचार' होगा ?

आपका ये दुष्कार्य करते जाना पुण्य है, और हमारा पूछना पाप है ? यह कैसा गणित है आपका ? इस बात को लेकर किसी के प्रति घृणा फैलाना हमारा उद्देश्य नहीं है। हम सिर्फ इस प्राचीनता-विनाशक दुष्प्रवृत्ति के बारे में समाज को सावधान करना चाहते हैं।

कोई हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिये।

आशा है इस योजना से जुड़े हर व्यक्ति तक हमारी यह पुकार पहुंचेगी और बड़े बाबा की महिमा को हानि पहुंचाने वाला कोई काम कुण्डलपुर में आगे नहीं होगा। अपने हठाग्रह की रक्षा को, किसी की निन्दा-प्रसंशा को, या अपने व्यक्तिगत आर्थिक लाभ को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाने के बजाय, जैन संस्कृति और श्रीक्षेत्र की भलाई की दृष्टि से विचार करके समाज को स्पष्ट निर्णय लेना होंगे। समाज को गम्भीरता से इस पर विचार करने की आवश्यक्ता है।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह जीर्णोद्धार है या विनाश ?

हमसे प्रायः पूछा जाता है कि प्राचीन मन्दिरों का जीर्णोद्धार तो आवश्यक होता है, तब आप जीर्णोद्धार का विरोध क्यों कर रहे हैं ?

इस संबंध में हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि जीर्णोद्धार का विरोध हमने कभी नहीं किया। हम तो सदा अपनी शक्ति भर जीर्णोद्धार के लिये प्रयत्नशील रहे हैं और उसमें हमें सफलता भी मिली है। परन्तु अकारण किसी प्राचीन मन्दिर को जड़-मूल से गिराकर उसके सदियों पुराने अस्तित्व को हमेशा के लिये समाप्त कर देने की दुष्प्रवृत्ति को कभी भी 'जीर्णोद्धार' नहीं कहा जा सकता। हम उस विनाश का विरोध करते रहे हैं, कर रहे हैं और प्राण रहते तक करते रहेंगे। वह 'जीर्णोद्धार' नहीं हैं, वह तो पुरातन के विनाश पर खड़ा नवनिर्माण ही होगा।

हम नव-निर्माण के भी विरोधी नहीं हैं। हम तो मात्र प्राचीनता के विनाश के विरोधी हैं, और जीवन की आखिरी सांस तक रहेंगे। इसे हम श्रावक का धर्म मानते हैं। समाज के हर सदस्य को अपनी पुरा-सम्पदा के लिये सचेत और समर्पित होना ही चाहिये।

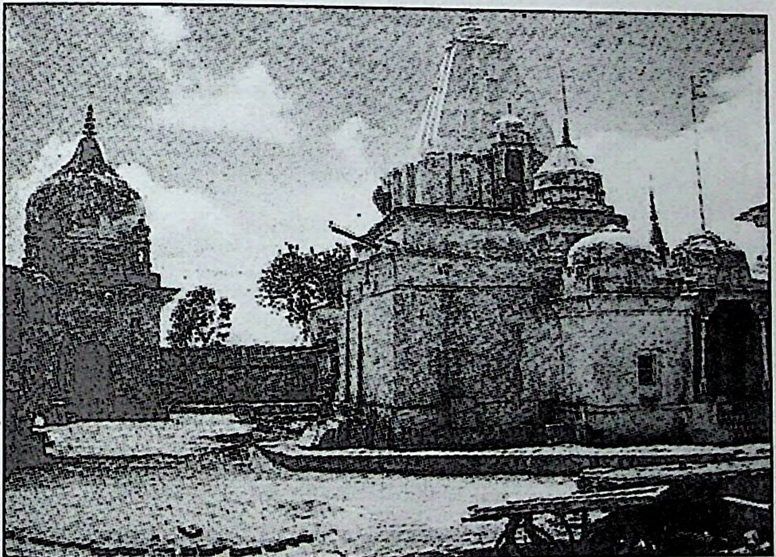

बड़ेबाबा मन्दिर का तीन मंजिला शिखर ढहाकर एक छोटासा बना दिया गया। सामने वांयें कोने में जहां रेत का ढेर देख रहे हैं, वहां कभी एक सुन्दर मन्दिर था, गिरा दिया गया। इसका कारण पूछने वाले के लिये निन्दा प्रस्ताव ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन भवनों और मन्दिरों को सुरक्षित रखने के लिये जीर्णोद्धार एक आवश्यक उपचार है, और वह जहां आवश्यक्ता हो वहां अवश्य होना चाहिये। कुण्डलपुर में भी मुझे जीर्णोद्धार पर कोई आपत्ति नहीं है। मुझे क्षेत्र प्रबंध कमेटी की मनमानी पूर्वक, जीर्णोद्धार की आड़ में, प्राचीनता को नष्ट करने की प्रवृत्ति पर आपत्ति है। मेरी आपत्ति मूलतः इन बिंदुओं पर आधारित है।

यह १९७४ का चित्र है। तब तक बड़ेबाबा के मस्तक पर यह दरार सिर्फमाथे तक बहुत बारीक सी थी। आंखों तक उसका कोई निशान नहीं था। आज वह बढ़कर कपोल तक आ गई है।

१. जीर्णोद्धार की योजना प्राचीनता की रक्षा को केन्द्र में रखकर बनानी चाहिये। जीर्ण या प्राचीनको बचाना जीर्णोद्धार है, उसे मिटाना भयंकर पाप है।

२. यहां प्रबंध कमेटी को अपनी अधिकार सीमा समझना चाहिये। प्रबंधन की सीमा से आगे जाकर श्रीक्षेत्र की परिसम्पत्तियों को गिराना-मिटाना, और क्षेत्र के प्राण कहे जाने वाले बड़ेबाबा मन्दिर जैसे अति महत्वपूर्ण मन्दिर को नष्ट करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा बड़ेबाबा को हिलाना-डुलाना या सरकाना आदि कार्य किसी भी प्रकार 'प्रबंधन' की परिभाषा में नहीं आते। इसके लिये क्षेत्र की परम्परा के अनुसार, समाज की और पुरातत्व विभाग की सहमति प्राप्त करने की आवश्यक्ता है। उसके बाद भी ऐसी दूरगामी परिणाम वाली योजनाएं पूरी दिगम्बर जैन समाज की जानकारी के लिये भी उपलब्ध कराई जानी चाहिये।

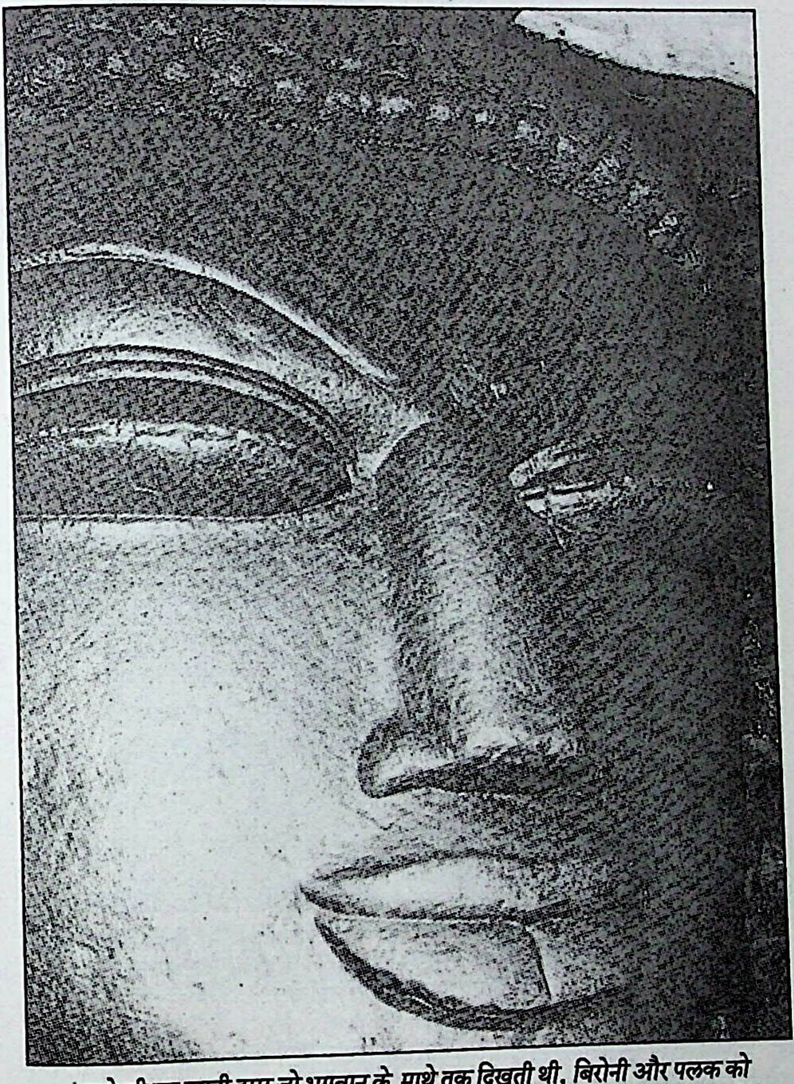

माथे की वह पुरानी दरार जो भगवान के माथे तक दिखती थी, बिरोनी और पलक को तोड़ती हुई कपोल पर नासा के बराबर तक आ पहुंची है। घुटने और पिंडली की दरारें खतरनाक हद तक बढ़ गई हैं। कब टूटेगी हमारी नींद ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. कुण्डलपुर के सभी ५८ प्राचीन मन्दिर पचासी साल पहले, सन १९१३ से भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्व के स्मारक स्वीकार करके पुरातत्व कानून के अंतर्गत संरक्षित घोषित किये गये हैं। इसलिये मन्दिरों की संरचना में फेरफार करने के पहले पूरी योजना पर विभाग की अनुमति प्राप्त करके ही कार्य किया जाना चाहिये। विभाग के पास आवश्यक और अनावश्यक, उचित और अनुचित तथा हितकर और अहितकर का निर्णय करने के लिये विशेष तकनीकी ज्ञान और अनुभव उपलब्ध होता है।

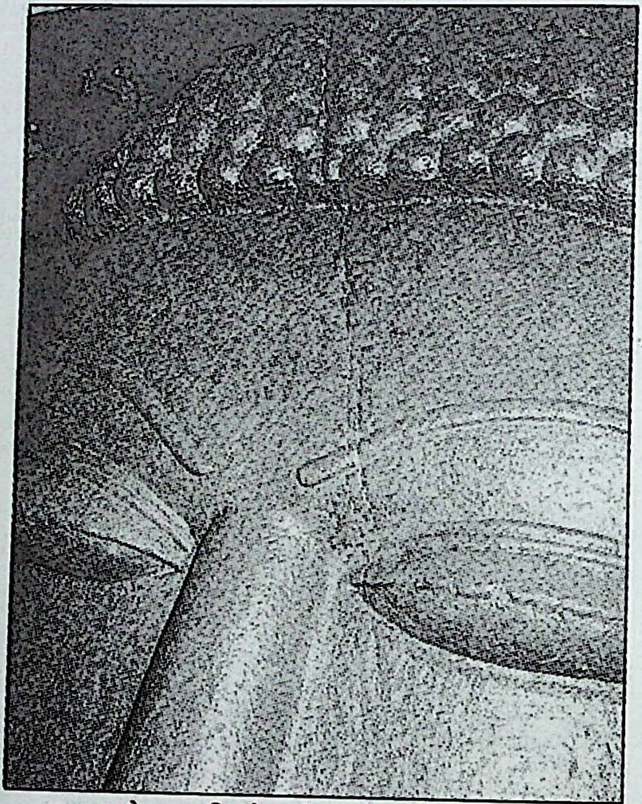

यह एक और ताजा चित्र है। बड़ेबाबा के माथे की इस घातक दरार का अध्ययन कीजिये। विशेषज्ञों को आशंका है कि उठाने पर मूर्ति बिखर सकती है। क्या हमें यह खतरा उठाना चाहिये ?

ऐसी मर्यादा पूर्वक और प्राचीनता की रक्षा के निश्छल अभिप्राय से यदि कमेटी कोई काम हाथ में लेती है तो कौन जैन होगा जो अपने तीर्थ के जीर्णोद्धार पर आपत्ति करेगा? परन्तु यदि जीर्णोद्धार की आड़ लेकर प्राचीनता के विनाश का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभियान चलाया जायेगा, एक नये मन्दिर की शोभा बढ़ाने के लिये यदि आठ-दस प्राचीन, पूजित मन्दिर गिराये जायेंगे, तो समाज के हर सदस्य को ऐसी अनिष्टकारी योजना का पूरी शक्ति के साथ विरोध करना चाहिये।

भड़क के और घरों को भी जला सकती है,
हम ऐसी दीप की बाती से होशियार रहें।

अपने पूर्वजों की हजारों साल की धरोहर को नष्ट किया जाये, पूज्य जिनायतन अकारण तोड़े-गिराये जायें, और अपन मौन देखते रहें तो हम निश्चित ही श्रावक के कर्तव्य से चूक रहे होंगे। जिन्होने इसके खिलाफ अब तक आवाज नहीं उठाई

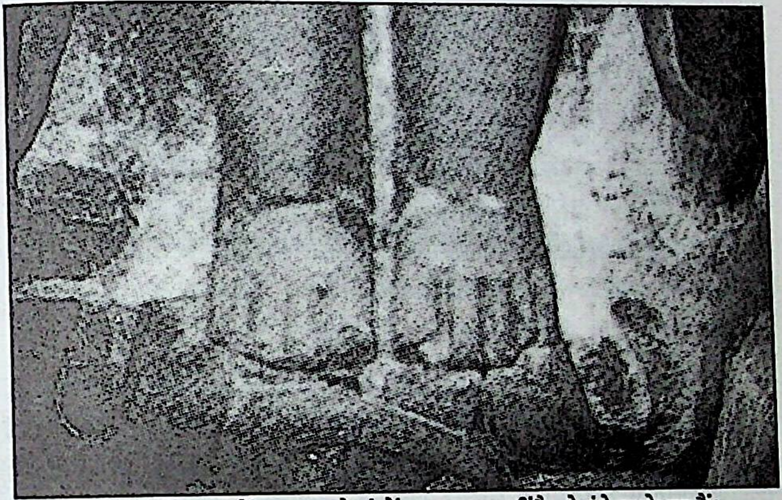

बड़ेबाबा के बगल में पारस प्रभु के पंजों पर यह दरार नहीं है, ये पंजे चटके हुए हैं।
बड़ेबाबा का पूरा समोशरण मूल मन्दिर की बनावट में कसा हुआ है।
उस व्यवस्था से छेड़छाड़ करने के अनेक दुष्परिणाम हो सकते हैं।
अपनी टेक रखने के लिये सब कुछ को दांव पर लगाने का खेल ठीक नहीं।

हो उन्हें अपने दायित्व के प्रति सचेत होकर, कुण्डलपुर के प्राचीन मन्दिरों को, और बड़ेबाबा को विनाश से बचाने के लिये सक्रिय होना चाहिये।

प्राचीनता को बरकरार रखते हुए प्राचीन भवन और शिल्प का जीर्णोद्धार आज एक विकसित विज्ञान स्वीकार कर लिया गया है। उसके मानक निर्धारित किये जा चुके हैं और विश्व विद्यालयों में उसका प्रशिक्षण होता है, उस विषय की उपाधियां मिलती हैं। इस विद्या के विशेषज्ञों का सहयोग लिये बिना ***आज जीर्णोद्धार के नाम पर जगह-जगह प्राचीन मन्दिरों और मूर्तियों से जो छेड़छाड़ की जा रही है उससे लाभ कुछ नहीं है। हानि बहुत हो रही है। हम उस हानिकर पद्धति का विरोध करते हैं।***

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुण्डलपुर के मन्दिर *आज ऐसी ही अविचारित छेड़छाड़ का शिकार हुए हैं, और अभी भी हो रहे हैं। इस ध्वंस-लीला को और कुछ भी कहें, पर इसे* **'जीर्णोद्धार' मत कहिये इससे तो जीर्णोद्धार शब्द ही बदनाम होगा।**

हम जीर्णोद्धार के विरोधी नही हैं, हम तो सदा से उसके समर्थक रहे हैं, और रहेंगे। परन्तु विशेषज्ञों के परामर्श के बिना और समाज की स्वीकृति के बिना, लुका-छिपा कर किये जाने वाले **ऐसे प्राचीनता विनाशक, अवैध अभियान को हम जीर्णोद्धार मानने से इनकार करते हैं।**

यह एक घातक परम्परा बनेगी –

वृषभाचल की शिलाओं पर से दूसरे का नाम मिटाकर अपना नाम अंकित कराने वाले चक्रवर्ती की तरह, किसी के बनवाये मन्दिरों को गिराकर किसी दूसरे दानी के नव-निर्माण की प्रथा को यदि हमने तीर्थों पर स्वीकार कर लिया तो जल्द ही कोई तीसरा साधन-सम्पन्न समूह आपके इस निर्माण को ध्वस्त करके इससे अच्छा निर्माण कराना चाहेगा, तब उसे रोकने का आपके पास क्या तर्क, क्या उपाय रहेगा ? फिर तो यह मिटाने-बनाने की स्पर्धा चालू हो जायेगी और सभी तीर्थों के भविष्य के लिये घातक परम्परा बन जायेगी। तब कौन किसे रोक सकेगा ?

क्या है जीर्णोद्धार की परिभाषा ? –

धर्मस्थल में प्राचीन मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये 'देवोत्थान ट्रस्ट' नाम से एक अलग ट्रस्ट है। वहां अब तक लगभग बीस मन्दिरों का जीर्णोद्धार किया जा चुका है। हम भी इस कार्य से जुड़े हैं। हर मामले में *पूरे कार्य का फोटो रिकार्ड तैयार किया जाता है जिससे कभी भी यह देखा जा सके कि जीर्णोद्धार के पहले उस मन्दिर की स्थिति कैसी थी और जीर्णोद्धार के द्वारा उसे कैसा रूप दिया गया।* ***यह फोटो रिकार्ड जीर्णोद्धार की अनिवार्यता मानी जाती है।***

समुद्र को पीछे धकेल दिया –

चेन्नई (मद्रास) के पास महाबलीपुरम् प्राचीन स्थान है। यहाँ अनेक मन्दिर पिछले एक हजार साल में समुद्र के गर्भ में समा गये हैं। एक मन्दिर अधूरा बचा था, पुरातत्व विभाग ने उसे उसकी हजार साल पूर्व की स्थिति में मजबूती से खड़ा कर दिया है। ***इस एक मन्दिर का भविष्य सुरक्षित करने के लिये विभाग ने वहाँ समुद्र को दो सौ मीटर पीछे ढकेलने का कौशल कर दिखाया है।***

जीर्णोद्धार के अनेक कार्य देश में चल रहे हैं। यहां ये दो उदाहरण हमने केवल जीर्णोद्धार की सही परिभाषा और पद्धति बताने के लिये यहाँ प्रस्तुत किये हैं। **जीर्णता की सार-सम्हाल का नाम जीर्णोद्धार है, प्राचीन धरोहर का विनाश किसी भी तरह जीर्णोद्धार नहीं कहा जा सकता।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या अन्य कोई विकल्प नहीं था कुण्डलपुर में ?

कुण्डलपुर की योजना को दो हिस्सों में बनाया जा सकता था। अधिक लोगों को एक साथ बिठाने के लिये विशाल मन्दिर कहीं भी बना कर उस समस्या का समाधान ढूंढ़ा जा सकता था। इसके लिये किसी प्राचीन मन्दिर को गिराने की

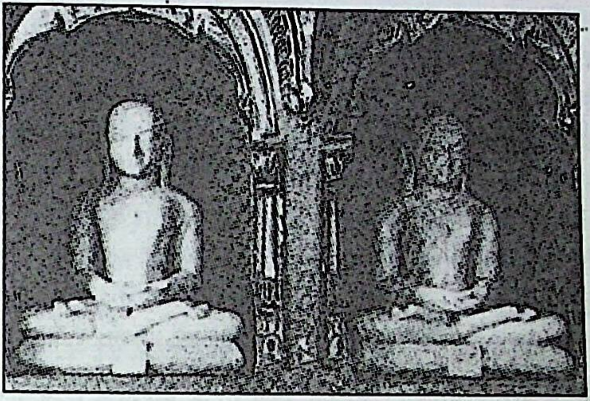

बड़ेबाबा मन्दिर के मण्डप में जुगल जोड़ी की यह दर्शनीय वेदी नष्ट करके किस को क्या मिला ? क्या आज बना सकते हैं आप ?

आवश्यक्ता नहीं थी। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही दिल्ली में कुतुब के पास लाला प्रेमचन्दजी ने 'अहिंसा-स्थली' नाम से जो सुन्दर निर्माण कराया, और जैसी सुन्दर विशाल प्रतिमा बिठाई, वैसा ही कोई काम कुण्डलपुर में, प्राचीन मन्दिरों का विनाश बचाते हुए कराइये, वही शोभा देगा और वही उचित होगा।

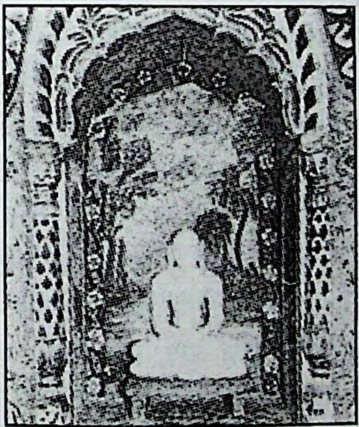

बड़ेबाबा मन्दिर के मण्डप में दर्शकों का मन मोह लेने वाली इस सुन्दर वेदी ने किस का क्या बिगाड़ा था ? क्यों तोड़ दी गई ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहां बनना चाहिये बड़े विशाल हाल ? –

जिन पर्वतों पर हमारे पूर्वाचार्यों ने और विशेषकर मोक्षगामी महापुरुषों ने साधना की है, प्राय: वे ही हमारे अतिशयक्षेत्र या सिद्धक्षेत्र माने गये हैं। इसीलिये हम अपने पर्वतों पर बहुत विनय के साथ पांव रखते हैं। इन पर्वतों पर यात्री मल-मूत्र क्षेपण भी नहीं करना चाहता। ऐसी मान्यता को देखते हुए पूज्य पर्वतों के ऊपर बड़ी संख्या में समुदाय को बिठाने के लिये बड़े स्थान बनाने की योजना निर्दोष योजना नहीं कही जा सकती। बड़े समुदाय को अधिक समय तक बिठाने की सुविधा, और वैसे कार्यक्रम, पर्वत के नीचे ही सब जगह उचित माने गये हैं। इसी में पर्वत की पवित्रता बनी रह सकती है। **सम्मेदशिखर, गिरनार, पावागढ़, तारंगा, मांगीतुंगी, द्रोणगिरि और मुक्तागिरि आदि तीर्थों पर कहीं भी पूज्य पर्वतों पर ऐसी योजनाएं न तो प्राचीन काल में बनीं और न आज ही बनाई जा रही हैं।**

यात्रियों की सुविधा के हिसाब से भी सामुदायिक बड़े कार्यक्रम नीचे ही उपयुक्त होते हैं, ऊपर पर्वत पर नहीं। मध्यान्ह के कार्यक्रम में यात्री निश्चिन्त होकर शाम के भोजन के समय तक सभा में उपस्थित रहता है और पांच मिनट में ही, कुछ कदम की दूरी पर भोजनादि की सुविधा प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार शारीरिक बाधाओं के लिये भी उसे कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती। प्रस्थान के अवसर पर वह बस का हार्न बजने तक कार्यक्रम का लाभ उठाता है और बिना चूके अपने वाहन पर पहुंच जाता है। धर्मशाला के आसपास कार्यक्रम होता है तो बालक और वृद्ध, स्वस्थ्य और बीमार, सभी बिना तकलीफ उठाये, दोपहर से शाम तक, और देर रात तक भी, उसका भरपूर लाभ उठा सकते हैं, किन्तु, पर्वतों पर विशाल स्थान बनाकर भी ये सुविधाएं यात्री को नहीं दी जा सकतीं।

इस प्रकार की सारी बातों पर विचार करके ही हमारे पूर्वजों ने कहीं भी पर्वतों पर कोई विशाल स्थान जनता के लिये नहीं बनवाये। वे सर्वत्र नीचे ही बने हैं। स्वयं कुण्डलपुर में भी हमारे पुरखों ने वर्द्धमानसागर के तट पर ही बड़े-बड़े आंगन बनवाये। हम सबने प्रवचनहाल के लिये भी ऐसा ही स्थान पसन्द किया।

श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर में कमेटी के पास नीचे सैकड़ों एकड़ भूमि का स्वामित्व है। उस पर कमेटी का निर्विवाद कब्जा भी है। श्रीक्षेत्र की आवश्यक्ता के अनुसार जहां चाहें वहां, जितना मन हो उतना बड़ा स्थान बनाया जा सकता है। परन्तु ऐसे एक मन्दिर के निर्माण के लिये आठ-दस प्राचीन, पूजित और संरक्षित मन्दिरों का विनाश तथा बड़ेबाबा के लिये खतरा उठाना, प्रकार किसी समझ में नहीं आता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक नया मन्दिर बनाने के लिये दूसरे अनेक प्राचीन, विशाल, सुन्दर और पूजित मन्दिर गिराने की आवश्यक्ता क्यों पड़ी ? क्या इसके लिये कोई दूसरा विकल्प नहीं था ? इन प्रश्नों का उत्तर कमेटी के हर सदस्य को एक दिन देना ही पड़ेगा। इस पर्याय में नहीं दिया तो अगले जन्मों में कोई उससे बच नहीं सकेगा।

तमाम उम्र जो खटकेगा वो सवाल है ये,
जो टाल सकते हो इसको तो टालकर देखो।

दूसरी योजना प्राचीन मन्दिरों के रख-रखाव और जीर्णोद्धार के लिये अलग बनाई जानी चाहिये थी। ***इसमें किसी मन्दिर को गिराने अथवा किसी प्रतिष्ठित मूर्ति को कहीं स्थानान्तरित करने की आवश्यक्ता ही नहीं पड़ती। संरक्षण विशेषज्ञों के सहयोग से जीर्णोद्धार और रख-रखाव का काम वैज्ञानिक पद्धति से किया जाना चाहिये था। इस शताब्दी में यह कमेटी यदि ऐसे उपाय नहीं भी करती तो भी वे मन्दिर अभी सैकड़ों सालों तक हम से कुछ मांगते नहीं थे। वे तो वैसे ही अपने बल पर खड़े रहने वाले थे।***

कुण्डलपुर का पूरा पर्वत और उस पर बने सभी ५८ प्राचीन मन्दिर पुरातत्व कानून के अंतर्गत 'राष्ट्रीय महत्व के मन्दिर' मानकर बहुत पहले, सन १९१३ से ही संरक्षित घोषित किये जा चुके हैं, इसलिये कानून का सम्मान करते हुए हमें पुरातत्व विभाग को विश्वास में लेकर ही काम करना चाहिये था। कानून की अवहेलना समाज के लिये किसी भी प्रकार उचित नहीं मानी जा सकती।

स्पष्ट है कि श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर में ऐसी कोई समस्या है ही नहीं जिसके समाधान के लिये बड़ेबाबा के परिसर को उजाड़ना आवश्यक हो गया हो। इतने भव्य और सुदृढ़ मन्दिर के साथ आठ-नौ दूसरे पूजित मन्दिरों को गिराये बिना काम न चल सकता हो। जरूरी नहीं कि जो उपाय आप में से किसी एक की कल्पना में आया है वह सही हो, और उस समस्या का वही एकमात्र उपाय हो। ***यह भी तो हो सकता है कि सिंहद्वार के निर्णय की तरह आपका यह निर्णय भी किसी गलत गणना पर आधारित हो, या उसका कोई अन्य सुगम विकल्प निकाला जा सकता हो। इसलिये एक बार विचार कर लेने में हानि क्या है ?***

छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान के लिये अपने प्राचीन तीर्थो-मन्दिरों और मूर्तियों के साथ, ऐसी विनाशक मनमानी, जैसी कुण्डलपुर की कमेटी ने वहां पर्वत पर की है, किसी भी प्रकार बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिये।

यह विकास का सूचक नहीं, विनाश का श्रीगणेश है,. इस बात को समय रहते गम्भीरता से समझा जाना चाहिये। इस आधुनिक विकास के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम पर ठगाये जाकर, पिछले दस-बारह वर्षों में अनेक क्षेत्रों पर, बहुत कुछ खो चुका है दिगम्बर जैन समाज।

अर्चना, पूजा और भक्ति का गणित क्या है ? जहां आपके आराध्य विराजमान हैं वहां उपस्थित होकर आप आराधना करेंगे या जहां आप सुभीते से बैठना चाहेंगे वहां अपने आराध्य को ले जाने का उपक्रम करेंगे ? अवतारों की बात मैं नहीं करना चाहता, पर जहां तक मूर्तिमंत भगवान का प्रश्न है, सदा भक्त ही भगवान के सामने जाता है। अपने आराम के लिये ऐसे भगवान का आसन नहीं हिलाया जाता।

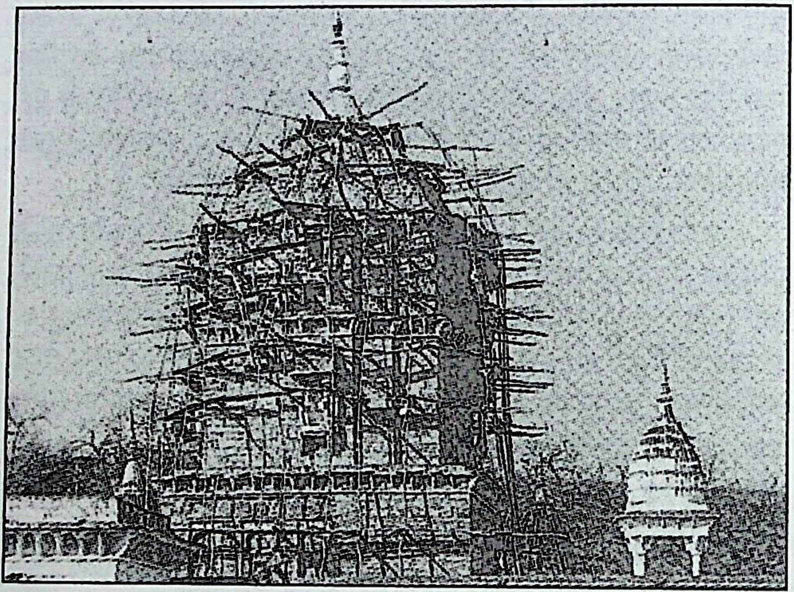

१९७९ में साहू परिवार के सहयोग से शिखर की मरम्मत कराई गई। उस समय मन्दिर का प्लास्टर उतारने पर इन्जीनियर का यह मंतव्य सिद्ध हो गया कि यह शिखर पत्थरों की चिनाई से निर्मित है और सैकड़ों साल तक बिना किसी मरम्मत के खड़ा रह सकता है। इस मजबूत शिखर को गिराकर श्रीक्षेत्र की गरिमा को खंडित किया गया है।

बड़ेबाबा को उनके सैकड़ों साल के प्रतिष्ठित, अडिग आसन से उतार कर इधर-उधर करने की योजना, बहुत जोखिम भरी और एकदम अनावश्यक योजना है। यह जोखिम ऐसी नाजुक दशा में और बढ़ जाती है जब हम पाते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में बड़ेबाबा की प्रतिमा की पुरानी दरारें बहुत बढ़ गई हैं और कुछ नई दरारें भी आई हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि उठाने का प्रयत्न किया गया तो बड़ेबाबा की मूर्ति के बिखर जाने की बलवती आशंका है, ऐसी हालत में **वह योजना खतरनाक भी साबित हो सकती है।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य तीर्थों पर क्या कर रहे हैं लोग ? –

श्रीमहावीरजी में भगवान की अतिशयकारी मूर्ति के सामने दस व्यक्तियों के भी खड़े होने का स्थान नहीं है और प्रतिदिन वहां हजारों लोग दर्शन करते हैं। अभी फरवरी ९९ में वहां सहस्राब्दी महोत्सव के अवसर पर कई दिनों तक रोज हजारों लोगों ने शान्ति पूर्वक भगवान का अभिषेक भी किया। कमेटी के यशस्वी अध्यक्ष, अवकाश प्राप्त आइ.ए.एस., श्री एन.के. सेठी ने कई दिनों तक चार-पांच घण्टे सामने खड़े रहकर अनुशासन का पालन कराया और किसी यात्री को शिकायत का मौका कोई नहीं दिया। ***वहां तो कभी भगवान को स्थानान्तरित करके बड़े हाल में ले जाने की कल्पना किसी ने नहीं की। न कोई करेगा, क्योंकि गर्भालय का अपना महत्व होता है और प्राचीन धरोहर की रक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता।***

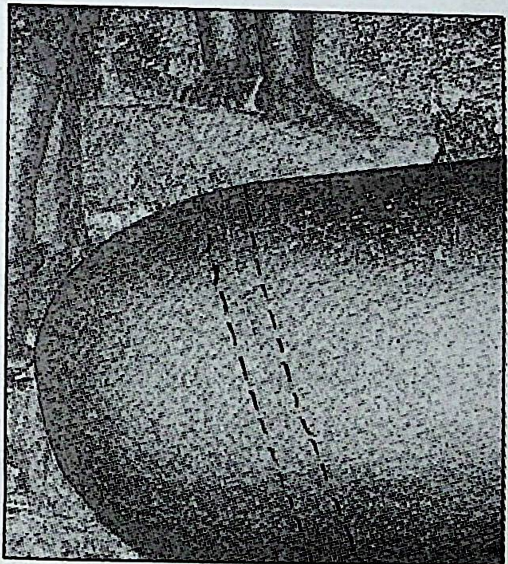

बड़ेबाबा के दाहिने घुटने की यह दरार पिछले कुछ वर्षों में बढ़ी है और चौड़ी हो रही है। यह किसी पर दोषारोपण नहीं, एक तथ्य है। सक्षम विशेषज्ञों की राय लेकर इसका कोई उपाय कीजिये।

शायद बड़ेबाबा को सरकाने से ज़ादा जरूरी यह काम है।

जयपुर के पास मौजमाबाद के तलघर में अनेक विशाल और अतिशयकारी मूर्तियां विराजित हैं। वहीं उनकी पूजा-अर्चना होती है। केशोराय पाटन के भोंयरे में एक साथ अधिक आदमी नहीं जा पाते, पर इन स्थानों को मिटाकर भगवान को ऊपर लाने की बात बीसवीं सदी में तो किसी ने नहीं की। अब इक्कीसवीं सदी में क्या होगा सो भगवान जानें।

ऐसे अनेक तीर्थ हैं इस देश में जहां स्थान अधिक नहीं है पर भक्तों को उससे क्या अंतर पड़ता है ? वे तो अपनी भक्ति के अनुसार आनन्द और पुण्य का लाभ ले ही लेते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

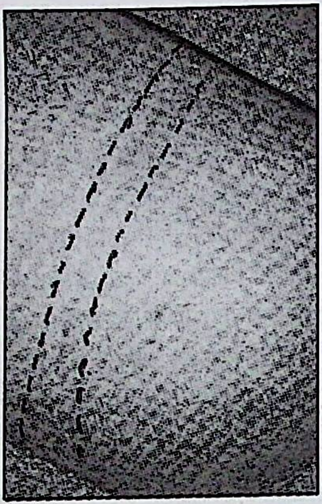

दाहिने घुटने की उसी दरार को दूसरे कोण से देखने पर उसका विस्तार और ज्यादा स्पष्ट दिखाई देता है।

विश्व प्रसिद्ध तीर्थ श्रवणबेलगोल में संसार की सबसे बड़ी दिगम्बर मूर्ति एक आंगन में चारों ओर मोटी दहलानों से घिरी हुई है। मूर्ति की अपनी ऊंचाई से आधा भी स्थान उनके आंगन में नहीं है। प्रति वर्ष लाखों-लाख लोग उनके दर्शन करते हैं। महामस्तकाभिषेक के अवसर पर तो कई दिनों तक रोज यह संख्या दो-तीन लाख तक पहुंच जाती है। पर वहां आज तक उस आंगन की बात वहां किसी ने कभी नहीं उठाई।

गोमटेश्वर शायद इसलिये सुरक्षित हैं कि वहां की कमेटी जैन मठ के भट्टारक स्वामीजी के अनुशासन में चलती है। पूरी कमेटी उन्हीं से सत्परामर्श के अनुसार निर्णय लेती है और तद्नुकूल काम करती है।

समाज सेवा में उतरने के लिये आत्म-अनुशासन आवश्यक गुण है। कुण्डलपुर के मन्दिरों का विनाश कार्यकर्ताओं में इसी अनुशासन के अभाव का दुष्परिणाम है। अपने दूषित अभिप्राय साधने के लिये वे, श्रीक्षेत्र के साथ उचित और अनुचित सब कुछ करने को तैयार दिखाई देते हैं। उन्होने न तो इतिहास का आदर किया, न परम्पराओं का सम्मान किया और न ही कानून की मर्यादा रखी।

जिस समाज ने उनकी निष्ठा पर भरोसा करके उन्हें उस सम्मानपूर्ण पद के लिये चुना था, समाज की उन भावनाओं का भी उन भाइयों ने अनादर किया। ***उन्होने समाज के साथ ऐसा धोखा किया कि पीढ़ियों के भक्तों को, अपने पूर्वजों द्वारा बनवाये मन्दिरों के गिराये जानेके पूर्व, मुंह खोलने का भी अवसर न मिला और वे उन देवालयों को अंतिम बार जी भर कर देख भी न सके।*** *तोड़ने-गिराने का काम बड़ी जल्दबाजी और आपाधापी में कराया गया। मन्दिरों की मूर्तियां भी मजदूरों से उठवाई गईं। उनकी पवित्रता का भी ध्यान नहीं रखा गया।*

कुण्डलपुर में यह जो भी हो रहा है, उसे किसी भी तरह जीर्णोद्धार नहीं कहा जा सकता। क्षेत्र की प्राचीन धरोहर के इस 'विनाश-यज्ञ' को एक शब्द के माध्यम से कहा जाये तो वह शब्द होगा 'दुर्भाग्य'।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दिर, मन्दिर हैं : सिर्फ इमारतें नहीं

शास्त्रों में नव-देवता की गणना करते समय जिनालय को भी एक पूज्य देवता माना गया है। पंच परमेष्ठी के साथ जिन मन्दिर, जिन प्रतिमा, जिन धर्म और जिनवाणी को मिलाकर नव देवता समूह बनता है। प्रतिष्ठा पाठों में ऐसी कई गाथायें और श्लोक मिलते हैं -

अरिहन्त-सिद्ध-साधु, त्रितयं जिन-धर्म-बिम्ब-वचनानि,
जिननिलयान् नवदेवान् संस्थापये भावतो नित्यम् ।

इस प्रकार हर जिनालय अपने आप में एक स्वतंत्र और पूज्य आयतन होता है। वह मात्र कोई भवन नहीं है कि हम सारे गुण-दोषों पर विचार किये बिना, अपनी अनुभव हीनता और जिद पर ही उसे गिराते-तोड़ते चले जायें।

प्रतिष्ठा शास्त्रों में तो जिनालयके अभिषेक तक का विधान है। एक जगह हमने स्वयं जिनालय का अभिषेक होते देखा है। प्रतिष्ठाचार्य ने खुली जगह पर एक पात्र में ऐसे कोण से दर्पण स्थापित किया जिसमें सामने जिनालय प्रतिबिम्बित हो रहा था। फिर जिनालय अर्चना के उच्चारण के साथ उस दर्पण का अभिषेक किया गया। जैन उपासना पद्धति में ऐसी आराध्य है मन्दिर की अवधारणा। **हमारे पुरखे जिनको पूजित बताकर, देव की श्रेणी में गिनाकर हमें सोंप गये, उन सुन्दर, भव्य मन्दिरों को जड़-मूल से मिटाते हुए आपको इतना भी दर्द नहीं हुआ जितना अपना नाखून टूटने पर होता है ? कमेटी के इस हठाग्रह और इस क्रूरता का जैनों के इतिहास में अब तक कोई दूसरा उदाहरण नहीं था।** अब यह कोई नई जहरीली हवा चल निकली है कि तरह तरह के बहाने बनाकर, सैकड़ों साल से पूजित अच्छे-भले मन्दिरों को तुड़वाकर उन स्थानों पर नवीन निर्माण कराये जा रहे हैं। नव-निर्माण उचित हो सकते हैं, पर यदि प्राचीनता के विनाशकी इस प्रवृत्ति पर रोक नहीं लगी तो देशमें प्राचीन मन्दिरोंके दर्शन दुर्लभ हो जायेंगे।

कितने महत्वपूर्ण हैं पुरावशेष ? -

अपने गौरवमय इतिहास की सिद्धि में अपने प्राचीन मन्दिरों और मूर्तियों तथा शिल्पावशेषों का बहुत बड़ा योगदान होता है। अभी पिछले वर्ष ही पुरातत्व विभाग ने फतेहपुर सीकरी में एक टीले का उत्खनन करके पच्चीस-तीस जैन मूर्तियां प्राप्त की हैं। उनके अवलोकन के लिये मुझे अभी जनवरी में ही वहां बुलाया गया था। **अभी तक इतिहास की कक्षा में जो यह पढ़ाया जाता था कि सीकरी के जंगल को मंगल करके मुगल शहंशाहों ने वहां अपनी राजधानी बसाई, वहां अब यह पढ़ाना होगा कि प्राचीन जैन मन्दिरों को और स्थापत्य को नष्ट करके मुगल शासकों द्वारा फतेहपुर सीकरी की नींव रखी गई।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी प्रकार प्रसिद्ध मौर्य वंश की परम्परा में सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के उपरान्त महाराजाधिराज रामगुप्त का अस्तित्व सिद्ध करने वाला कोई प्रमाण पूरे देश में अभिलेखों या सिक्कों में उपलब्ध नहीं हुआ था। रामगुप्त ने कभी राज्य किया या नहीं, इसे इतिहास की समस्या के रूप में माना जाता था। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्व और इतिहास के विद्वान स्व. कृष्णदत्त वाजपेयी ने विदिशा के उत्खनन में दो जैन मूर्तियां ढूंढ़ निकालीं जिनपर राजाधिराज रामगुप्त की प्रशस्ति अंकित है। इससे इतिहास जगत को इस समस्या का समाधान मिल गया। आज पूरे देश में रामगुप्त को शासक रूप में स्वीकार कराने वाले वे दो मूर्तिलेख अकेले प्रमाण हैं।

इस प्रकार जैन संस्कृति को गौरवान्वित करने वाला यह एक स्थापित तथ्य है कि जैनों की प्राचीन धरोहर ने प्राचीन भारतीय इतिहास की बहुत सी गुत्थियां सुलझाई हैं। कहीं मूर्तियों के माध्यम से और कहीं प्राचीन मन्दिरों तथा शिलालेखों के माध्यम से यह उपलब्धि इस देश को हुई है। जैनों से अधिक अजैन विद्वानों ने बार बार इस तथ्य की सराहना की है। जैन समाज को अपनी प्राचीन धरोहर के इस राष्ट्रीय महत्व को समझना चाहिये और किसी भी पुराने मन्दिर आदि को गिराने - मिटाने या सरकाने के पहले सावधानी पूर्वक सोच-विचार कर लेना लेना चाहिये।

कुण्डलपुर कमेटी के हमारे भाइयों को सोचना चाहिये कि यदि शास्त्र के इस कथन में कोई सचाई है कि मन्दिर अपने आप में पूज्य आयतन हैं, तब यह चार-पांच पूजित मन्दिरों को गिराने का कितना भीषण पाप आपसे बन गया है? ***यह बात बड़ी है, बातों में न उड़ायें, कुछ और गौर इस पर हुजूर फरमाएं।*** यह भी शास्त्र की ही बात है कि अन्य स्थानों पर किया गया पाप धर्मक्षेत्र में प्रायश्चित करने पर नष्ट हो जाता है, पर धर्मक्षेत्र में किया गया पाप वज्रलेप होकर बंधता है। उस कर्म को काटना आसान नहीं होता। -

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं धर्म क्षेत्रे विनश्यति,

धर्म क्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।

आप कभी इस कसौटी पर अपने आपको कसें कि आपने जैन संस्कृति के अनेक अनुपम प्रतीकों का जिस प्रकार विनाश किया है, यह विध्वंस तो बहुत बड़ा पाप, बहुत बड़ी हिंसा हुई न? फिर ऐसा क्यों कर रहे हैं आप?

कुण्डलपुर में जो कुछ भी नया बनाने की आपकी योजना रही हो, पर जरा छाती पर हाथ रखकर पूछिये अपने आप से कि क्या उसके लिये इन निर्दोष मन्दिरों को मिटाना अनिवार्य हो गया था? क्या इसके अलावा और कोई विकल्प आपके पास नहीं था? और क्या आपका नव-निर्माण इस स्थिति तक बनकर तैयार हो गया था कि बड़ेबाबा के शिखर सहित इन सभी मन्दिरों को अपने काम में बाधक मान कर इन्हें मार्ग से हटाने का समय आ गया था?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई, ये पूज्य मन्दिर समाज की और राष्ट्र की धरोहर हैं। इनकी हितरक्षा का प्रबंध करते रहने के लिये, आप पर विश्वास करके आपको उस सम्मानपूर्ण पद पर चुना गया था। इन मन्दिरों को रहने देना है या मिटा देना है, इसका निर्णय करने का अधिकार तो समाज ने आपको दिया नहीं। यह कैसा प्रबंध किया आपने कि उन्हें मिटा ही दिया ? रक्षक बन कर भक्षक का काम कर डाला ? यह आपकी अनधिकृत चेष्टा भर नहीं, अपने धर्मायतनों के साथ अनाचार भी है। आपका यह कृत्य अमानत में खयानत से किसी प्रकार कम नहीं है ।

शासन देवताओं ने प्रतिकार किया है–

बड़ेबाबा जैसी अतिशयकारी प्रतिमाओं के दर्शन के लिये इस काल में भी शासन देवताओं का आवागमन रहता है। कुण्डलपुर में कई लोगों ने, कई बार इनकी उपस्थिति का अनुभव किया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब बड़ेबाबा पर उपसर्ग हुए हैं, तब तब हर बार क्षेत्र की अलौकिक दिव्य शक्तियों ने अपना विरोध अवश्य व्यक्त किया है।

वह सांप क्या कह गया, सुनेंगे ?

बड़ेबाबा मन्दिर में चमेली के आस पास वह पुराना सांप रहता था जिसने मन्दिर में कभी किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाई। आपको याद तो होगा, जब आपने दैत्याकार मशीनों की मदद से पर्वत के पर्यावरण का विनाश प्रारम्भ किया, तब **वह सांप श्रीक्षेत्र पर इस उपसर्ग को बर्दाश्त नहीं कर पाया। उसने आपके मार्ग में आकर स्वयं अपना बलिदान दे दिया और इस प्रकार उस सांप के रूप में श्रीक्षेत्र की दिव्य शक्तियों ने अपना विरोध स्पष्ट कर दिया। इसे सुनें ।**

मधुमक्खियां भी पीछे नहीं रहीं –

पर्वत पर नवीन जिनालय के शिलान्यास के दिन की वह घटना भले ही आपने प्रचारित नहीं होने दी, पर सभी को मालूम है कि लौटते समय मधुमक्खियों ने भी आप लोगों पर हमला किया था। **इन शक्तियों की आवाज तेज नहीं होती, उनके परिणाम दूरगामी और सुनिश्चित होते हैं। उनके संकेतों को समझने के लिये आंतरिक निर्मलता आवश्यक होती है। आज वह मार्दव आपके पास नहीं है।**

आज अपने हठाग्रह के कारण भले ही आप उस आवाज को अनसुना कर दें, परन्तु यह समझा जाना चाहिये कि यह जो अनैतिक और अवांछित आप लोग पर्वत पर कर रहे हैं, वह बड़ेबाबा पर उपसर्ग की श्रेणी में रखकर श्रीक्षेत्र की दैवी शक्तियों ने दो-दो बार अपनी नाराजी व्यक्त कर दी है। **आज भले ही मान कषाय के कारण कुछ लोग उस आवाज को अनसुना कर दें, परन्तु उसका फल, आज नहीं तो कल, भोगना ही होगा। कर्मों के खाते में भी वह जायेगा। उस कर्म-विपाक के फल से न कोई बच सकेगा और न किसी को बचा सकेगा।**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह उपसर्ग भी निवारित होगा

बड़ेबाबा पर उपसर्ग कोई नई बात नहीं है। यह प्राकृतिक नियम है कि जहां जितना अधिक प्रभाव होता है, वहां उतने ही अधिक उपद्रव भी होते रहते हैं। सूर्य की प्रखरता पर भी ग्रहण लगता है। चन्द्रमा जब परिपूर्ण होकर उदित होता है तब उस पर भी एक दिन ग्रहण लगता है। बड़ेबाबा की महिमा भी तो सूर्य और चन्द्रमा से कम नहीं है। इसीलिये उन पर उपसर्ग होते रहे हैं, और आज भी हो रहे हैं। पहले भी सारे उपसर्ग सहजता से टलते आये हैं, और हमें पूरा विश्वास है कि यह उपसर्ग भी सहज ही निवारित होगा।

बड़ेबाबा बहुत बड़े 'उपसर्ग-विजेता' हैं। विधर्मियों के द्वारा बार बार उन पर उपसर्ग किये गये हैं और क्षेत्र-रक्षक अलौकिक शक्तियों के द्वारा उन सबका निवारण होता रहा है। यह काल़-दोष का परिणाम है कि आज हमारे ही कुछ साधर्मी भाईयों के द्वारा बड़ेबाबा पर उपसर्ग आया है। हमें आशा भर नहीं, पूरा विश्वास है कि उपसर्ग-विजेता बड़ेबाबा की महिमा से, अल्प काल में ही, इस उपसर्ग का भी निवारण हो जायेगा। जो तीन लोक के प्राणियों की रक्षा में समर्थ हैं, उनका तीर्थ सदा सुरक्षित रहेगा।

उपसर्ग से ही शुरू हुआ था बड़ेबाबा का इतिहास –

कुण्डलपुर की यह प्रसिद्ध कथा है कि एक बार मुगल शासक इस मूर्ति की प्रसिद्धि सुनकर लुब्ध हुए और अपनी सभ्यता के अनुरूप एक दिन उन्होने मूर्ति को खण्डित करने के विचार से कुण्डलपुर पर धावा बोल दिया। कहा जाता है कि हथौड़े के प्रथम प्रहार से ही मूर्ति की कनिष्ठा उंगली में से दूध की धार बह निकली और मधु-मक्खियों ने आतताइयों को घेर लिया जिससे उन्हें प्राण बचाकर असफल लौटना पड़ा। तब से उपसर्ग-विजेता के रूप में बड़े बाबा की कीर्ति दूर-दूर तक और फैलती चली गई। आज भी वही कीर्ति चहुंओर फैल रही है।

आप जानते ही हैं कि बड़ेबाबा की प्रतिमा पर कोई अभिलेख नहीं है। उनका प्राचीनतम उपलब्ध इतिहास उस मुगल बादशाह के हमले की किंवदंती से ही प्रारम्भ होता है जिसे यहां से विफल होकर लौटना पड़ा था। हम तो बचपन से वह कथा सुनते आये हैं, और हमारे पूर्वज भी यही बताते आये हैं कि - बहुत पुराने जमाने से यह कहानी चली आ रही है। हमने पीढ़ियों से प्राप्त उस प्रेरक घटना को अपने छन्दों में बांधा था जो हमारी पुस्तक में १९४९ से छप रही है। आज हम आपके लिये उस कविता को यहां भी प्रस्तुत करना चाहते हैं -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ति-भंजकों का प्रहार

लेखनी सकुचती है सहसा अपना इतिहास बताने में,
अपने अपमानों की गाथा लिख-लिख कर तुम्हें सुनाने में।
अपना अपमान ? अरे हॉं, हॉं, अपना भीषण अपमान हुआ,
वह भी दिन था, अपने घर में दुश्मन ही जब मेहमान हुआ।

जब इसी सुनहरी धरती पर मुगलों का एक पड़ाव पड़ा,
वह मूर्ति-भंजकों का पड़ाव, संस्कृति पर गहरा घाव पड़ा।
वह मूर्ति विनाशक, कला शत्रु, जो मन्दिर तोड़ा करता था,
भारत की संस्कृति की कलियां जो नित्य मरोड़ा करता था।

कुछ मुसाहिबों को साथ लिये बैठा था खेमे के अन्दर,
चर्चा थी यही कि दो दिन से देखो न मिला कोई मन्दिर।
मुझको न मिलें मन्दिर जब तक कुछ-फजलो-करम नहीं होता,
दो बुत न तोड़ लूं मैं जब तक, तो खाना हजम नहीं होता।

बस इसी बीच उत्तर पथ से अश्वारोही सैनिक आया,
औ' बादशाह तक यह संदेश खादिम ने फौरन पहुंचाया।
'खिदमत में हाजिर है शकूर' उसका कम्पित सा स्वर डोला,
आकर शकूर रू-ब-रू तुरत लम्बी सलाम देकर बोला।

हे जांपनाह, खिदमत में यह बन्दा करता है एक अर्ज,
जो अभी करिश्मा देखा है उसको कह देना एक फर्ज ।
बस थोड़ी दूर पहाड़ी पर हरियाली रौनक लाई है,
अपनी ही कारगुजारी पर कुदरत जैसे मुस्काई है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खिल रहे अजब रंगीन फूल, बेलें छाईं इठलाती सीं,
पत्तों के परदों में गुंचें शर्मिन्दा सिमटी जाती सीं।
लगता है जैसे शहंशाह, जंगल में आई हो बहार,
जड़ से लेकर पत्ते-पत्ते तक हर जा छाई हो बहार।

औ' उसी पहाड़ी के करीब पत्थर का बुत है खड़ा एक,
जैसे कि चांद का ही टुकड़ा धरती पर हो गिर-पड़ा एक।
लगता है चांदी की धरती पर पच्चीकारी हो, मीना हो,
या कुदरत की पेशानी पर खुबसूरत एक नगीना हो।

लगता है जैसे शहंशाह, जंगल में आई हो बहार,
जड़ से लेकर पत्ते-पत्ते तक हर जा छाई हो बहार।
बैठा सा वह बुत, मुझे यही बतलाया यह पदमासन है,
फिर भी इस आसन से ऊंचा उस बुतका अच्छा आसन है।

ऐसी न खुदाई देखी है, देखे तो हैं दैरो-काबा,
जो उस बुत में देखी जिसको कहते थे लोग **'बड़ेबाबा'**।
सुनकर शकूर से यह संदेश, गुस्से से बोला शहंशाह,
खामोश अरे ओ बदगुमान, तू भटक गया है कहीं राह।

रू-ब-रू हमारे ही काफिर की करने चला बड़ाई है,
मालुम होता है बदनसीब, तेरी शामत ही आई है।
प्यादे पर गुस्सा जाहिर कर, सालार जंग को बुलवाया,
फरमान कूच करने का तब यों बादशाह ने फरमाया -

'देखो करीम, बस इसी वक्त उस तरफ हमें जाना होगा,
कुछ नही, एक लम्हे भर में, उस बुत को बिखराना होगा।'
उम्मीद अभी भी थी, दिल की हसरत न अभी बरबाद हुई,
हम चाह रहे थे जो कल से, पूरी वह आज मुराद हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टुकड़े टुकड़े कर देगा यह फौलादी लोहा मतवाला,
देखेंगे कैसा बुत है वह, हम से ऊंचे आसन वाला।
काफिर के बुत के टुकड़ों पर, सागरे सबाब बहायेंगे,
यह जश्न मनायेंगे पहले, खानां फिर पीछे खायेंगे।

दक्षिण पथ से कुछ धूल उठी, घोड़ों की टाप सुनाई दी,
फिर मूर्ति-भंजकों की टुकड़ी, टीले के पास दिखाई दी।
लम्हे भर में कुछ मुगल वहां आकर प्रतिमा पर टूट पड़े,
घबराये डरे हुए दर्शक विस्मित होकर रह गये खड़े।

सबसे आगे वह मुगल शाह कर में टांकी लेकर आया,
पर जाने क्योंकर अकस्मात उसका तन औ' मन थर्राया।
वह वीतराग छवि निर्निमेष अब भी वैसी मुस्काती सी,
थी शान्त मौन, पर लगती थी उसको सन्देश सुनाती सी।

सुन पड़ा शाह के कानों में 'मिट्टी के पुतले सोच जरा,
सल्तनत और सारा गरूर, यह रह जायेगा यहीं धरा।'
जीवन की धारा में अब भी तू परिवर्तन ला सकता है,
अब भी मौका है अरे मूर्ख, तू मानव कहला सकता है।

सुनकर चौंका तो शहंशाह, मस्तक भन्नाया सा सारा,
अब तक की करतूतों पर उसके दिल ने उसको ही धिक्कारा।
यह भ्रम था, अथवा सपना था, या मेरी ही मति भूली थी,
वह बुत कुछ बोला नहीं मगर यह सदा 'गैर मामूली' थी।

यों बादशाह का भूतकाल, उसकी नजरों में झूल गया
क्षण भर को विस्मृत सा होकर, वह वर्तमान को भूल गया।
कुछ ऐसा लगा कि अंधकार में अब तक भटक रहा था वह,
यों राह सामने थी लेकिन फिर भी कुछ अटक रहा था वह।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुनियां ही देखी थी अपना मन नहीं टटोला था अब तक,
या शहंशाह के भीतर का इंसान न बोला था अब तक।
पत्थर के दिल का बादशाह, पत्थर के बुत से हार गया,
यूं लगा इबादत की खातिर, मिल गया खुदा इस बार नया।

(जितने मठ मन्दिर तोड़े हैं, उन सबका प्रतीकार कर ले)
मन में कुछ ऐसा लगा कि बस, धीरे से नमस्कार कर ले ।
बरबस कुछ शीश झुका लेकिन, उस ही क्षण मन में यह विचार-
आया कि सभी तत्पर से हैं, है केवल मेरा इन्तजार ।

क्या सोचेगी इनकी जमात ? जो मेरा यह रुख देखें ये,
फिर मुमकिन है अपने मन में कायर भी मुझको लेखें ये ।
मैं बादशाह हूं, मेरा यूं घबराना जैब नहीं देता,
दिल के बहकावे में आकर, डर जाना जैब नहीं देता।

ये सभी हंसेंगे सोचेंगे, मैं इस पत्थर से डरता हूं,
अमले से कहा कि लो ठहरो, बिस्मिल्ला मैं ही करता हूं ।
यों कह कर छोटी अंगुली पर, टांकी का एक निशान किया,
औ' सबल हथौड़े का प्रहार अभिमानी ने संधान लिया।

दर्शक अनिमेष नयन होकर करते थे प्रभु का ध्यान सभी,
विष सा पी कर थे देख रहे, अपना भीषण अपमान सभी।
पर यह क्या ? कैसा आश्चर्य ? भय मिश्रित यह कैसी पुकार ?
लगते ही एक हथौड़े के अंगुली से निकली दुग्ध धार ।

औ' वहीं किसी झुरमुट में से, मधुमक्खी भिन्नाई तुरंत,
मुगलों पर बादल सी छाई चहुं ओर न जिसका रहा अंत।
भक्तों के मुख से धन्य धन्य, अतिशय जय, जय-जयकार उठी,
'माफी दो' 'बाबा माफ करो' मुगलों की चीख-पुकार उठी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांपती मुगल सेना, प्रभु के चरणों में गिरती आती थी,
अंगुली से झर झर दुग्ध धार, अब तक बहती ही जाती थी।
खुद शहंशाह चिल्लाया तब, 'माफी दें मुझको महावीर,
अब कभी न होगी यह हरकत, माफी दें मुझको महावीर'।

क्षण भर में यह सब हुआ और क्षण भर में ही हो गया शान्त,
पर वीतराग प्रभु की प्रतिमा, अब भी थी वैसी ही प्रशान्त।
अपना सा मुंह ले क्षमा मांग, पछताते औ' भयभीत विवश,
सब लौट गये मन में गाते, ऊंचे आसन वाले का यश।

उस दिन जग में विख्यात हुआ, यह प्रतिमा अतिशयकारी है,
अद्भुत, पदमासन, वन्दनीय, महिमा मय, औ' सुखकारी है।
सन्मति की कीर्ति-ध्वजा जग में, यह अडिग रहेगी युग युगान्त,
कवि भव-भव में भी लिखा करो, इस महिमाका होगा न अंत।

मद, मोह, क्रोध मायादिक पर, जिनने पा ली है पूर्ण विजय,
कर जोड़-जोड़ कर, बार- बार, बोलो उन महावीर की जय।

❖ ❖ ❖

बावन साल पुरानी अपनी इस कविता के अंतिम पद पर मैं विशेष रूप से आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा। इसमें मैंने यह विश्वास व्यक्त किया है कि बड़ेबाबा की प्रतिमा तो ***'अडिग रहेगी युग-युगान्त'***।

यह वक्त की बिडम्बना है कि आज बाबा के भक्त ही कोई ऐसा हठाग्रह ले बैठे हैं जिससे बड़ेबाबा के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगने की आशंका उत्पन्न हो गई है, पर आज भी अपने उस जन्मजात विश्वास के बल पर मैं कह रहा हूं कि हमारे वे भाई समय रहते चेतेंगे, पुरातत्व विभाग अपने दायित्व का दृढ़ता पूर्वक निर्वाह करेगा और शासन भी निष्पक्षता पूर्वक अपना काम करेगा। स्थानान्तरित करने की कोशिश में बड़ेबाबा के अस्तित्व को खतरा है, यह बात लोगों की समझ में आयेगी, और **मुझे भरोसा है कि बड़ेबाबा जहां हैं, वहीं रहेंगे।**

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या कहा प्रतिष्ठाचार्य ने ?

प्राय: यह प्रचारित किया जाता है कि कमेटी ने जैन समाज के वरिष्ठतम प्रतिष्ठाचार्य श्रीमान पं. नाथूलालजी शास्त्री से विचार-विमर्श करके, उन्हीं के हाथ से नवीन मन्दिरका शिलान्यास कराया गया है तब इसमें दोष कैसे हो सकता है ? इस संबंध में पं. नाथूलालजी शास्त्री से जानकारी प्राप्त करने पर वास्तविकता ऐसी नहीं पाई गई। पण्डितजी ने अपना स्पष्टीकरण अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया है जो अविकल रूप में यहां प्रस्तुत है -

'बड़ेबाबा का मन्दिर गिराने में मेरी सहमति नहीं ली गई'

– पं. नाथूलाल शास्त्री इन्दौर

श्री नीरजजी जैन सतना ने अपने २०-८-९९ के पत्र में लिखा है कि मैंने कुण्डलपुर क्षेत्र के बड़ेबाबा के प्राचीन मन्दिर को गिराने का समर्थन व अनुष्ठान किया है। **आश्चर्य है, आज तक मेरे सामने मन्दिर गिराने बाबद कोई प्रश्न ही नहीं आया है। मैं मन्दिर गिराने का समर्थन क्यों करूंगा ?** मैं तो उस मन्दिर की अनेक वेदियों में विराजमान अनेक प्रमिाओं के साथ श्रीधर केवली के बाहर स्थित चरण-चिन्ह भी विराजमान करनेके पक्ष में हूं जिससे मन्दिरकी शोभा बनी रहे और यह 'सिद्ध-क्षेत्र' सार्थक हो सके।

इस मन्दिर के पास ऊंची और विशाल जगह में जो नवीन मन्दिर का शिलान्यास हुआ है, मुझे कार्यकर्ता ले गये। अपने खर्च से ११ बजे मैं पहुंचा तब शिलान्यास विधि सम्पन्न हो चुकी थी, मैंने भी सिर्फ हाथ लगा दिया और पीछे निवेदन कर दिया कि जो कुछ क्षेत्र में काम करें, पुरातत्व विभागकी स्वीकृति से करना चाहिये, साथही परस्पर सद्भाव भी रखा जावे। मेरे विरुद्ध पत्र-पत्रिकाओं में छप रहा है, इस हेतु यह समाधान करना पड़ा है।

हस्ताक्षरित -

नाथूलाल जैन शास्त्री,

इन्दौर, २५-८-९९

प्रबंध समिति के संगठन मंत्री श्री चन्द्रकुमार बजाज को अपने एक पत्र में पण्डितजी ने एक व्यावहारिक सुझाव दिया जो जैन गजट १४-१०-९९ में प्रकाशित है। इस प्रस्ताव पर विचार किया जाना चाहिये -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

-'एक सुझाव है कि उस नये मन्दिर में विकल्प रूप में, बड़ेबाबा की मूर्ति के समान ही दूसरी मूर्ति, या श्रीधर केवली के चरण-चिन्ह विराजमान कर यात्रियों को, श्री महावीरजी की मूल वेदी के आगे नई वेदी के समान, सुविधा दी जा सकती है।

धीरे-धीरे लोक विरोधी वातावरण बनता हुआ देखकर ऐसा लगता है कि चांदखेड़ी, नेमावर आदि के समान बड़ेबाबा की मूर्ति स्वयं मन्दिर के गर्भगृह व अपनी स्थिति को पूर्ववत् कायम रखेगी। इस विषय में पुरातत्व-विभाग का भी सहयोग मिलेगा। अभी वास्तु शास्त्रानुसार मन्दिर-मूर्ति की दिशा ठीक है।

- नाथूलाल जैन शास्त्री, इन्दौर.

कुण्डलपुर के प्रसंग में अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए पं. नाथूलालजी शास्त्री ने २७-१०-९९ के अपने पत्र में श्री चन्द्रकुमार बजाज को पुनः लिखा -

-'कुण्डलपुर के मैंने पहले दो बार दर्शन किये हैं, परन्तु ध्यान से मुख्य मन्दिर नहीं देखा। मैंने अभी जब पढ़ा कि वर्तमान स्थिति में जो मन्दिर बचा है, उसके आस-पास जो नीचे-उपर निर्माण था, उसे छत्रसाल महाराजा ने, बड़ेबाबा के प्रभाव से अपना कष्ट दूर होने पर जीर्णोद्धार रूप में कराया था। प्राचीनता का जीर्णोद्धार होता है, वह गिराया नहीं जाता। प्राचीनता की रक्षा इतिहास व स्मारक हेतु बहुत आवश्यक है। मैं मन्दिर के संबंध में, और मूर्ति की स्थिति के संबंध में भी बिलकुल अनभिज्ञ था। मैंने इसीलिये 'पुरातत्व विभाग से स्वीकृति लेकर कोई भी क्षेत्र में कार्य करावें' यह स्पष्ट निवेदन कर दिया था।

समाज में सर्वत्र इसकी चर्चा है कि मन्दिर व मूर्ति का अविनय हो रहा है। आपसे मुझे ठीक जानकारी मिली, मैं अपयश से बच गया।

विनीत, नाथूलाल शास्त्री

प्राचीन काल की प्रतिष्ठित मूर्तियों की विशेषता बताते हुए पं. नाथूलालजी शास्त्री ने अपने पत्र में आगे लिखा -

-'निर्दोष कारीगर द्वारा, श्रवणबेलगोल के माफिक निर्मापित मूर्ति में, पवित्र, संयमी, नग्न दिगम्बर एवं मंत्र-साधना करने वाले प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा किये गये संस्कार से अतिशय आता है। ७०-७५ वर्ष से मैंने उतने गुण वाले प्रतिष्ठाचार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं देखे हैं, अतः इस समयावधि में जो प्रतिष्ठायें हुई हैं वे केवल दिगम्बर मुद्रा को आदर्श मानकर, पूजा-अभिषेक आदि के लिये साधन मानी जा सकती हैं। *प्रतिष्ठा के काम में समाज के अर्द्ध-शिक्षित एवं अशुद्धोच्चारण करने वाले व्यक्ति ही संलग्न रहे हैं। प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र भी मुनिराजों द्वारा अशुद्ध एवं अधूरे मंत्रों के उच्चारणों द्वारा कराये जाते हैं।* ***अतिशय तो पुरानी मूर्तियोंमें ही मिलेगा।***

प्रतिष्ठाचार्य गृहस्थ व ब्रम्हचारी भी होते हैं जो क्रियाकाण्ड में निष्णात होते हैं किन्तु तप एवं ज्ञान कल्याणक के पांच मंत्र दिगम्बर मुनि (विद्वान) ही देते हैं, यह नियम है। पहले तो भट्टारक दिगम्बर रहते थे जिनकी छत्रछाया में प्रतिष्ठायें, तीर्थ यात्राएं व शन होता था।'

- नाथूलाल शास्त्री

समाज के वरिष्ठतम एवं सर्वमान्य प्रतिष्ठाचार्य द्वारा प्रेषित इन संकेतों पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यक्ता है। पण्डितजी ने स्पष्ट कहा है कि आज जिस प्रकार के प्रतिष्ठाचार्यों के द्वारा बड़ी-बड़ी प्रतिष्ठायें सम्पन्न हो रही हैं उनमें से अधिकांश प्रमाणित प्रतिष्ठाचार्य नहीं हैं। इस प्रकार की प्रतिष्ठाओं से मूर्ति में वह अतिशय उत्पन्न हो ही नहीं सकता जिसकी हम आशा करते हैं। उनका मंतव्य है कि पूजा-अभिषेक आदि के लिये नवीन प्रतिष्ठित प्रतिमाएं ठीक हैं, पर अतिशय और प्रभाव के लिये हमें प्राचीनकाल के प्रमाणित प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा प्रतिष्ठित और आचार्यों द्वारा वंदित प्राचीन मूर्तियों से ही कोई अपेक्षा करनी चाहिये।

पण्डितजी के इस दिशा-दर्शक परामर्श से यह और आवश्यक हो जाता है कि बड़ेबाबा जैसी अतिशयवान मूर्तियों की पवित्रता की रक्षा के लिये समाज को बहुत सावधानी से काम लेने की आवश्यक्ता है। बड़ेबाबा को स्थानान्तरित करने का कोई भी प्रयास सबसे पहले उनकी हजारों साल से उनमें निहित परिवत्रता को खण्डित करेगा।

हमें बताया गया है कि मन्दिर परिसर के चार मन्दिर जब गिराये गये तब उनकी पूज्य प्रतिमाएं मजदूरों के द्वारा हटाई गई हैं। बड़ी मूर्तियों का हटाना- सरकाना, उनकी पावनता को खण्डित किये बिना हो ही नहीं सकता। हमें विचार करना चाहिये कि क्या हम इतनी बड़ी हानि सहने के लिये तैयार हैं ?

क्या नव-निर्माण की होड़ में संलग्न श्रावकों तथा प्रभु-प्रतिष्ठा को व्यापार बना कर चलने वाले प्रतिष्ठाचार्यों तक पण्डितजी का परामर्श पहुंचेगा ?

❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम क्या सौंपकर जायेंगे नई पीढ़ी के हाथ में ?

जैन समाज में प्राचीन धरोहर को हानि पहुंचाने, या मन्दिरों-मूर्तियों की प्राचीनता को नष्ट करने की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं चिन्ताजनक रूप से बढ़ती जा रही हैं। अब शायद वह समय आ गया है जब हमें विचार पूर्वक निर्णय कर लेना चाहिये कि धार्मिक या सांस्कृतिक धरोहर के नाम पर हम अपनी आने वाली पीढ़ी को कौन सी सौगात सोंप कर जाना चाहते हैं ?

एक ओर हमारे पास आज भी प्राचीन मन्दिरों-मूर्तियों के रूप में हजारों साल की ऐसी अनमोल धरोहर है जिस पर कोई भी समाज गौरव का अनुभव कर सकता है। यदि हम यह दौलत सुरक्षित उनके हाथों में सोंप कर गये तो हमारी सन्तानें भी सैकड़ों पीढ़ियों और हजारों साल तक उस धरोहर के बूते पर संसार के सामने गौरवान्वित होती रह सकती हैं।

इस धरोहर की महानता का रहस्य यह है कि हमारे पूर्वजों ने इनका स्रजन करते समय साध्य और साधन, दोनों की पवित्रता को सुरक्षित रखने की चिन्ता की है। देवालय निर्माण के लिये उन्होंने द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव, चारों साधन अच्छे से अच्छे जुटाने का ध्यान रखा है।

दूसरी ओर नव-निर्माण की वह आंधी है जिसमें फंसकर आज समाज में नवीन तीर्थों की स्थापना हो रही है और बड़े-बड़े संस्थानों के नाम पर सीमेण्ट के जंगल उगाने की होड़ लग रही है। *इसमें हमें जरा भी सन्देह नहीं है कि इन सभी निर्माण योजनाओं में हमारे अभिप्राय और साध्य पवित्र होंगे* **पर हमें स्वीकार कर लेना चाहिये कि आज साधनों की पवित्रता हमसे खो गई है।** स्वार्थ भावना, लोभ तथा मान कषाय और स्पर्द्धा जैसी दूषित भावनाओं में सानकर आज हमने स्वयं अपने साधनों को गंदा और विषहरा बना लिया है। स्पष्ट है कि ऐसे अपवित्र साधनों से हम जो भी निर्माण करेंगे उससे भगवान महावीर के मार्ग की प्रभावना नहीं हो सकती, उल्टे अप्रभावना ही होगी।

ऐसी स्थिति में तीन विकल्प हमारे सामने हैं जो हम अपनी अगली पीढ़ी को सोंप कर जा सकते हैं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१. पहला विकल्प यह है कि हम मन्दिरों और तीर्थों के नाम पर केवल प्राचीनता को ही मानें-पूजें। कहीं कोई नया निर्माण न करें। जो कुछ हमें बाप-दादों से मिला है उसे ज्यों का त्यों हम अपने नाती-पोतों को सोंप कर जाएं।

२. दूसरा विकल्प हमारे पास यह है कि समय के अनुरूप और समाज की आवश्यक्ता के अनुरूप हम अच्छे से अच्छा नव-निर्माण करें और अपनी प्राचीन धरोहर को भी यथावत सुरक्षित रखने का हर सम्भव प्रयास करते चलें। नव-निर्माण के लिये प्राचीनता का विनाश एक भयंकर पाप है, इससे स्वयं भी बचें और समाज को भी बचायें।

इस प्रकार नये-पुराने दोनों की रक्षा और चिन्ता करते हुए, हम अपने बच्चों को दोनों प्रकार की समृद्धि सोंपकर जाने की तैयारी करें। सांस्कृतिक वैभव के नाम पर हमने अपने पूर्वजों से जो पाया है उसे बढ़ाकर, उसमें कुछ उत्कर्ष करके हम अपने वंशजों को दे जायें और इस प्रकार पितृ-ऋण से उऋण हों।

३. तीसरा विकल्प यह हो सकता है कि हम हर जगह नया निर्माण करें और हर जगह से प्राचीनता का नामोनिशान मिटाते चलें। मरे-गुजरे, पुराने लोगों के सारे स्मृति-चिन्ह और अभिलेख नष्ट कराकर जब तक हम हर जगह अपने शिलालेख अंकित नहीं करायेंगे तब तक हमारा नाम, और कीर्ति कैसे सुरक्षित होगी ?

भले ही इसमें हमें 'अमानत में खयानत' का दोषी बनना पड़े, पर उसके लिये सैकड़ों-हजारों साल पहले के निर्माता हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ? आज तो उनका कोई वंशज भी नहीं है। जब तक हम जूने-पुराने और टूटे-फूटे का बोझ उतार कर कहीं गहरे गर्त में गाड़ नहीं देंगे तब तक हमारे 'नव-निर्माण' का डंका कैसे बज़ेगा? इसलिये बड़ा जरूरी है कि जैसे बने वैसे हम, जैसा आजकल हर जगह हो रहा है, प्राचीन को नष्ट करें और उसी की नींव पर, अपनी स्मृति को अमर बनाने के लिये, जैसा बने वैसा नव-निर्माण कराकर ही जायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम समझते हैं इन तीन विकल्पों में से मध्यम विकल्प ही समाज को ग्रहण करना चाहिये। पहले विकल्प में विकास के द्वार बंद होते हैं और समाज आधुनिकता के वरदानों से वंचित होता है। यदि हम तीसरा विकल्प अंगीकार करते हैं तो यह हानिकर स्थिति होगी। **जिस समाज की सांस्कृतिक धरोहर खो जाती है, वह समाज कहीं भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं कर सकता।**

प्राचीन मन्दिर-मूर्तियां और शास्त्र ही ऐसी पुनीत सम्पदायें हैं जिनके बल पर जैन समाज विश्व में अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। यही पुरातन वैभव उसकी आस्था, निष्ठा, धर्मानुराग और चारित्रिक उदारता का परिचायक है। यह सम्पदा घटेगी तो उसके साथ हमारा कद भी घटता जायेगा। और जिस दिन यह धरोहर नष्ट हो जायेगी उस दिन हमारा अस्तित्व भी मिट जायेगा। **यह ऐसी सम्पदा है जिसे हम पा सकते हैं, कमा नहीं सकते। उसका निर्माण नहीं कर सकते। जो है उसकी रक्षा करना ही उसे बचाने का एकमात्र उपाय है।**

इन सभी बातों पर विचार करने के बाद उपरोक्त तीन विकल्पों में से मध्य-विकल्प ही हमारे लिये हितकर और ग्राह्य लगता है। ***हम नया निर्माण करें परन्तु प्राचीन के अस्तित्व को सुरक्षित रखते हुए करें। उसे मिटाकर न करें।*** *किसी भी समाज को जीवन्त बने रहने के लिये प्राचीन की सार-सम्हार और नवीन का स्रजन, दोनों अनिवार्य हैं।* ***दोनों में तालमेल बिठाकर चलना ही श्रेयष्कर है। नव-निर्माण से परहेज न हो, पर पुरातन से भी गुरेज नहीं होना चाहिये।*** *ऐतिहासिक सम्पदा का विनाश आत्मघाती सिद्ध होता है।* **इस छोटीसी भूल के कारण बड़ी-बड़ी राजसत्ताएं विस्मृति के गर्त में समा गई हैं।**

कैक्टस का शौक बुरा नहीं है। पर कैक्टस (थूहर की प्रजाति) रोपने के लिये दादी-नानी के तुलसी चौरा में से तुलसी का बिरवा उखाड़ फेकना अपराध है। तुलसी चौरा को मिटाना-गिराना तो और भी बड़ा, अक्षम्य अपराध है। कुण्डलपुर के पर्वत पर तो आप पूरे तुलसी-वन को रौंद रहे हैं।

मेरा यह अनुरोध किसी मन्दिर या किसी क्षेत्र की प्रबंध समिति तक सीमित न माना जाये। मैं समाज के हर भाई-बहिन से साग्रह अनुरोध करना चाहता हूं कि समय की नजाकत को समझें और अपने अस्तित्व से जुड़े इन सवालों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके अपनी आवाज बुलंद करें।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रद्धा छोटी-बड़ी होती हैं : मन्दिर छोटे नहीं होते

भक्त के मन में भगवान को बिठाने का आसन होता है तब उसकी दृष्टि में भगवान के गर्भालय की संकीर्णता असह्य नहीं लगती, वरदान होती है। किसी दार्शनिक मित्र की ये पंक्तियां मुझे याद आती हैं कि यदि बुलबुल कांटा चुभने के भय से पुष्प का आनन्द नहीं ले पाती तो यह इस बात का प्रमाण है कि पुष्प का आकर्षण उसकी दृष्टि में बस नहीं पाया। पुष्पाकर्षण तो वहीं है जहां कांटे के अस्तित्व का बोध ही न रहे -

वजूदे-खार क्या है, गुल का नजरों से फिसिल जाना,
वगरना आंख में बुलबुल की यह कांटा निहां क्यों हो ?

भगवान से बड़ा कोई नहीं –

यहां हमें एक घटना याद आती है। श्रवणबेलगोल में फरवरी १९८१ में महामस्तकाभिषेक एवं सहस्राब्दी महोत्सव के समय की बात है। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का आगमन निश्चित होने पर स्टेट लेवल कमेटी की बैठक में उनके कार्यक्रम पर विचार चल रहा था। कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री गुण्डूराव बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। प्रस्तावित था कि श्रीमती गांधी हेलीकाप्टर से भगवान गोमटेश्वर पर पुष्प-वर्षा करेंगी। हम में से कुछ लोग इसे उचित नहीं मानते थे। पुरातत्व विभाग के अधिकारी भी उस प्रक्रिया से सहमत नहीं थे। हम कानून के उस प्रावधान का उल्लंघन वे नहीं चाहते थे जिसके अनुसार संरक्षित स्मारक के ऊपर एक निश्चित ऊंचाई तक विमान या हेलीकाप्टर की उड़ान को प्रतिबंधित किया गया है, पर इस बात को की कौन ?

श्री गुण्डूराव एक तेज-तर्रार इन्दिरा भक्त थे। कार्यक्रम की रूपरेखा उन्हीं के कार्यालय से बनकर कमेटी के सामने प्रस्तावित हुई थी। उसका विरोध जरूरी तो सब को लग रहा था, पर प्रश्न यह था कि बिल्ली के गले में घण्टी कौन बांधे ? बाबूजी (साहु श्रेयांसप्रसादजी) ने यह काम मुझे सोंपा और प्रस्ताव आते ही मैने नियम का हवाला देकर अपना विरोध दर्ज करा दिया। जैसी हमें आशंका थी, विरोध सुनते ही गुण्डूराव तिलमिला उठे। उन्होने उपेक्षा पूर्वक कहा –'ऐसा कुछ नहीं होगा। एक लाख में एक भी ऐसी घटना नहीं होतं, आप चिन्ता छोड़िये।'

मैने एक बार पुनः कमेटी के सामने अपना पक्ष रखते हुए कहा – ***'सर, दुर्भाग्य से यदि ऐसा कुछ हो ही जाये तब हमारे देश को दूसरा प्रधान मंत्री तो तीन घण्टे के भीतर मिल जायेगा परन्तु दूसरा गोमटेश्वर यह संसार फिर कभी, किसी कीमत पर नहीं पा सकेगा।*** *यदि प्रधान मंत्री के लिये कानून को तोड़कर कार्यक्रम बनाया गया तो यह बात मैं स्वयं श्रीमती गांधी तक पहुंचाऊंगा।*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहने की आश्यक्ता नहीं कि कमेटी में मेरा संशोधन स्वीकार कर लिया गया। श्रीमती गांधी का हेलीकाप्टर गोमटेश्वर के ऊपर पुरातत्व विभाग के नियम के अनुसार तीन सौ मीटर की परिधि के बाहर उड़ाया गया। उसमें ताजे फूलों की जगह कागज और प्लास्टिक के हल्के फूल रखाये गये जो दूर से भी उड़ते हुए भगवान पर बरस सकें। इन्दिराजी ने स्वयं श्री गुण्डूराव को हेलीकाप्टर से उतार कर श्रेयांसप्रसादजी को अपने साथ बिठाया और यह पुष्पवर्षा हमारी योजना के अनुसार सम्पन्न हुई।

उतनी बड़ी हानि समाज सह नहीं पायेगा–

मैं सोचता हूं कि सिंहद्वार यदि गलत बन गया है तो आप गिरा देंगे या उसका कोई दूसरा उपयोग कर लेंगे। समाज वह आर्थिक हानि भी सह लेगी। किन्तु बड़ेबाबा के बारे में यदि ऐसा कोई गलत कदम आपसे उठ गया, वहां यदि कोई भूल हो गई, तो उसका प्रतिकार कैसे करेंगे आप ? आपको अपनी गल्ती का एहसास होने तक तो भगवान की मूर्ति को जो हानि होने की आशंका है वह हो चुकी होगी। सिंहद्वार का प्रयोग आपके कौशल का प्रमाण है। कृपया बड़ेबाबा पर कोई प्रयोग आप मत कीजिये। उतनी बड़ी हानि यह समाज नहीं सह पायेगा।

प्रावीन तीर्थों पर भक्ति-भाव का महत्व होता है, कुछ काम ऐसे होते हैं जो मात्र धन बल से या कौशल से नहीं सधते। उसके लिये निष्ठा होनी चाहिये। **भगवान से बड़ा कोई नहीं है और भगवान भक्ति के वश में होते हैं।** जनश्रुतियों के अनुसार कुण्डलपुर के पर्वत पर बड़ेबाबाका आगमन भी भक्ति के बल पर ही हुआ था। आइये अतीत में झांक कर वह अनोखा दृश्य देखते हैं।

बछड़ों की गाड़ी पर आये थे बड़ेबाबा

कहा जाता है कि इस पहाड़ी पर बड़ेबाबा एक चमत्कारी घटना के माध्यम से पधारे और अचल प्रतिष्ठित होकर विराज गये। आज भी उनके लाखों भक्तों को विश्वास है कि वे स्वेच्छा से यहां विराजे हैं और चिरकाल तक यहीं विराजे रहेंगे।

अपने बचवन से ही वह घटना सुनता आया था कि कैसे एक बनजी करने वाले मोदी के पैर में पहाड़ी पर रोज राह चलते एक खास जगह उपटा लग जाता था। यह वही पावन स्थल था जहां बड़ेबाबा धरती की गोद में सुरक्षित थे। फिर कैसे वे यहां तक आये और विराज गये, इस सैकड़ों हजार साल पुरानी घटना को मैने बावन साल पहले अपनी तुकबंदी में लिखा था। तब से आज तक गाता-सुनाता आ रहा हूं, छपाता-बांटता आ रहा हूं। आज फिर आपको सुनाना चाहता हूं -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुहाना सपना

कुछ किंवदंतियां उस युगकी अब भी प्रचलित हैं यहां वहां,
जो अति प्रसिद्ध हैं उनमें से रखता हूं केवल एक यहां।
किस युग से सम्बंधित है यह, अब तक न खोज हो पाई है,
बस है केवल आधार यही, यह घटना सुनी सुनाई है।

बीते युग का इतिहास काश, कोई हमको बतला जाता,
कल्पना-जन्य इन चित्रों में प्रामाणिक जीवन आ जाता।
उन दिनों कहीं अब से उन्नत, सुन्दर यह ग्राम पटेरा था,
उद्योगशील था, घर घर में सुख था, समृद्धि का डेरा था।

बस इसी ग्राम में छोटा सा वह व्यापारी भी रहता था,
शुभ अशुभ कर्म का उदय सभी संतोष मानकर सहता था।
सौदा लेकर बनजी करने जाता था वह देहातों में,
सीधा सच्चा बर्ताव सदा रहता था उसकी बातों में।

जाता था रोज पहाड़ी के उस ओर बड़े तड़के उठकर,
घर-घर जाकर व्यापार किया करता था, तन-मन से जुटकर।
था एक नियम, इस पथ से वह जब भी आता या जाता था,
बस बीचोंबीच पहाड़ी के उसको उपटा लग जाता था।

था बीच रास्ते में उसके वह छोटा नोंकदार पत्थर,
अनजाने लग ही जाती थी आते जाते जिसकी ठोकर।
यह आश्चर्य था रोज दृष्टि उसकी कुछ बंट ही जाती थी,
वह लाख बचाता था लेकिन यह घटना घट ही जाती थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गये बहुत दिन, एक रोज मन में आया ऐसा विचार,
मैं बचता हूं, जाने कैसे लग ही जाता है बार बार।
इसलिये आज इस पत्थर को पथ से मैं दूर हटाऊंगा,
मेहनत कर लूंगा एक बार, सब दिन को छुट्टी पाऊंगा।

यों सोच कुदाली लेकर फिर उस टीले के समीप आया,
श्रम करते करते सांझ हुई, पत्थर न अभी तक खुद पाया।
छोटा सा पत्थर नहीं, वहा चट्टान दिखी उसको भारी,
'कल देखूंगा' ऐसा कहकर कर डाली घरकी तैयारी।

दिन भर का हारा थका पस्त, घर आकर निद्रालीन हुआ,
तीसरे पहर इस अति सुन्दर, शुभ सपने में तल्लीन हुआ।
सपने में देखा, नभ पथ से आकर सम्मुख इक यक्ष मिला,
सपना था पर इतना उज्ज्वल, मोनों बिलकुल प्रत्यक्ष मिला।

बोला वह यक्ष, -' श्रेष्ठ मानव, तुम पार न इसका पाओगे,
इस एक कुदाली के बल पर यह काम न करने पाओगे।
यह मामूली चट्टान नहीं, अशरण की एक शरण है यह,
देवाधिदेव, इन्द्रादि वंद्य, सन्मति का समोशरण है यह।

साधारण पत्थर नहीं, वीर की प्रतिमा है, अतिशयकारी,
भव-भयहारी, श्रम-तमहारी, मंगलमय, जन-मन हितकारी।
तुम संध्या समय इधर लाना बछड़ों का छोटा सा वाहन,
श्रद्धा के कच्चे धागे ही कर लेंगे प्रभु का आवाहन।

उस छोटी सी गाड़ी पर ही प्रतिमा थापित कर देंगे हम,
फिर पहुंचाने के लिये स्वयं हर्षित हो साथ चलेंगे हम।
पर एक बात का ध्यान रहे, इस ओर न देख सकोगे तुम,
कल्पना सहारे ही अतिशय की गरिमा लेख सकोगे तुम।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतने में कुछ प्रकाश फैला, वह सुन्दर सपना टूटा सा,
संध्या की कठिन प्रतीक्षा में मन का सब धीरज छूटा सा।
सूर्योदय के कुछ पहले ही घर घर में इसका शोर हुआ,
अतिशय सुनते ही भक्तों का तन मन सब हर्ष विभोर हुआ।

उस दिन छोटी सी बस्ती में उत्साह छा गया था भारी,
घर-घर में होने लगी तुरत प्रभु के स्वागत की तैयारी।
वर्षों से चार पहर बीते, धीरे-धीरे संध्या आई,
दर्शनाभिलाषी भक्तों को सुकृत का सन्देशा लाई।

चल दिया भक्त श्रावक घर से वह छोटी सी गाड़ी लेकर,
उसका जीवन कृतकृत्य हुआ इस अतिशय का सुयोग पाकर।
उस जगह पहुंचकर धीरे से पथ पर ही गाड़ी ठहराकर
सामने दृष्टि कर, निश्चल सा, सारथि बन बैठ गया जाकर।

सहसा पीछे कुछ शोर हुआ, जय जय की ध्वनि लहराई सी,
कुछ ऐसा लगा बड़ेबाबा की मूरत गाड़ी पर आई सी।
औ शीघ्र चल पड़ी गाड़ी तब, सुर संचालित अतिशय महान,
पीछे से भामण्डल किरणें पथ को करतीं दैदीप्यमान।

चहुं ओर दूर तक फैल गया दिनकर सा तमहारी प्रकाश,
वन के सूखे वृक्षों में भी फल-फूल लग गये अनायास।
अत्यंत अलौकिक फूलों की आती थी मधुर सुगंध वहां,
पर मुड़कर देख सके इस पर पहले से था प्रतिबंध वहां।

वादित्रों के स्वर पर मोहक संगीत सुनाई देता था,
पर लालायित उस श्रावक को पथ ही दिखलाई देता था।
मन में तब यह विचार आया, क्या यह अवसर खो दूंगा मैं,
जो भी हो, यह सब एक बार, भर नयन निरख ही लूंगा मैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह कर न सका अपने मन में अपनी उत्कण्ठा को विलीन,
पीछे फिर कर बस क्षण भर को, उत्सव दर्शन में हुआ लीन।
कुछ देख सके इसके पहले, अपनी स्थिति का भान हुआ,
सब अतिशय अंतर्धान हुआ, वह भक्त वहीं पाषाण हुआ।

यह अति विशाल प्रतिमा भी फिर बस इसी जगह रह गई धरी,
इस पुण्य-भूमि की दिन पर दिन उस दिन से ही महिमा निखरी।
कण कण में गरिमा व्याप्त हुई, अतिशयकारी, अद्भुत, अनूप,
कुण्डलपुर भी हो गया अमर पाकर सन्मति का प्रगट रूप।

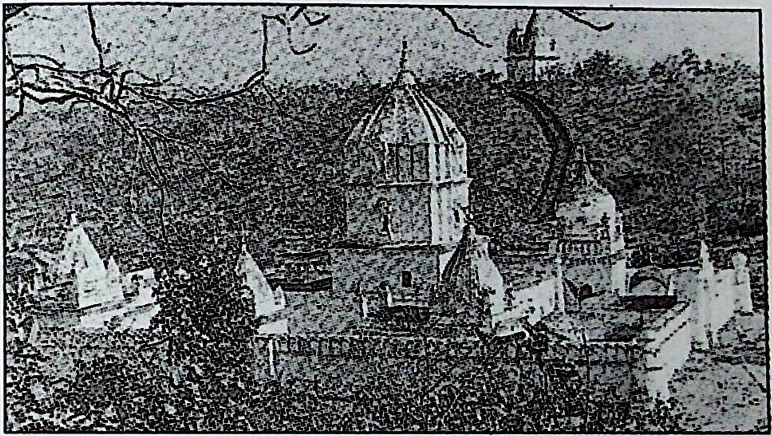

हो गया अमिट वह दिव्य स्वप्न, श्रावक की चिर निद्रा समेत,
फिर भी कुछ है अज्ञात अभी, इतिहास अभी तक है अचेत।
बीते युग का यह चिन्ह शेष, कल्पान्त न डिगने पायेगा,
उस युग के गौरव का संदेश युग-युग तक हमें सुनायेगा।

अपनी इस बावन साल पुरानी कविता के अंतिम पद पर मैं विशेष रूप से आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इसमें मैंने यह विश्वास व्यक्त किया है कि **बड़ेबाबा का समोशरण 'कल्पान्त न डिगने पायेगा'**। आज भी इसी जन्मजात विश्वास के बल पर मैं कह रहा हूं कि बड़ेबाबा के भक्त समय रहते चेतेंगे, उन्हें स्थानान्तरित करने में उनके अस्तित्व को खतरा है, यह बात लोगों की समझ में आयेगी और **मुझे भरोसा है कि बड़ेबाबा जहां हैं, वहीं रहेंगे।**

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कब से चल रहा है जीर्णोद्धार ?

प्रायः हमसे कहा जाता है कि बड़ेबाबा मन्दिर के जीर्णोद्धार की योजना स्व. साहु श्रेयांसप्रसादजी के समय से चल रही है, तब इसमें आपको आपत्ति क्यों है? किन्तु यह सही नहीं है। वास्तविकता यह है कि साहु श्रेयांसप्रसादजी के सामने बड़ेबाबा मन्दिर के जीर्णोद्धार की ऐसी कोई योजना नहीं बनी जो अब तक चल रही हो। उनके समय का कोई काम क्षेत्र पर शेष नहीं था। सब कुछ उनके जीवन काल में ही सम्पन्न हो गया था। बड़ेबाबा मन्दिर की सम्हाल में उनका योगदान इस प्रकार है-

मेरे कई बार आग्रह करने पर सबसे पहले ३ अक्टूबर १९७८ को साहु श्रेयांसप्रसादजी सपरिवार बुंदेलखण्ड के तीर्थों की वन्दना के लिये आये। इस यात्रा में उनके मझले सुपुत्र साहु प्रेमचन्द्रजी एवं श्रीमती दुर्गाजी, और श्रीमान साहु अशोककुमारजी शामिल थे। खजुराहो से अहार, पपौरा, देवगढ़ होते हुए सब लोग ५-१०-७८ को कुण्डलपुर आये। फिर सागर, नैनागिर, और द्रोणगिर की

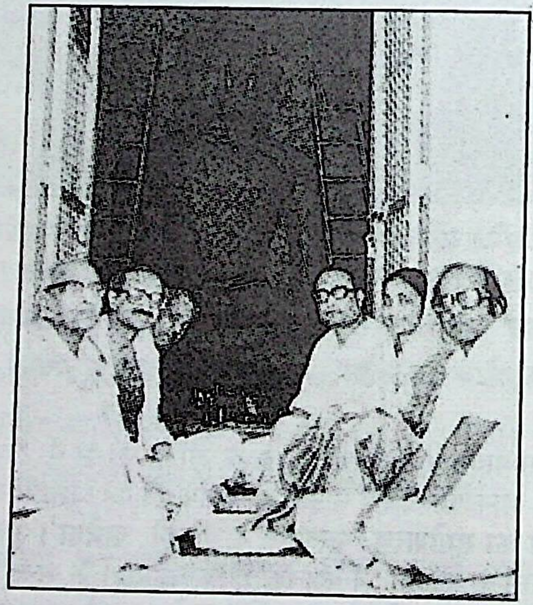

बड़ेबाबा के सामने बैठकर शिखर की मरम्मत का संकल्प। बायें से श्रावक-शिरोमणि साहु श्रेयांसप्रसाद, साहु अशोक कुमार जैन और डा. शिखरचन्द्र। सामने माला लिये श्री निर्मलचन्द्र जैन, श्रीमती दुर्गा जी और साहु प्रेमचन्द जैन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वन्दना करके ये लोग खजुराहो होकर वापस दिल्ली गये थे। हमें सब जगह पूरे समय उनके साथ रहने का अवसर मिला ।

कुण्डलपुर में बड़ेबाबा का दर्शन करके सब लोग भाव-विभोर हो उठे। उनके मन में यह भावना प्रगट हुई कि इस क्षेत्र के लिये, खास कर बड़ेबाबा मन्दिर के लिये अवश्य कुछ करना है। उस समय वहां उपस्थित हम सब लोगों ने उनसे यही निवेदन किया कि -'आप लोग स्वयं विचार करके मन्दिर के हित में जो आवश्यक हो वह करें। आप जैसे विशिष्ट अतिथियों को ठहराने योग्य एक अतिथि-निवास भी क्षेत्र पर बनवाने की भी कृपा करें।'

अतिथि-निवास का प्रस्ताव तत्काल स्वीकार कर लिया गया। साहु परिवार ने स्वयं पूरे परिसर का भ्रमण करके अतिथि-निवास के लिये ऐसे स्थान का चुनाव किया जहां से बड़ेबाबा मन्दिर का दर्शन होता था। उसका शिलान्यास हुआ और यथा समय वह शानदार भवन बन गया। उन दिनों कण्ट्रोल रेट पर लोहा मिलनेमें कठिनाई होती थी इस कारण इसे पूरा होने में कुछ समय लगा।

आज कमेटी की इस नव-निर्माण योजना से अतिथि-निवास बनवाने वालों के साथ भी धोखा हुआ है। पहले सिंह-द्वार उस दर्शन में बाधक बना, और अब यदि सिंह-द्वार गिरा भी दिया जायेगा तो उसके पहले वह मन्दिर ही गिरादिया गया जिसके आकर्षण में बंधकर साहु परिवार ने अतिथि-निवास बनवाने के लिये इस स्थान का चुनाव किया गया था। क्या यह दान दाता की भावना के साथ खिलवाड़ और विश्वासघात नहीं है ?

उस दिन ५ अक्टूबर १९७८ को साहु परिवार ने बड़ेबाबा मन्दिर में ही बैठकर यह निर्णय लिया कि पहले विशेषज्ञ वास्तुकार से जांच-परख् कराके, तथा पुरातत्व विभाग की राय लेकर जो परामर्श मिले, वही काम मन्दिर में कराया जाये। मन्दिर के महत्व को देखते हुए, तकनीकी परामर्श के बिना मन्दिर में कोई काम कराना उचित नहीं समझा गया।

क्या बनी विशेषज्ञ की राय ?-

बम्बई जाकर साहुजी ने प्रसिद्ध भवन-विशेषज्ञ श्री एस.सी. डांड को मइ १९७८ में कुण्डलपुर भेजा। खजुराहो हवाई अड्डे से हम स्वयं उन्हें कुण्डलपुर लाये। मन्दिर काअवलोकन करके उन्होनें यह मंतव्य दिया कि-

'बहुत मोटी दीवारों वाला यह बड़ेबाबा का मन्दिर ऐसा मजबूत भवन है जिसे अभी पांच सौ साल तक किसी जीर्णोद्धार की आवश्यक्ता नहीं है। इसका चूने का पलस्तर अवश्य नरम पड़ गया है अतः पुराना पलस्तर उतार कर नया पलस्तर कराने का काम आप करा सकते हैं। बड़ेबाबा मन्दिर में और किसी जीर्णोद्धार की आवश्यक्ता नहीं है।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९७९-८० में साहु श्रेयांसप्रसादजी द्वारा मन्दिर का
जीर्णोद्धार सम्पन्न होन पर यह शिलालेख लगाया गया -

❖ जैनम् जयतु शासनम् ❖

भारतगणराज्ये मध्यप्रदेशान्तर्गत

इदं कुण्डलगिरि अपरनाम कुण्डलपुरनाम सिद्धक्षेत्रमस्ति ।
वर्द्धमाननाम्नरन्तिम तीर्थंकरस्य समवशरणे स्थितेषु सप्तशत केवलिषुमध्ये
श्रीधरनाम्ना केवलिना अस्मात् क्षेत्रात् निर्वाण प्राप्तिं प्रसिद्धम् ।
तेषां चरणाकृतिरद्याऽपि पर्वतोपरि मुख्यजिनालये संस्थापिता वर्तते ।
चरणपीठिकायां तेषां श्रीधरकेवलिनां नामोल्लेखोऽस्ति ।
मुख्य जिनालयेतु शोभिता युगादिदेवस्य एकादसहस्तप्रमाणं
पद्मासने जिनबिम्बं अतिप्राचीनमस्ति । तन्निर्माणं खिष्टस्य
षष्टमशताब्दिकाले बभूव इतिनिर्णयः पुरातत्वविदुषां मते संजातः।
अस्य जिनालयस्य जीर्णोद्धारः पुरा वैक्रमाब्दे १७५७ तमे वर्षे
भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्तिरादेशात् तच्छिष्येण सुचन्द्रकीर्तिना,
पश्चात् प्रशिष्येण नेमिसागरेण सामाजिक द्रव्यसहाय्येन कृतः ।
तदनन्तरं पन्नाराज्याधिपतिना महाराजाधिराज्ञा
बुन्देलकेसरिणा श्रीछत्रसालेनाऽपि जीर्णोद्धारः कृतः
इतिवृत्तं जिनालयस्यस्थित शिलापट्टेन ज्ञायते ।
शतत्रयवर्षानन्तरं जिनालयस्य समुन्नत शिखरं जीर्णं विलोक्य
२०३७ विक्रमाब्दे २५०७ वीराब्दे प्रमाणे
अग्रवाल दिगम्बरजैनधर्मानुयायिना, मित्तल गोत्रोत्पन्नेन
श्री साहु दीवानसिंहेत्यस्य सुपुत्रेण उत्तरप्रदेशे नजीबाबाद निवासिना
मुम्बईमहानगरी प्रवासिना - भारत गौरवेण
समाजरत्न-श्रावकशिरोमणि पद विभूषितेन साहुश्रेयांसप्रसादेन
स्वार्जित द्रव्येण अतिभक्त्या शिखरस्य जीर्णोद्धारः कृतः इति ।

❖ जैनेन्द्रम् धर्मचक्रम् प्रभवतु सततम् सर्वसौख्यप्रदायी ❖

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री डांड की सम्मति पर नक्शे डिजाइन आदि तैयार कराकर पुरातत्व विभाग के तकनीशियनों से परामर्श करके, मरम्मत के लिये योजना बनी। तब साहु परिवार के अर्थ सहयोग से, मन्दिर का पूरा प्लास्टर निकाल कर नया प्लास्टर कराया गया और पुताई कराई गई। यह काम भी विशेषज्ञों की देख रेख में बड़ी सावधानी से कराया गया। हम भी वहां बार बार जाते रहे और मरम्मत की प्रगति को अपने कैमरे में भरकर साहुजी के पास भेजते रहे। वहां से राशि आती रही। पुरातत्व विभाग भी बराबर कार्य की प्रगति की जानकारी लेता रहा। इस बीच नई कमेटी का गठन हुआ जिसमें श्री प्रकाशचन्द सिंघई ने अध्यक्ष और श्री रूपचन्द बजाज ने उपाध्यक्ष का पद ग्रहण किया। डा. शिखरचन्द्र सहित कमेटी के प्रायः सभी सदस्य इस काम में दत्त-चित्त रहे।

बीस साल पहले, उस समय बड़ेबाबा के भक्त आश्वस्त हो गये थे कि अब सौ-दो सौ साल के लिये इस प्रभावशाली मन्दिर को स्थायित्व प्राप्त हो गया है। उस समय कोई नहीं जानता था कि अपने आपको श्रीक्षेत्र का हित-चिन्तक बताने वाले कुछ लोग, अनधिकार चेष्टा करके, यह शताब्दी पूरी होने के पहले इस मन्दिर को ही समाप्त कर देंगे। इस शताब्दी ने ऐसे महान जिनालय का, ऐसा भयानक विनाश कहीं नहीं देखा।

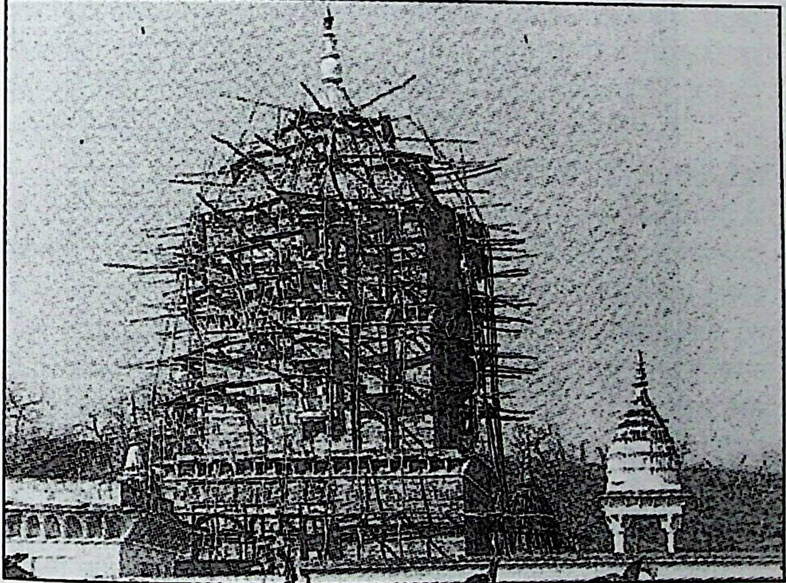

*१९७९ में साहू परिवार के सहयोग से शिखर की मरम्मत कराई गई। उस समय मन्दिर का प्लास्टर उतारने पर इन्जीनियर का यह मंतव्य सिद्ध हुआ कि यह शिखर पत्थरों की चिनाई से निर्मित है और सैकड़ों साल तक बिना किसी मरम्मत के खड़ा रह सकता है। **कमेटी ने इस मजबूत शिखर को गिराकर श्रीक्षेत्र का भारी अहित किया है।***

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दिर का शिखर तीन मंजिला था जो अब शेष नहीं है। दूसरी मंजिल अटारी की तरह थी पर उसमें कोई द्वार नहीं था। उस में एक खिड़की थी जियमें जाली-सींखचे नहीं होने से पक्षी भीतर घुसते थे। वहीं मरते-मारते भी थे। कुछ हड्डियां भी वहां पड़ी मिली थीं, अतः इस अमंगल को दूर करने के लिये, प्रतिष्ठाचार्य से परामर्श करके खिड़की बंद करा दी गईं। मन्दिर के किसी भाग में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। यह कार्य १९७९-८० में सम्पन्न हुआ।

यह सारा काम कमेटी के पूर्व अध्यक्ष पण्डित जगन्मोहनलालजी शास्त्री के कुशल मार्ग-दर्शन में सम्पन्न हुआ। उन्होने स्वयं साहु परिवार के इस योगदान की प्रशस्ति संस्कृत में लिखी जिसे पाषाण-फलक पर उत्कीर्ण कराकर मन्दिर में लगा दिया गया। इस प्रकार बड़ेबाबा मन्दिर के शिखर को संस्कारित करने की योंजना साहुजी के सामने बनी और लगभग दो साल में पूरी हो गई। फिर उसके बाद जीर्णोद्धार की कोई योजना उनके सामने नहीं बनी।

श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुन्डलपुर

दमोह (म० प्र०)

श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुन्डलपुर जी के प्रमुख मंदिर (बड़े बाबा का मंदिर) के शिखर का जीर्णोद्धार ३०० वर्ष बाद आदरणीय श्रीमान् साहू श्रेयांसप्रसाद जी जैन बम्बई द्वारा होना स्वीकृत हो चुका है। साथ ही एक अतिथि गृह का भी नव-निर्माण उन्हीं की ओर से होने जा रहा है। इन दोनों कार्यों का शुभारंभ मुहुर्त ता: २४-१-७९ बुधवार को प्रातः ७ बजे होना निश्चित हुआ है।

अतः सभी जैन धर्मावलम्बी बन्धुओं से निवेदन है कि उक्त अवसर पर पधारकर अपना योगदान करने की कृपा करें। "बड़े बाबा" तथा क्षेत्र के दर्शन पुण्य लाभ के साथ ही श्री १०८ आचार्य विद्यासागर जी महाराज के युगल दर्शन का लाभ भी सुनिश्चित है।

कार्यक्रम

दिनांक २४-१-७९ बुधवार को प्रातः ७ बजे से अतिथि गृह के शिलान्यास हेतु हवन-पूजन एवं परम आदरणीय पं० जगन्मोहनलाल जी शास्त्री कटनी वालों द्वारा शिलान्यास एवं बड़े मंदिर के शिखर का प्लास्टर खंडन करना।

— भवदीय —

डा. शिखरचंद जैन, हटा
अध्यक्ष

चौ. दीपचंद जैन, दमोह
मंत्री

पिछली प्रबंध समिति ने मन्दिर का जीर्णोद्धार भी इस प्रकार समाज को सूचना देकर किया. आपने उसी मन्दिर का शिखर ऐसे गुपचुप गिरा दिया कि किसी को खबर भी न हुई.

हमने पत्तों को भी नरमी से छुआ है लेकिन,
आप कैसे हैं कि फूलों को मसल देते हैं।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरातत्व-विभाग सहयोगी है : विरोधी नहीं

कई बार यह भी कहा जाता है कि आप पुरातत्व विभाग की सराहना करते हैं, पर वह विभाग तो खण्डहरों और म्यूजियमों तक ही सीमित है, हमारे पूजित मन्दिरों से उनका क्या संबंध ?

इस प्रश्न पर कुछ विस्तार से विचार करना होगा। भारतीय पुरातत्व विभाग भारत सरकार का राष्ट्रीय महत्व का विभाग है जो पूरे देश में राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन भवनों, मन्दिरों, मस्जिदों, शिल्पावशेषों और प्राचीन स्थलों की सुरक्षा तथा देखभाल करता है। संसद में कानून पारित करके इस विभाग को बहुत से अधिकार दिये गये हैं। यह विभाग देश भर में बिखरे लगभग पांच हजार प्राचीन स्थलों की सुरक्षा की जिम्मेवारी निभाता है। **पुरातत्व कानून के प्रावधानों का उल्लंघन करने पर आर्थिक दण्ड या जेल की सजा, अथवा दोनों दण्ड एक साथ दिये जा सकते हैं।**

यदि हठाग्रह छोड़कर देखना चाहें तो याद कीजिये लाल किला, ताजमहल, गोलकुण्डा, कुतुब मीनार, श्रवणबेलगोल में भगवान गोमटेश्वर और वहां के बत्तीस मन्दिर, कुण्डलपुर के बड़ेबाबा सहित अट्ठावन मन्दिर, खजुराहो के पार्श्वनाथ तथा आदिनाथ सहित अन्य सभी मन्दिर, और इन जैसे सैकड़ों अत्यंत महत्वपूर्ण तथा संवेदनशील मन्दिरों और मूर्तियों की सुरक्षा पुरातत्व विभाग कर रहा है। यह विभाग खण्डहरों से लेकर संग्रहालयों तक और मन्दिरों से लेकर मस्जिदों तक सभी प्राचीन स्मारकों की सुरक्षा के लिये संकल्पित है।

मथुरा का कंकाली टीला, और ब्राह्मी लिपि की पठन-पद्धति जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण शोध सम्बंधी उपलब्धियों के लिये हम इस विभाग के ऋणी हैं। यदि पुरातत्व विभाग और उसके मनीषी विद्वान अधिकारियों का योगदान प्राप्त नहीं हुआ होता तो जैन इतिहास का पुनर्निमाण सम्भव नहीं हो पाता और अब तक उसका पूरा तत्व ही खो गया होता। *अतः हमें स्वयं विचार करके पुरातत्व विभाग का महत्व समझना और स्वीकार करना चाहिये।* ***यदि हम ऐसा सोचते हैं कि पुरातत्व विभाग तो खण्डहरों और म्यूजियमों तक ही सीमित है,*** *तो यह उस विभाग के प्रति अन्याय होगा। ऐसा सोचना हमारे अपने लिये भी हानिकर है।*

जब पुरातत्व विभाग ने सीढ़ियां बनाने से मना किया-

पुरातत्व विभाग के बारे में श्रवणबेलगोल महोत्सव का एक और संस्मरण मुझे याद आ गया। गोमटस्वामी के पर्वत पर जाने आने के लिये जो सीढ़ियां हैं वे सन् १९१० में बनवाई गई थीं। सहस्राब्दी महोत्सव में लाखों की भीड़ का पूर्वानुमान करते हुए हमारी कमेटी ने बगल में एक और सीढ़ी मार्ग बनाकर पर्वत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर चढ़ने और उतरने की अलग-अलग 'वन वे' व्यवस्था करने का विचार किया। भट्टारक स्वामीजी के एक बार कहने पर ही रानी मिल मेरठ के श्री शिखरचन्द्र जैन ने सीढ़ियां बनवाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। कमेटी ने नियमानुसार प्रस्तावित सीढ़ियों के निर्माण की सहमति के लिये पुरातत्व विभाग को पत्र लिख दिया। अपना बजट और राशि की व्यवस्था भी कर ली गई।

पुरातत्व विभाग का उत्तर उस विभाग के सुरक्षाधर्मी चरित्र का घोषणा पत्र जैसा था। उन्होने दूसरी सीढ़ियां बनाने का प्रस्ताव यह कह कर अमान्य कर दिया कि -***'महामस्तकाभिषेक के अलावा अन्य दिनों में बारह वर्ष तक दूसरी सीढ़ियों की वहां कोई उपयोगिता नहीं है, उससे पर्वत का दृश्य बोझिल बनता है। पूरा विन्ध्यगिरि पर्वत संरक्षित स्मारक है इसलिये भी, पर्वत पर कहीं भी छेनी-टांकी लगाने की अनुमति नहीं दी जा सकती।'***

कुण्डलपुर कमेटी को ऐसी घटनाओं से दर्पण का काम लेकर विचार करना चाहिये कि आप वहां क्या कर रहे हैं? आप तो संरक्षित पर्वत पर विस्फोट कर रहे हैं और मन्दिरों पर कुदाल चला रहे हैं। मूर्तियों पर छेनी का आघात कर रहे हैं और बड़ेबाबा की मूर्ति पर आई दरारों को छिपाने के लिये लीपा-पोती कर रहे हैं। आप तो वहां सब कुछ मिटाने पर तुल गये हैं। यह कैसा जीर्णोद्धार है?

फिर भी सीढ़ियां तो बनकर रहीं–

ऐसा नहीं है कि पुरातत्व विभाग ने श्रवणबेलगोल में हमारे महोत्सव के लिये दूसरी सीढ़ियों की उपयोगिता अनुभव न की हो। विभाग के अधिकारी भी महोत्सव की सफलता में हर प्रकार से सहायक होना चाहते थे। उन्होंने उदारता पूर्वक हमारी समस्या का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास किया यह विकल्प तलास लिया कि पर्वत पर ईंट-चूने की अस्थायी सीढ़ियां बनवाई जायें और महोत्सव के समापन के बाद उन्हें हटाकर पर्वत को साफ-स्वच्छ कर दिया जाये।

पुरातत्व विभाग ने इस पर सहमति दे दी और वे अस्थायी सीढ़ियां बनीं, पर उनके साथ पाइप की रेलिंग लगाने के लिये उस पर्वत पर चार इंच केहोल करने की अनुमति नहीं मिली क्योंकि वह पूरा पर्वत 'संरक्षित स्मारक' होने से उस पर टांकी या छेनी का आघात नहीं किया जा सकता। आपने उस समय वे सीढ़ियां देखीं होंगी, उन पर से ही उतरे होंग जिनका कोई निशान अब वहां नहीं है।

विभाग के लिये सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है –

अभी कुछ दिनों पूर्व आपने पत्रों मसें पढ़ा होगा, शरद पूनम की रात में पर्यटकों को ताजमहल दिखाने के लिये उच्च न्यायालय ने आदेश दिया था। सुरक्षा तथा प्रकाश की व्यवस्था अपर्याप्त होने के कारण पुरातत्व विभाग ने उच्च न्यायालय के निर्देश पालन में अपनी असमर्थता व्यक्त की और रात के समय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताज महल के परिसर में किसी को प्रवेश की अनुमति नहीं दी। विभाग के लिये सुरक्षा पहले है, बाकी सब बाद में।

हम यहां यह सब अपने पाठकों को यह समझाने के लिये लिख रहे हैं कि *पुरातत्व विभाग भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण और शक्ति-सम्पन्न विभाग है। वह हमारे पुरखों की छोड़ी हुई अनमोल धार्मिक तथा ऐतिहासिक धरोहरों का रक्षक है, भक्षक नहीं। वह हमारा सहयोगी है, विरोधी नहीं। हमारी पुरा-सम्पदा की सुरक्षा और रख-रखाव सुनिश्चित करने के लिये यह विभाग हमारे लिये एक उपकारी मित्र जैसा है। हमें जब और जहां उनका कोई सहयोग चाहिये हो तब विभाग से सम्पर्क करके वह प्राप्त किया जा सकता है। उसके लिये वैधानिक मार्ग है जिसका हमें सहारा लेना चाहिये। कानून तोड़कर, अधिकारियों के समक्ष झूठे बयान देकर या लुक-छिप कर काम करना ही एकमात्र उपाय नहीं है।* **संरक्षित मन्दिरों को गिराना या उनकी प्राचीनता को नष्ट करना बहुत अनुचित काम है। कुण्डलपुर में कमेटी ने वही किया है और वही कर रही है।**

स्व. साहु श्रेयांसप्रसादजी और साहु अशोक जी ने बारह साल पूर्व खजुराहो में 'शान्तिप्रसाद संग्रहालय' बनवाया था। केन्द्रीय पुरातत्व विभाग ने दो बार उसके निर्माण पर निषेधाज्ञा जारी की। दोनों बार हमनें तत्काल काम बंद करवा दिया। दिल्ली जाकर हमने। अपनी बात विभाग के अधिकारियों को समझाई। तात्कालिक महानिदेशक श्री थापर ने, और निदेशक श्री एम.एन. देशपाण्डे ने सहानुभूति पूर्वक हमारी समस्याओं को सुना और उस पर विचार किया। हमनें उनके उचित परामर्श स्वीकार दिन-दहाड़े निर्माण का कार्य पूरा किया।

जहां पुरातत्व विभाग और समाज दोनों प्राचीन धरोहर की सुरक्षा चाहते हों, वहां तो किसी अड़चन या विवाद का प्रश्न ही नहीं है। पर जहां प्राचीनता का विनाश ही हमारा ध्येय बन जाये, तब विभाग अपनी शक्ति भर उसे बचाने का उपाय अवश्य करेगा। यह पुरातत्व विभाग का कर्तव्य है और उसका धर्म है।

कुण्डलपुर में मूल मुद्दा यही है। ***वहां हमने नव-निर्माण के प्रलोभन में फंसकर प्राचीनता का बलिदान करने की ठान ली है। हम समझना ही नहीं चाहते कि 'अपनी जैन-संस्कृति के लिये यह कितने घाटे का सौदा है।'*** **आने वाली पीढ़ियां' के लिये हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी। कब चेतेंगे आप ?**

धोखा नहीं देना चाहिये था आपको-

मैं सोचता हूं कुण्डलपुर के मन्दिरों को भी उसी पुरातत्व कानून के अंतर्गत, उसी प्रकार राष्ट्रीय महत्व के स्मारक मानकर, अस्सी साल पहले ही संरक्षित घोषित किया जा चुका है। कुण्डलपुर की कमेटी को भी अनुमति के बिना मन्दिरों की तोड़-फोड़ करने और पर्वत पर अनधिकृत निर्माण करने से पिछले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांच साल में बार बार इस विभाग ने रोका है। छह बार विभाग ने इस तोड़-फोड़ के खिलाफ अपनी नाराजी लिखित में आपको जताई और विभाग को विश्वास में लेकर ही वहां कोई काम किया जाना चाहिये, ऐसा आपसे बार बार अनुरोध किया है। **आपने उन्हें इसका मौखिक और लिखित आश्वासन अनेक बार दिया पर बाद में स्वयं अपने आचरण से सिद्ध कर दिया कि आपका वह कथन मात्र एक धोखा था। इतने बड़े जैन तीर्थ के निर्वाचित अध्यक्ष के लिये यह गौरव की नहीं, शर्म की बात है ? निन्दा तो इस की होनी चाहिये।**

यह शर्म की बात है कि विभाग के सदाशयता पूर्ण अनुरोधों और प्रतिरोधों की आप लगातार अनदेखी करते रहे, और विभाग को झूठी विज्ञप्ति देकर झांसा देते रहे। आपने एक ओर विभाग को उनकी स्वीकृति प्राप्त करने और मात्र जीर्णोद्धार करने का आश्वासन दिया और वहीं दूसरी ओर धोखे से बड़ेबाबा के मन्दिर को क्षत-विक्षत करके उसकी पहचान ही मिटा डाली। आप इस बात का अनुमान भी नहीं कर पायेंगे कि जैन संस्कृति की कितनी बड़ी, और कैसी अपूरणीय क्षति आपक हाथों से हो चुकी है और हो रही है।

इतने से भी जब संतोष नहीं हुआ तो आपने अत्यंत निर्दयता पूर्वक दो वेदियों सहित वे चार मन्दिर नींव से गिरा दिये जिनके गिराने का कोई औचित्य आपके पास नहीं था। न तो उसकी कोई अनिवार्यता थी और न कोई आवश्यक्ता थी। हम जैसे लाखों भक्तों को जीवन भर इस बात का पश्चाताप रहेगा कि हम बहुत चाहते हुए भी उन बेगुनाह और बेजुबान मन्दिरों की हत्या रोक नहीं पाये।

धार्मिक श्रद्धा और निष्ठा के लिये विख्यात इस अहिंसक जैन समाज के माथे पर, आप जैसे चार-छह जिद्दी और दुराग्रही **(क्षमा करें ये आपके ही दिये हुए शब्द हैं) लोगों की शर्मनाक और निन्दनीय हरकतों से, 'मन्दिर ध्वंस' जैसे पाप के कलंक का टीका लग गया।**

अभी और क्या करना चाहते हैं आप ?

मेरी परेशानी यह है कि आपकी पूरी योजना अभी तक समाज के सामने आई नहीं है। मैं आपका पूरा प्लान इस पुस्तक में छापना चाहता था ताकि समाज द्वारा उसके हानि-लाभ पर विचार किया जा सके, उसके गुण-दोषों पर समाज में खुलकर चर्चा हो सके, और समाज उस योजना के पक्ष या विपक्ष में अभिमत बना सके, तथा उचित समय पर उसे व्यक्त कर सके। प्रतिष्ठाचार्य और भवल-नित.र्माण के विशेषज्ञ भी अपनी दृष्टि से विचार कर सकें।

मैने अपने २१-८-९९ के पत्र द्वारा कर बद्ध प्रार्थना करके, और दो माह का समय देकर यही जानकारी आपसे मांगी थी। मेरे उस पत्र का उत्तर देने के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बजाये आपने मेरे खिलाफ निन्दाका एक जाली प्रस्ताव समाज में प्रसारित करके मुझे हड़काना चाहा है।

आखिर आप समाज को बताना क्यों नहीं चाहते कि कुण्डलपुर के पर्वत पर अभी कितने, और कौन-कौन से जिनालय आपकी 'हिट-लिस्ट' में शामिल हैं ? तीन वेदियों और चार मन्दिरों का समूल विनाश करने के बाद, और बड़ेबाबा के मन्दिर का गगन-चुम्बी शिखर धराशायी कर देने के बाद अभी और कितने मन्दिरों की बलि आप चढ़ाना चाहते हैं ?

सिंघई जी, तीर्थ किसी की मौरूसी जायदाद नहीं होते। वे समस्त दिगम्बर जैन समाज की सम्पत्ति हैं । समाज के हर सदस्य को उनकी सुरक्षा की चिन्ता है और उसके बारे में आपसे जवाब तलब करने का अधिकार है। और समाज द्वारा निर्वाचित होने के नाते ऐसे प्रश्नों का समाधान करना आपका दायित्व है। इस सामाजिक और कानूनी दायित्व को नकारना कुछ ऐसा ही है जैसे दुकान के मुनीमजी अपने मालिक को हिसाब बताने में आनाकानी करें । आप जानते हैं इसका परिणाम क्या होगा ? जब तक आप उस दायित्व से मुंह मोड़ेंगे तब तक अफवाहें और महज अंदाजिया बातें भ्रम का कोहरा फैलाकर समाज को गुमराह करती रहेंगी और यही सिद्ध होगा कि आपकी नीयत साफ नहीं है।

आप जब पुरातत्व विभाग की नजर बचाकर कुण्डलपपुर में संरक्षित पर्वत पर और उसके आस पास अपनी मनमानी कर रहे थे, तब भी विभाग पूरी तरह जागरूक, अपना कर्तव्य निभा रहा था। *अगर कमेटी के द्वारा विभाग के परामर्श को मानने की नैतिकता बरती जाती तो मन्दिरों का इस तरह विनाश नहीं हुआ होता।* ***यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कमेटी हमेशा पुरातत्व विभाग के पत्रों-अनुरोधों की अनदेखी करती रही। विभाग हमारी आंखों में उंगली डालकर हमें हमारी प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिये सावधान कर रहा था और हम उसे अपने हाथों नष्ट करने में लगे थे।***

कमेटी की लापरवाही के कुछ प्रमाण मुझे यहां प्रत्र्स्तुत करना हैं। सिंह-द्वार की नींव खुदते ही विभाग ने अपने पत्र में अध्यक्ष महोदय को लिखा -

भारत सरकार, पुरातत्व सर्वेक्षण उप-मण्डल, सागर.

पत्र क्र.एसजीआर/एम/५/९५/१७५ दिनांक ५-६-९५

श्रीमान अध्यक्ष महोदय,
जैन मन्दिर कमेटी कुण्डलपुर, दमोह.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय : बड़ेबाबा के पास नये निर्माण कार्य रोकने बावद।

महोदय,

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि जैन मन्दिर क्रमांक १ से ५८ तक राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक हैं। मन्दिरों के पास बगैर अनुमति नये निर्माण कार्य अवैधानिक हैं। श्री बालगोविन्द शर्मा स्मारक परिचर कुण्डलपुर द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार बड़ेबाबा जैन मन्दिर के पास सिंहद्वार बावद नींव खोदी गई है।

अत: आपसे अनुरोध है कि बड़ेबाबा के पास बगैर अनुमति के किसी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं किया जाये एवं विस्तृत जानकारी पुरातत्व सर्वेक्षण भोपाल मण्डल, भोपाल को भेजने का कष्ट करें।

भवदीय, - हस्ताक्षरित.

कमेटी ने महीनों तक ऐसे पत्रों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उधर लुके- छिपे तरीके से सिंहद्वार का काम भी चलता रहा और शायद इसी बीच बड़ेबाबा मन्दिर की अगल-बगल और पीछे की दीवार गिराई गयी। इन सारी गतिविधियों की सूचना से पुरातत्व विभागके अधिकारियोंका चिन्तित होना स्वाभाविक था। विभाग ने अपने कर्मचारियों के माध्यम से बार बार कमेटी को मना किया, पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। कमेटी द्वारा इस अविचारित, अघोषित, अवैध और अस्वीकृत कृत्य ने कुण्डलपुर क्षेत्र प्रबंध कमेटी की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया और पूरी दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली कमेटी का नाम, उसके अपने ही आचरण के कारण अपराधियों की सूची में दर्ज हो गया।

राष्ट्रीय महत्व की पुरातन धरोहर के साथ बलात् हो रहे इस गम्भीर अपराध को रोकने के लिये विभाग की पहल पर, जिला प्रशासन को क्षेत्र पर धावा बोलना पड़ा। २६ सितंबर १९९५ को जिलाधीश दमोह के आदेश पर अनुविभागीय अधिकारी हटा ने सरकारी अमले के साथ कुण्डलपुर पहुंचकर सभी मन्दिरों सहित पूरे पर्वत का निरीक्षण और मन्दिरों का भौतिक सत्यापन किया। कमेटी के अध्यक्ष माननीय संतोष सिंघई को साथ लेकर यह सरकारी जांच-पड़ताल चली।

अतीत में पहले भी बड़े-बड़े राज-पुरुष और शासकीय अधिकारी यहां आते रहे हैं, पर वे सब बड़ेबाबा के चरणों में नमन करने के लिये आते थे। यह **पहली बार २६-९-९५ को घटित हुआ जब शासकीय अमला यहां कमेटी पर आरोपित किसी आपराधिक प्रकरण की जांच-पड़ताल करने के लिये आया था।** क्षेत्र के इतिहास में वह एक काला दिन था जब अपनी ही सम्पत्ति के साथ गलत व्यवहार करके, अपने ही आंगन में, हम अपनी ही मिलकियत के अपहर्ता बने, अपराधी की तरह निगाह नीची करके खड़े थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमेटी ने भले ही जांच-पड़ताल की इस घटना को अपने गौरव का प्रतीक माना हो, पर क्षेत्र के लिये निश्चित ही यह एक लज्जाजनक और अपमान जनक घटना थी। **यह लगभग वैसा ही था जैसा टेक्स-चोरी अथवा अघोषित सम्पत्ति की जांच के लिये किसी के घर-दुकान पर छापा मारा जाता है। पर, मुझे ऐसा लगता है कि हमारे अध्यक्ष महोदय को इसकी कोई लज्जा नहीं थी। शायद उनका गणित रहा होगा कि जैसे आर्थिक अपराधों को ले-देकर सलटा लिया जाता है, वैसे ही पुरातत्व विभाग के इस प्रकरण को भी निपटा लिया जायेगा।**

अनुविभागीय अधिकारी ने अपनी जांच-पड़ताल का जो ज्ञापन जिलाधीश दमोह को भेजा उसमें उस समय की स्थिति का ब्योरेवार बयान है। पाठकों की जानकारी के लिये हम उसे ज्यों का त्यों यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी हटा,

ज्ञापन क्रमांक वि.लि./९५/७९ **दिनांक ९-१०-१९९५.**

कलेक्टर दमोह,

विषय : बड़ेबाबा के पास नये निर्माण कार्य रोकने बावद.

विषयांकित संबंध में बड़ेबाबा जैन मन्दिर कुण्डलपुर क्रमांक १ से ५८ तक राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक पर नये निर्माण करने विषयक जांच नायब तहसीलदार पटेरा, राजस्व निरीक्षक, तथा मेरे द्वारा स्वयं २६-२७ सितंबर को सम्पूर्ण क्षेत्र का अवलोकन किया गया। अवलोकन की स्थिति निम्नानुसार है :

१. कुण्डलपुर क्षेत्र बड़ेबाबा के उत्तर में सीढ़ीदार रास्ता के पूर्व में सर्वे नं. ८४१९ रकबा १८.९० म.प्र. शासन (पहाड़-चट्टान) के अंश भाग में १७ बाइ ९ मीटर लम्बा-चौड़ा तथा ४ मीटर गहरा गड्ढा, सिंहद्वार बनाने हेतु क्षेत्र की कमेटी की ओर से खोदा गया है। उसमें नीचे सतह पर गिट्टी-चूना-रेत का फाउण्डेशन भरा गया है। निरीक्षण दिवस में यह ४ फुट गहरा गड्ढा शेष अभी भी है। बिना पूर्वानुमति एवं अतिक्रमण करने की दशा में कार्यवाही प्रथक से नायब तहसीलदार पटेरा के न्यायालय में लम्बित है, जिसे शीघ्र पूर्ण करने एवं आदेश पारित करने नायब तहसीलदार पटेरा को निर्देशित किया गया है।

२. कण्डिका १ में वर्णित गड्ढे के पश्चिम में पूर्व से निर्मित सीढ़ीदार रास्ता है, जिसके दोनों किनारों पर सुरक्षा की दृष्टि से, पूर्व से निर्मित बाउण्ड्रीवाल का १३ मीटर लम्बा एवं ३ मीटर ऊंचा हिस्सा सिंहद्वार निर्माण के उद्देश्य से तोड़ दिया गया है। निरीक्षण दिवस को पत्थर तराशने के उद्देश्य से २४ मिस्त्री पाये गये जो आगरा से आये हुए थे।

३. बड़ेबाबा मन्दिर के पूर्व की ओर स्थित चबूतरा ३० बाइ २ मीटर एवं ऊंचाई ५ मीटर का हिस्सा जीर्ण होने से तोड़ दिया गया। इस संबंध में वहां क्षेत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमेटी अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई द्वारा स्पष्ट किया गया कि चबूतरे में पानी आने लगा था तथा चबूतरा की दीवार फट रही थी, अतः तीर्थ यात्रियों के आवागमन एवं उनकी सुरक्षा दृष्टि से दीवाल को तोड़ा गया है। शेष सभी मन्दिर सही हालत में एवं पूर्व स्थिति में हैं।

४. क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई द्वारा जानकारी दी गई कि बड़ेबाबा का बहुत प्राचीन मन्दिर है। पूर्व में उसकी मरम्मत भी नहीं हुई है। क्षेत्र पर हजारों यात्रियों का आना जाना होता है। पुरानी इमारत से कहीं कोई घटना घटित न हो, इस उद्देश्य से कमेटी ने मन्दिर जीर्णोद्धार करने का विचार किया है, जिसके संबंध में स्वीकृति लेने हेतु कार्यवाही की जानी है , तथा **निर्माण कार्य शासन की स्वीकृति से किया जायेगा।**

५. बड़ेबाबा मन्दिर के पीछे दक्षिण दिशा में मन्दिर से लगभग ७० मीटर दूर ग्राम तिरगढ़ पहारी हल्का नं. ५५ के सर्वे नं. १, (पहाड़-चट्टआन म.प्र. शासन) की भूमि में कुण्डलपुर कमेटी की ओर से ठेकेदार कपूरचन्द तनय किशोरीलाल साकिन जरुआखेड़ा द्वारा ७० बाइ १५ मीटर में खदान बनाकर पत्थर (सिलाएं) निकाली जा रही हैं। इनकी लम्बाई-चौड़ाई १.५० बाइ ०.५० मीटर लगभग है एवं मोटाई ०.२५ मीटर है। निरीक्षण के समय १५८ सिलाएं खदान से तथा एक ट्रक जुड़ाई के पत्थर व ७५ सिलाएं निर्माणाधीन स्थल सिंहद्वार के समीप पाई गईं। स्थल पर ३ ट्रक रेत भी रखी हुई पाई गई। उक्त खनन के संबंध में क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई ने बताया कि इसकी स्वीकृति पूर्व में ली गई है, जो कि उनके निवासस्थल दमोह में रखी हुई है। उसकी वास्तविकता खनिज शाखा दमोह से लिया जाना उचित होगा।

विस्तृत प्रतिवेदन आवश्यक कार्यवाही हेतु सम्प्रेषित है।

हस्ताक्षर,

(अनुविभागीय अधिकारी, हटा)

अनुविभागीय अधिकारी के ९-१०-९५ के इस जांच प्रतिवेदन में अध्यक्ष श्री सिंघई का जो बयान दर्ज किया गया है। इसमें उन्होंने कहा है -

१. बड़े बाबा मन्दिर के पूर्व स्थित चबूतरा (मण्डप) इसलिये तोड़ा गया है. क्योंकि चबूतरे में पानी आने लगा था तथा चबूतरे की दीवाल फट रही थी। लेकिन बड़ेबाबा मन्दिर के शेष सभी भाग और अन्य सभी मन्दिर, सही हालत में एवं पूर्व स्थिति में हैं।

२. बड़े बाबा मन्दिर बहुत प्राचीन है। पूर्व में इसकी मरम्मत नहीं हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३. *कोई अचानक घटना घटित न हो, इस उद्देश्य से कमेटी ने मन्दिर जीर्णोद्धार करने का विचार किया है।*

४. *मन्दिर जीर्णोद्धार के संबंध में स्वीकृति के लिये कार्यवाही की जाना है, तथा निर्माण कार्य शासन की स्वीकृति से ही किया जायेगा।*

माननीय अध्यक्षजी ने बड़ेबाबा मन्दिर के मण्डप को गिराये जाने का औचित्य बताने के लिये अपने कथन में यह झूठ कहा है कि *'पूर्व में मन्दिर की मरम्मत नहीं हुई'।* वे जानबूझ कर इस बात को छिपा गये हैं कि १९७९-८० में साहु परिवार के कई लाख रुपये के व्यय से *मन्दिर के शिखर की पर्याप्त मरम्मत कराई जा चुकी है, और मन्दिर का वह भाग बहुत मजबूत है। अब सैकड़ों साल तक उसे किसी मरम्मत या जीर्णोद्धार की आवश्यक्ता नहीं है। मन्दिर का शिखर गिराते समय उसकी मजबूती आप सबने स्वयं देखी और अनुभव की होगी। उस स्थिति का चित्र स्वयं सचाई सामने रख रहा है।*

सितम्बर में ही, भोपाल मण्डल के अधीक्षक पुरातत्वविद् श्री अशोककुमार सिन्हा ने स्वयं कुण्डलपुर का भ्रमण किया। उन्होने स्वयं कमेटी से विस्तृत चर्चा करते हुए यह स्पष्ट समझाइस दी कि इस प्रकार अनुभवहीन लोगों के माध्यम से कार्य कराने पर इन अनमोल स्मारकों को हानि होने की आशंका है, *अतः आपको जो भी काम कराना हो वह पुरातत्व विभाग का तकनीकी परामर्श और दोस्ताना सहमति लेकर ही किया जाना चाहिये।* फिर वापस जाकर श्री सिन्हा ने अध्यक्षजी को एक बहुत ही महत्वपूर्ण पत्र लिखा। पर आपने न तो उनके कहने पर ध्यान दिया और न.ही उनके पत्र का कोई आदर किया। यहां हम अपने पाठकों की जानकारी के लिये वह पत्र भी प्रस्तुत कर रहे हैं -

भारत सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल

क्रमांक : १८/१६/८४/७७९९ दिनांक : १-१२-९५

प्रति, अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र कुण्डलगिरि,
कुण्डलपुर, जिला-दमोह मप्र.

विषय : *राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारक बड़ेबाबा का मन्दिर कुण्डलपुर की प्राचीन दीवार एवं इसके एक भाग को गिराकर पुनर्निर्मित करने के विषय में*

महोदय,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि कुण्डलपुर स्थित १ से लेकर ५८ संख्या तक के जैन मन्दिर भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के घोषित किये गये हैं , तथा इनकी सुरक्षा एवं संरक्षण की जिम्मेदारी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की है। किन्तु इसके बावजूद भी सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर की प्रबंध समिति ने बड़ेबाबा के मन्दिर के एक भाग को, वगैर महानिदेशक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,जनपथ, नई दिल्ली की स्वीकृति प्राप्त किये, गिरा दिया है। यह प्राचीन स्मारक पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष एक्ट १९५८ तथा तत्संबंधी अधिनियम १९५९ के तहत अनियमित एवं गैर कानूनी है।

इसके अतिरिक्त यह भी तथ्य प्रकाश में आया है कि प्रबंध समिति ने बड़ेबाबा मन्दिर के सामने सिंहद्वार निर्मित करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में सितम्बर माह में मैने अपने कुण्डलपुर प्रवास के दौरान भी चर्चा की थी तथा उस स्थल का भी निरीक्षण किया था जहां यह द्वार प्रस्तावित है। चूंकि यह स्थल संरक्षित स्थल के निषिद्ध क्षेत्र के अंतर्गत आता है। अत: यह आवश्यक है कि आप निर्माण प्रारम्भ करने के पूर्व महानिदेशक भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण, नई दिल्ली के तृतीय अनुसूची के फार्म (१) में अनुरोध प्रेषित करें। फार्म के साथ स्थल का मानचित्र तंथा प्रस्तावित निर्माण के चित्र भी संलग्न किया जाना आवश्यक है। इस संबंध में आपसे विनम्र अनुरोध है कि जब तक आपको इस निर्माण करने हेतु स्वीकृति नहीं प्राप्त हो जाती, कृपया निर्माण कार्य प्रारम्भ न करें।

उपरोक्त एक्ट के अनुच्छेद १९(१) तथा (२) के अंतर्गत प्रावधान-

१९(१) कोई भी व्यक्ति जिसके अंतर्गत संरक्षित क्षेत्र का स्वामी या अधिभोगी भी है, संरक्षित क्षेत्र के भीतर किसी भवन का सन्निर्माण, या ऐसे क्षेत्र में कोई खनन, खदान क्रिया उत्खनन, विस्फोट या इसी प्रकार की कोई संक्रिया नहीं करेगा, और न केन्द्रीय सरकार की अनुशंसा के बिना ऐसे क्षेत्र या उसके किसी भागका उपयोग किसी अन्य रीति से करेगा।

परन्तु इस उपधारा की कोई भी धारा ऐसे किसी क्षेत्र या उसके भाग का खेती करने के प्रयोजनों के लिये उपयोग प्रतिषिद्ध करने वाली नहीं समझी जायेगी, यदि ऐसी खेती से एक फुट से अधिक मिट्टी का खोदना नहीं होता हो।

(२) केन्द्रीय सरकार आदेश द्वारा यह निर्दिष्ट कर सकेगी कि संरक्षित क्षेत्र के भीतर उपधारा (१) के उपबंधों के उल्लंघन में किसी व्यक्ति द्वारा सन्निर्मित किसी भवन को विनिर्दिष्ट कालावधि के भीतर हटा दिया जाये, और यदि वह व्यक्ति आदेश के अनुपालन से इंकार करता है, या करने में असफल है, तो कलेक्टर उस निर्माण को हटवा सकेगा और ऐसी हालत में वह व्यक्ति ऐसे हटाये जाने के खर्च के संदाय के लिये दायी होगा।

आपसे यह भी अनुरोध है कि भविष्य में कुण्डलपुर स्थित संरक्षित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मारकों में किसी भी प्रकार का आधुनिक निर्माण कार्य वगैर अनुमति के न करें। कभी भी आप ऐसा समझते हों कि संरक्षित स्मारकों की मरम्मत आदि आवश्यक है, तो कृपया भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को अवश्य विश्वास में लें।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के भोपाल मण्डल की ओर से मैं आपको आश्वासन देता हूं कि आपके द्वारा प्रस्तावित संरक्षण अथवा मरम्मत आदि संबंधी कार्यों पर नियमानुसासर तत्काल कार्यवाही की जायेगी।

कृपया भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को इन राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारकों की ऐतिहासिकता एवं पुरातात्विक महत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने में हर सम्भव सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। हमें आशा है कि आपके सहयोग से हम अपना काम बखूबी कर सकेंगे।

भवदीय,

(अशोक कुमार सिन्हा)

अधीक्षण पुरातत्वविद्

पुरातत्व अधिकारी के इस पत्र से यह बात समझी जानी चाहिये कि पुरातत्व अधिकारी निहायत नरमी और विनय के साथ हमारी प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिये हमारा सहयोग चाहते हैं। उनका काम बड़ी जिम्मेदारी का है, पर हम स्वयं ही अपनी धरोहर का विनाश करने पर तुल जायें तो उसे कौन बचा सकता है ? माननीय अध्यक्षजी, आपकी कमेटी ने न तो श्री सिन्हा को दिये गये वचन की लाज रखी और न ही उनके इस पत्र पर ध्यान दिया। उधर बड़ेबाबा के मन्दिर को गिराने-मिटाने का आपका धार्मिक (?) अभियान बराबर चलता रहा और इस प्रकार एक साल बीत गया।

हमसे भी मांगा गया था मंतव्य –

इस बीच विभाग के पत्र, नोटिस और स्टे-आदेश आपके पास आते रहे और आप लगातार उनकी उपेक्षा करते हुए, कायदे-कानून को, और नैतिकताको मुंह चिढ़ाते रहे। तब राजस्व अधिकारियों ने कुछ कड़े कदम उठाने की मंशा जताई। यह वही समय था जब आपने हमें फोन करके और २३-८-९६ को पत्र लिखकर इस प्रकरण में पुरातत्व विभाग से निपटने का उपाय पूछा। हमने २६-अगस्त ९९ के अपने पत्र में आपको अब तक होती आई आपकी भूल का संकेत किया और श्रीक्षेत्र के हित का ध्यान रखते हुए विभाग के परामर्श पर उचित और वैधानिक रूप से काम करने का स्पष्ट परामर्श दिया था।

हमारा परामर्श यद्यपि क्षेत्र और कमेटी की प्रतिष्ठा बचाने का एक सम्मानपूर्ण उपाय था, परन्तु उसे मानने के लिये जो नैतिक साहस चाहिये था, वह शायद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप नहीं जुटा पाये इस लिये हमारे उस पत्र की भी वही गति हुई जो पुरातत्व विभाग के पत्रों की होती आई थी। यह व्यवहार, आपके हठाग्रह का एक नायाब नमूना था। हमने उस पत्र में आपको लिखा था-

नीरज जैन, शान्ति सदन, सतना. म.प्र.

सतना, २६-८-९९

प्रिय संतोष सिंघई जी,

सादर जयजिनेन्द्र.

- 'भोपाल में केन्द्रीय पुरातत्व सर्वेक्षण कार्यालय से पूरे नोटिफिकेशन निकलवा कर, उनका अधययन कर, इस प्रकरण का निपटारा कर लेना चाहिये। नोटिस टालते रहना या प्रकरण लटकाते रहना क्षेत्र के हित में नहीं है।

कमेटी के रिकार्ड में कुछ पुराने संदर्भ हों तो निकलवाना चाहिये। इनके नोटिस-पत्रों आदि के उत्तर देने में सावधानी रखनी चाहिये। आपने विभाग को अपने उत्तर में लिख दिया है कि **'हमने मन्दिरों में कभी कोई मरम्मत आदि नहीं कराई'। आपका यह लिखना गलत हुआ है। हमें तो क्लेम करना चाहिये कि इनकी मरम्मत आदि की सारी जवाबदारी सदा से हमारी रही है, हमने ही कराई है, और पुरातत्व विभाग ने मरम्मत जैसा यहां कभी कुछ नहीं कराया।**

बड़ेबाबा मन्दिर के शिखर पर पूरा काम अभी १०-१२ साल पहले साहुजी के द्रव्य से हुआ है। वह हमारा अधिकार था, हमने कराया, इसे कहना चाहिये, छिपाना नहीं चाहिये।

खजुराहो में पार्श्वनाथ मन्दिर प्रकरण को लेकर, तथा शान्तिप्रसाद जैन संग्रहालय के निर्माण को लेकर भी, हमें दिल्ली तक लड़ना पड़ा था। यह सब वहां के अध्यक्ष श्री दशरथ जैन एडवोकेट छतरपुर की अध्यक्षता में हुआ है। उनकी भी राय आप ले सकते हैं। पूरा रिकार्ड मिले तो विभाग के नोटिसों के जवाब हम भी तैयार कर सकते हैं, पर उसे वकील की राय लेकर ही पुरातत्व विभाग को, व रेवेन्यू अधिकारियों को भेजा जा सकता है। पर यह सब पूरी तैयारी और चिन्ता के साथ किया जाना चाहिये। यह क्षेत्र पर हमारे स्वत्व का प्रश्न है,। हम ढीले रहे तो पराधीन हो जायेंगे। अब भी समय रहते आपकी कमेटी सावधान हो जाये तो अच्छा है।

धन्यवाद सहित,

शुभाकांक्षी,

(नीरज जैन)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब इस पत्र को पढ़कर आप स्वयं विचार कीजिये सिंघईजी, कि यदि आप समय रहते पुरातत्व विभाग का परामर्श सुन लेते, या हमारे पत्र पर ही विचार कर लेते तो -

१. आपकी कमेटी सिंहद्वार के अपव्यय और अपयश से बच जाती।

२. धर्म क्षेत्र पर हजारों हरे-भरे वृक्षों का विनाश बच जाता।

३. बड़ेबाबा के मन्दिर का शिखर अकाल मृत्यु से बच जाता। और

४. बड़ेबाबा के आंगन के उन चार मन्दिरों और बड़ेबाबा मन्दिर की दो वेदियों को अभी और कुछ सौ सालों के लिये जीवन दान मिल जाता जिनका अस्तित्व आपकी कमेटी ने मिटा दिया है।

एक बार यह भी तो सोचिये कि झूठ और छल का सहारा लेकर आपने सिद्ध क्षेत्र पर यह जो महा-विनाश किया है, उससे श्रीक्षेत्र का क्या हित हुआ है और आपको या आपके सहयोगियों को आखिर क्या मिला ?

जवाब देना होगा आपको –

आपको मालूम होगा, या मालूम होना चाहिये भाई साहब, कि देव और देवालय की सत्ता को कानून में परिपूर्ण व्यक्ति मानकर उन्हें अवयस्क व्यक्ति (नाबालिग नागरिक) की मान्यता दी गई है। **उनके साथ किया गया सारा व्यवहार अपने आप ट्रस्टीशिप कानून के अंतर्गत आ जाता है।** और आपको यह भी मालूम होगा, या मालूम होना चाहिये, कि नाबालिग के हित की रक्षा हर ट्रस्टी का निजी दायित्व है, और ट्रस्टीशिप की भावना के विरुद्ध आचरण करके नाबालिग की हित-हानि एक भयंकर, निंदनीय और दण्डनीय अपराध है।

यदि यह बात सत्य हो तो समय रहते इस चक्र से अपने आपको बाहर निकालिये और समय रहते इस पातक का प्राश्चित कर लीजिये। इस लोक और परलोक के न्यायालयों में आपको इस अभियोग का जवाब देना पड़ेगा। अंतर इतना ही है कि यहां आपके बचाव लिये वकील और गवाह मिल जायेंगे, किन्तु परलोक में ऐसी कोई सुविधा नहीं होगी।

तमाम उम्र जो खटकेंगे वो सवाल हैं ये,
जो टाल सकते हो इनको, तो टाल कर देखो।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारे खिलाफ निन्दा प्रस्ताव

आपत्ति-जनक क्या था हमारे उस पत्र में ? -

मैने अपनी पुस्तक के इस संस्करण में प्रीकशत करने के लिये कमेटी से पर्वत की पूरी योजना की जानकारी मांगी थी। मैं अभी भी समझ नहीं पा रहा हूं कि मेरे उस पत्र में ऐसा क्या था जिसके लिये मेरे खिलाफ निन्दा-प्रस्ताव जैसा अपमान-जनक कदम उठाने की आवश्यक्ता पड़ गई।

मैंने आपसे यही तो पूछा था कि आखिर आपकी योजना क्या है ? अधिकारों के बल पर मदांध होकर, ऐसे और कितने मन्दिरों का बलिदान आप करना चाहते हैं ? आपसे यही पूछने का दुस्साहस निन्दनीय अपराध हो गया ? मन्दिर गिराना निन्दनीय नहीं है, उसके बारे में पूछना निन्दनीय हो गया, आज समाज आपसे इसका उत्तर मांगता हैं, कल समय जवाब मागेगा और परसों कानून आपसे जवाब तलब करेगा। अंत में कर्म तो आपको दण्डित करेगा ही।

आज मैं प्रत्येक आस्थावान भाई बहिन से यह कहना चाहता हूं कि अगर हम और आप अपनी प्राचीन घरोहर का विनाश ऐसे ही बर्दाश्त करते रहे तो हमारा कौन सा मन्दिर, या कौन सा तीर्थ सुरक्षित रह पायेगा ? तब हमारा कर्तव्य क्या है? एक बार मन्दिर में बैठकर तटस्थ भाव से विचार कीजिये। समाज की जानकारी के लिये कमेटी को लिखा वह पत्र मैं यहां प्रस्तुत करता हूं ताकि समाज स्वयं उसके औचित्य और अनौचित्य का निर्णय कर सके ।

नीरज जैन, शान्ति सदन, सतना. म.प्र.

२१-८-९९

श्री अध्यक्ष/मंत्री जी महोदय,

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र प्रबंधकारिणी कमेटी, कुण्डलपुर.

प्रिय महोदय,

सादर जयजिनेन्द्र

गत तीन चार पीढ़ियों से हमारा परिवार कुण्डलपुर का और विशेषकर बड़े बाबा का भक्त रहा है। इसके पहले भी हमारे पूर्वज अवश्य रहे होगे पर उसकी जानकारी हमें नहीं है। मुझे यह सौभाग्य मिला कि सन १९४७ से मैं श्रीक्षेत्र की प्रबंधन व्यवस्था से जुड़ा रहा। सर्वश्री गोरेलाल सिंघई, श्री राजाराम बजाज, श्री रूपचन्द बजाज, श्री भागचन्द इटौरया, पण्डित जगन्मोहनलालजी, डा. शिखरचन्द, प्रकाशचन्द सिंघई और बाबू ताराचन्द जी आदि सभी अध्यक्षों आर कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे मिलता रहा है। मैने १९४९ में श्रीक्षेत्र का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काव्यमय इतिहास और पूजन लिख कर लगातार अब तक अपनी ओर से प्रकाशित और वितरित कराया है। इस प्रकार मैं भी बड़े बाबा का, बड़ा तो नहीं, पर, एक छोटा सा सेवक और भक्त रहा हूं, और अगली पर्याओं में भी रहूंगा।

इधर आप सब साधर्मी साथियों के कार्यकाल में बड़ेबाबा के प्राचीन, विख्यात, सुदृढ़ और लोकपूज्य, लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं के श्रद्धा-केन्द्र तथा हमारे पूर्वजों की दुर्लभ धरोहर स्वरूप उस बड़े बाबा मन्दिर को ध्वस्त किया जा रहा है, यह जानकर मुझे और मेरे जैसे अनगिनत भक्तों को दुख हुआ है। एक भी ऐसा श्रावक मुझे नहीं मिला जिसने इस कार्य के प्रति अपनी सहमति या अनुमोदना जताई हो। मुझे लगता है कमेटी का यह कार्य किसी भी दृष्टि से श्रीक्षेत्र के हित में नहीं है, बल्कि उससे श्रीक्षेत्र की प्रतिष्ठा की हानि ही होने की आशंका है।

कुछ वर्षों पूर्व बड़े बाबा मन्दिर के मात्र मण्डप को विस्तारित करके कुछ अधिक लोगों के वहां बैठने की सुविधा कर देने की योजना समाज के सामने व्यक्त की गई थी और उस कार्य के लिये प्रवचन हाल में एकत्र समाज से अनेक बार अर्थ-सहयोग एकत्र किया गया था। अनेक बार मैने भी इस तरह राशि जुटाने में सहयोग किया था। उसमें मन्दिर के जीर्णोद्धार की ही बात हमेशा रही, भगवान के गर्भालय को या शिखर को छूने तक की कल्पना कभी नहीं की गई थी। मन्दिर को गिराने की बात किसी के द्वारा, कभी नहीं कही गई।

जब आप लोगों ने जीर्णोद्धार का काम शुरू किया और उस बहाने मन्दिर के सामने सिंहद्वार के नाम से एक अवांछित तथा सर्वथा अनुपयुक्त निर्माण, समाज की अनुमोदना तथा पुरातत्व विभाग की सहमति के बिना प्रारम्भ किया, तब १९९५-९६ में विभाग ने उस पर आपत्ति उठाकर आपको काम बंद करने को लिखा था। उस समय विभाग की आपत्तियों, तथा निर्माण पर लगाई गई रोक को निरस्त कराने के लिये आपने मेरा सहयोग और मेरा मंतव्य चाहा था। उस संदर्भ में आपके जो पत्र मेरे पास आये उन में भी केवल जीर्णोद्धार की ही बात थी, मन्दिर को नष्ट करने की बात उस समय तक कहीं नहीं थी। बड़े बाबा को सरकाने की कल्पना तो शेखचिल्ली के लड्डू हैं। कल्पना में चाहे जो कोई उसका स्वाद ले ले, पर उनकी जड़ें बड़ी गहरी हैं, पर्वत पर भी और भक्तों के दिल में भी। वे अचल-प्रतिष्ठित हैं और किसी के भी सरकाये सरकने वाले नहीं हैं।

बाद में कब, किसके परामर्श पर, किस योजना के तहत, किसके अनर्थकारी द्रव्य-सहयोग से, उस अत्यंत दुर्लभ मन्दिर को आप लोगों ने अकारण नेस्त-नाबूद करने का कदम उठाया, शिखर तोड़ा और परिकर के जिनालयों-वेदियों को नष्ट कर दिया, यह बात कभी सामान्य जनों को सूचित नहीं की गई। इसका कोई औचित्य आज तक किसी की समझ में नहीं आया कि किस अभिप्राय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से यह अनर्थ किया गया ? इस मनमाने ध्वंस और अविचारित निर्माण के आय-व्यय का लेखा भी समाज के सामने नहीं आया। आप लोगों की इस अवांछित गोपनीयता ने समाज में एक भ्रान्ति और बेचैनी का वातावरण बना दिया है। आज जगह-जगह बड़े बाबा के भक्त उनकी कुशल-कामना के लिये प्रार्थनाएं कर रहे हैं, मालाएं फेर रहे हैं और उन पर आये इस उपसर्ग के दूर होने तक के लिये त्याग और नियम लेकर बैठे हैं।

मन्दिर के कलश की चमक और शिखर का दर्शन होने से जिस प्रकार दूर-दूर तक कल्याणकारी वातावरण बनता है, उसी प्रकार मन्दिर का कलश-पात और शिखर-ध्वंस दूर-दूर तक, लम्बे समय तक भारी अकल्याण का कारण बनता है। हम सब बाल-बच्चों और नाती-पोतों वाले गृहस्थ लोग हैं, अतः हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिसका आगे चलकर हमें व हमारे परिवार को दुष्फल भोगना पड़े। समाज पर भी ऐसे कार्यों का दुष्प्रभाव होता ही है।

मेरी तुच्छ बुद्धि में अपनी कमेटी मात्र 'प्रबंध कारिणी कमेटी' है। श्री क्षेत्र की सेवा-व्यवस्था करना ही उसका कार्य है। श्रीक्षेत्र की शोभा कहे जाने वाले बड़ेबाबा जिनालय जैसे मजबूत, सुन्दर और भव्य मन्दिर को अकारण ध्वंस कर देना न तो किसी भी प्रकार कमेटी के कर्तव्यों में शामिल है, और न ऐसा करने का उसे कोई अधिकार है। आपका यह कदम अधिकारों का अतिक्रमण है और श्रीक्षेत्र के लिये हितकर नहीं, अहितकर ही है।

हम सब लोग जिन्हें पुण्य योग से ऐसे क्षेत्रों आदि की सेवा करने का अवसर मिला है, बहुत भाग्यशाली हैं, परन्तु हमें अपने कार्यकाल में कभी अपने अधिकार-क्षेत्र का अतिक्रमण नहीं करना चाहिये तथा कोई ऐसा काम नही करना चाहिये जिससे समाज की भावनाओं को ठेस लगे और बाद में समाज हमें अप्रिय रूप में स्मरण करे। आज करेंगे तो कुछ लोग परन्तु उसका प्रतिफल समाज को और हमारी पीढ़ियों को भोगना पड़ेगा।

मुझे लगता है कि अभी कमेटी को अपनी भूल सुधारने का पर्याप्त अवसर है। आप सभी भाइयों को इस प्रसंग पर, वहीं पर्वत पर ही, बड़े बाबा के सामने कमेटी की बैठक बुलाकर, अनाग्रही मन से पुनर्विचार करना चाहिये। योजना के गुण-दोषों पर विचार-विमर्श करके अपने निर्णय को अनुमोदना के लिये समाज के समक्ष प्रस्तुत कर देना चाहिये। इस ऐतिहासिक आत्मघाती भूल को सहज भाव से, स्वीकार करके उसका कोई विकल्प निकाल लेना चाहिये। इसे किसी की भी प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाना चाहिये। हम जो करेंगे उसका फल दूसरा कोई नहीं भोगेगा। यदि जिनायतन के इस विनाश-यज्ञ में आपकी असहमति कारगर नहीं होती तो आप अपने आपको कमेटी से अलग करके इस पातक से बच सकते हैं। कभी-कभी ऐसा भी करना पड़ता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं इस विनाश की कथा को जोड़कर श्रीक्षेत्र के मेरे लिखे इतिहास का अब पुनर्लेखन करना चाहता हूं। हमेशा की तरह मैं कोशिश करूंगा कि मेरी लेखनी के माध्यम से कोई गलत, विपरीत अथवा भ्रामक बात मेरे पाठकों तक न पहुंचे। इस प्रयास में मुझे आप सबका तथा कमेटी का सहयोग चाहिये। इसलिये मैं इस पत्र द्वारा कमेटी से सविनय प्रार्थना करता हूं कि बड़े बाबा मन्दिर का जो भी भविष्य आपने तय किया हो, उसके लिये जो भी नक्शा या प्लान तैयार किया गया हो, पूरे विवरणके साथ वह मेरे उपरोक्त पते पर यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

मेरी 'गोमटेश-गाथा' और 'सोनगढ़-समीक्षा' आदि के माध्यम से आप मेरी लेखकीय प्रकृति से परिचित हैं । मैं अपने लेखन के प्रति ईमानदारी वर्तते हुए अपने पाठक के समक्ष वास्तविक तथ्य परोसना ही पसंद करता आया हूं। यह सावधानी मैं इस प्रस्तावित लेखन के प्रति भी रखना चाहता हूं, इसलिये कमेटी से, और आप सब सज्जनों से अलग-अलग भी, मेरी करबद्ध विनय है कि बड़ेबाबा मन्दिर का जो-जैसा भविष्य आप लोगों के द्वारा तय किया गया हो, उसके लिये आपकी जो भी योजनाएं व प्लान हों, उन सबकी पूरी जानकारी, प्लान की छाया प्रतियों के साथ, आप मेरे उपरोक्त पते पर रजिस्टर्ड पोस्ट से मेरे खर्च पर भिजवाने की कृपा करें । इसके लिये अपने शेष जीवन भर मैं कमेटी का, तथा आप सबका आभारी रहूंगा।

मैं समझता हूं कि बड़ेबाबा का छोटा-सा भक्त और दिगम्बर जैन समाज का सदस्य होने के नाते अपने क्षेत्र के बारे में यह सारी जानकारी प्राप्त करने का मुझे अधिकार है और मेरी आकांक्षा की पूर्ति करना कमेटी का दायित्व है। मेरी समझ से दो मास का समय इस कार्य के लिये पर्याप्त होगा। कृपया प्रयास करें कि उक्त अवधि के भीतर ही मेरी आशा पूरी हो और सभी वांछित सामग्री मुझे उपलब्ध करा दी जाये । आप यदि इस विषय में मुझ से कोई जानकारी चाहें तो स्वागत है। कृपया इस पत्र की पावती अबिलम्ब दे दें। एक बार पुनः अभिवादन धन्यवाद तथा शुभकामनाओं सहित;

सदैव आपका शुभानुध्यायी,

(नीरज जैन)

यह था वह पत्र जिसका उत्तर देने के स्थान पर मेरे खिलाफ निन्दा प्रस्ताव प्रसारित किया गया। इसके बारे में मुझे यहां कुछ नहीं कहना । मैं अन्यत्र कह चुका हूं कि समाज की सत्ता मेरे लिये सर्वोपरि है, और हर जगह पंचों के मुंह से परमेश्वर बोलते हैं। पंचायत की गरिमा के साथ पंचायत बैठे, मुझे भी पंचायत के सामने अपना प ि रखने का अवसर मिले तब पंचायत का जो निर्णय हो, मुझे सहर्ष स्वीकार होगा। यहां मुझे आपसे इतना ही कहना है कि पंचायत के नाम पर ऐसी धोखाधड़ी करके आपने कोई सराहनीय काम नहीं किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपने मेरे खिलाफ एक निन्दा प्रस्ताव सारे देश में प्रचारित किया है, इस संबंध में आपको यह समझना चाहिये कि मेरे जैसे संकल्पित व्यक्ति को चुप कराने के लिये यह कोई कारगर औजार नहीं है। आपके इस प्रस्ताव ने मेरी छवि को जितना धूमिल किया है उसका हिसाब तो मैं उपयुक्त जगह पर आपसे करूंगा, पर अभी इतना बता दूं कि आपने इस अशोभन कृत्य के माध्यम से अपनी विक्षुब्ध मानसिकता को ही समाज के सामने बेपर्दा करके प्रस्तुत किया है। वह कागज का टुकड़ा मेरा रेखा चित्र नहीं है, वह तो आपकी हताश और विकृत मानसिकता की तस्वीर है । आप इने-गिने द्वेष-प्रेरित लोगों ने इस जाली प्रस्ताव के द्वारा दमोह नगर की भर नहीं, दमोह जिले की पूरी जैन समाज को बदनाम करने की भी साजिश की है। यह छल-कपट निन्दनीय है, और निन्दनीय प्रयत्नों से की गई निन्दा सभ्य समाज की पद्धति नहीं है।

पंचों के मुख से परमेश्वर बोलते हैं -

मेरी मान्यता है कि व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो, समाज के सामने उसकी औकात एक छोटे बालक की ही होती है, और समाज कितना ही छोटा क्यों न हो वह व्यक्ति के लिये माता पिक्ता के समान है। मुझे पंचायत की शक्ति पर और पंचायती न्याय पर पूरी आस्था है। आप मेरी निन्दा के लिये विधिवत पंचायत की बैठक बुला लीजिये। पंचायत निर्णय लेने के पूर्व मुझे बचाव का अवसर देगी। मुझे सुनने के बाद दमोह की पंचायत जो भी निर्णय करे मैं उसे शिरोधार्य करूंगा। आप अपने मन की भड़ास भले ही निकाल लें, पर इसके लिये पंचायत शब्द को बदनाम क्यों कर रहे हैं ? जिस समुदाय में यह जाली निन्दा प्रस्ताव रचा गया, क्या वह दमोह जिले की पंचायत थी ? क्या सचमुच पंचायत की यही पद्धति है आपके गांव में ?

यह एक पांती में दो भांती क्यों ?

आपने अपने निन्दा प्रस्ताव में, जी हां, वैसे तो वह निन्दा प्रस्ताव मेरे खिलाफ है, परन्तु कहा तो यही जायेगा कि, आपने अपने निन्दा प्रस्ताव में, मेरा नाम लेकर मेरी तीव्र भर्त्सना तो कर दी, परन्तु उसी पंक्ति में आपने एक ऐसी कायरता का वाक्य लिख दिया है, जैसा कोई पंचायत कभी नहीं लिख सकती। आपने लिखा है - ***वहीं नगर के दो एक जिद्दी व दुराग्रही व्यक्तियों द्वारा की गई व्यवधान-परक कार्यवाही की भी निन्दा की गई।'***

पूरी दमोह जिले की जैन पंचायत को बदनाम करने वाली इस जालसाजी के प्रमुख रचनाकार श्री संतोष सिंघईजी, श्री वीरेन्द्र इटोरियाजीऔर श्री सुरेन्द्र नायकजी की परवशता और बाध्यता को मैं समझता हूं। मुझे विश्वास है कि -

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ तो मजबूरियां रही होंगी,
यों कोई बेवफा नहीं होता।

लेकिन फिर भी उनसे मैं नम्रता पूर्वक दोस्ताना लहजे में पूछना चाहता हूं कि -

१. क्या अपराधी का नाम लिये बिना उसे सजा सुना देना, दुनिया की किसी भी न्याय-पद्धति में उचित कहा जा सकता है ?

२. एक ही अपराध के लिये कुछ लोगों को दण्डित करते समय एक व्यक्ति का नाम लिखना और दूसरे लोगों को *'दो-एक दुराग्रही व्यक्ति'* लिखकर, प्रस्ताव में उनका नाम दर्शाये बिना, *'उनके द्वारा की जा रही व्यवधानात्मक कार्यवाही की भी निन्दा की गई'*_ ऐसा कपट वाक्य लिखना आपकी किस मानसिकता का परिचायक है ? क्या यह एक पांती में दो भांती नहीं ?

३. नगर के उन *'दो-एक जिद्दी और दुराग्रही'* व्यक्तियों के आपने नाम क्यों नहीं लिखे ? नाम लिखने में आपको भय क्यों लगा ? लगता है अवश्य या तो उनसे आपका कोई रिश्ता रहा होगा ? या फिर *यह नीरज नाम का बाहरी व्यक्ति हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता इसलिये इसे नाम लेकर कोसना आसान और निरापद है,* ऐसा सोच कर वह आपने कर लिया। पर जब आपके अपने ही नगर के कुछ लोगों का प्रसंग आया तब आप अपने पंच पद से फिसल गये ? जब आपको उन जिद्दी लोगों के रूप और बल की याद आई तब भयभीत होकर, आपने अपराधियों का नाम लिखे बिना उनकी सजा लिख दी ?

वाह री आपकी पंचायत, और धन्य है आपका यह बेनामी फैसला। अभी तक बेनामी लेनदेन ही सुनने में आते थे, अब आपने बेनामी फैसला भी लिखकर दिखा दिया। आप सचमुच महान हैं।

इस अनीति का कारण हम जानते हैं –

हम जानते हैं कि क्यों हमें इन सवालों का जवाब नहीं मिला। हमारे साथ जो अन्याय और अनीति का बर्ताव आपने किया है, उसका कारण हमें मालूम है। हमें ही क्यों हर जैन को वह मालूम होना चाहिये क्योंकि उन कारणों की सूची दो हजार साल पहले स्वामी समंतभद्राचार्य ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में लिख दी थी -**'भयाशा स्नेह लोभाच्च'**। उन्होने लिख दिया था कि श्रावक जब भी सम्यक् मार्ग से स्खलित होगा तब उसके फिसलने के कारण इन चार में से ही कोई होगें - **भय, आशा, स्नेह या लोभ**। अब इनमें से किन कारणों ने आपको अनीति के लिये प्रेरित किया है, यह जानने में हमारी कोई रुचि नहीं है।

रांग नम्बर डायल किया है आपने –

राजा जनक की सभा में, धनुष-भंग पर क्रोधित परसुराम का प्रलाप सुनकर लक्ष्मणजी की उक्ति यहां मुझे याद आ रही है। लक्ष्मणजी ने कहा था - 'महाराज,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप कहीं और अपना प्रकोप दिखाइये। हमलोग कुम्हड़ा के फूल नहीं हैं जो आपके उंगरियाने से कुम्हला जायेंगे।'

इहां कुम्हड़ बतियां कोउ नाहीं, जो तरजनि देखे कुम्हलाहीं।

भाई साहब, आप में से कोई परसुराम नहीं है। मैं भी लक्ष्मण नही हूं, पर मैं किसी और माटी का बना हूं। प्रशंसा और अभिनन्दन पाकर घमण्ड के घोड़े पर चढ़ जाना या निन्दा-अपमान की विभीषिका में भयाकुल होकर अपने संकल्प से डिग जाना और अपनी मर्यादा छोड़ देना, मेरे खून में नहीं है, मेरी पद्धति में नहीं है, और मेरे प्रातःस्मरणीय गुरु पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी महाराज ने ऐसी कायरता मुझे सिखाई ही नहीं है। वे कोई और होंगे जो निन्दा-आलोचना से विक्षुब्ध होकर अपनी मर्यादा छोड़ बैठें।

मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूं कि यदि आपने मेरी लेखनी का प्रवाह रोकने के लिये यह निन्दा प्रस्ताव प्रसारित किया है तो आपने गलत नम्बर डायल किया है। ऐसे बचकाने प्रहार मैने अपने राजनैतिक अतीतमें बहुत सहे हैं। इन प्रयत्नों से न कोई किसी को हतोत्साहित कर पाया है, और न कर पायेगा। मैं अपनी लेखनी के प्रति बेईमानी नहीं कर सकता। जब, जहां लेखनी चलाने की आवश्यक्ता होगी, जीवन की आखिरी सांस तक वह पुण्य कार्य, अपनी पूरी शक्ति और पूरी ईमानदारी से मुझे करना है। यह मेरा स्वान्तः-सुखाय परिणमन है, किसी के द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम नहीं। मेरे बड़ेबाबा के चरणों से मुझे विलग करने का सपना देखने वालों को यह शेर याद कर लेना चाहिये कि -

गुल से लिपटी हुई तितली को गिराकर देखो,
आंधियो, तुमने दरख्तों को गिराया होगा।

एक बात और कहना चाहता हूं। हम साधर्मी हैं, श्रावक हैं। हमारे बैर-भाव चिरस्थायी नहीं हो सकते। एक दिन अवश्य हमारी बुद्धि जागेगी और हमारे सोच में परिवर्तन होगा। हम अगर तने भी रहे तो कभी हमारी अगली पीढ़ी, हमारी दुर्बुद्धि पर हंसेगी और परस्पर गले मिलकर हमारे पापों का प्रयश्चित करेगी। इसलिये हमें लड़ते-झगड़ते भी अपना सौजन्य नहीं खोना चाहिये। एक दूसरे पर स्तर-विहीन प्रहार हमें शोभा नहीं देते। आप कुण्डलपुर की भलाई के लिये काम कर रहे हैं। हमारा और हमारे साथियों का भी अभिप्राय और संकल्प वही है। यदि बीच में कहीं कोई हठाग्रह है तो नरमी से उस पर बात की जा सकती है। इसलिय क्या हमें एक ऐसी सीमा नहीं बना लेनी चाहिये कि हम -

दुश्मनी जम कर करें, पर इतनी गुंजाइश रखें,
जब कभी फिर दोस्त बन जायें तो शरमिन्दा न हों।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनाना कठिन है : मिटाना आसान

श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर में पिछले पांच साल से मिटाने-गिराने और बनाने का काम लगा हुआ है । निर्माण कितना कठिन और विध्वंस करना कितना आसान होता है यह अब तक कमेटी के हर सदस्य ने भलीभांति अनुभव कर लिया होगा। शायद इसीलिये आपने यह सरल मार्ग अपना लिया कि जो-जो मन्दिर आपकी हिट-लिस्ट में आये हैं उन्हें पहले, बिना जरूरत, गिरा कर समाप्त कर दिया जाये फिर बाद में बनाना तो होता रहेगा। यदि ऐसा विचार करके ही आपने बड़ेबाबा के सुन्दर शिखर का विनाश किया है, तथा अन्य मन्दिर गिराकर नेस्त-नाबूद कर दिये हैं तो वाकई आपका सोचना सही था। *अब बनाने का काम आप नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ियां भी कर लेंगी, पर मन्दिरों को गिराने का यह पुण्य कार्य (?) यदि आप न करते तो शायद वह कभी हो ही नहीं पाता। कौन अपने हाथ से अपने पूजित, प्राचीन, सुन्दर, और मजबूत मन्दिरों पर कुदाल चलाने का दुस्साहस करता ? नवीन पीढ़ियों में शायद कोई नहीं करता।*

यदि आपका संकल्प ऐसा विनाशक न होता तो जब तक आप बड़ेबाबा को बिठाने के लिये नया चबूतरा पूरी तरह तैयार न कर लेते, तब तक उनके मन्दिर को हाथ नहीं लगाते। मैं अभी भी समझ नहीं पा रहा हूं महोदय, कि आपने बड़ेबाबा मन्दिर को गिराने की हिम्मत कैसे की ? **उस विनाश को देखकर कब्र में औरंगजेब की रूह भी कांप उठी होगी।** यदि गिराने पर तुल ही गये थे तो फिर बीच में काम रोककर उस उत्तुंग शिखर की जगह यह बौना शिखर क्यों बनवाया? जब इतनी बड़ी मूर्ति के लिये इतना छोटा मन्दिर हो ही नहीं सकता, तब इतने विशाल मन्दिर के ऊपर इतना छोटा शिखर कैसे हो सकता है ?

आजकल प्रायः ऐसा हो रहा है कि क्षेत्रों पर बिना विचारे, नव निर्माण की बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षी योजनाएं हाथ में ले ली जाती हैं। भोली समाज भी उसमें सहायक हो जाती है, बड़ी धूमधाम से काम विस्तार लिये जाते हैं, पर प्रायः योजना की अव्यावहारिकता, अनुभव-हीनता और संकल्प-हीनता के कारण वे काम बरसों तक अधूरे और अधबने पड़े रहते हैं। सामाजिक योजनाओं में स्पष्टता और पारदर्शिता का अभाव भी इसका कारण हो सकता है। मुझे लगता है कुण्डलपुर में आपकी योजना इन्हीं खामियों का शिकार हुई है। निन्दा-गर्हा का प्रयोग कभी अपने आप पर भी आपको करना चाहिये ।

ऐसी ही अनिश्चित मानसिकता में उलझा हुआ मेरा मन पिछले कई महीनों से यह जानने-समझने की कोशिश कर रहा है कि श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर जैसे तीर्थस्थान को बरबाद करने के पीछे आखिर आपका उद्देश्य क्या है ? आपके निन्दा प्रस्ताव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की धुंधली पृष्ठभूमि में, कुण्डलपुर के भविष्य के लिये तरह तरह की अच्छी और बुरी कल्पनाएं मेरे मन में उठ रही हैं। *जब पता ही न लगे कि क्या होने वाला है, तब डर लगेगा ही कि- 'कहीं ऐसा न हो जाये, कही वैसा न हो जाये'।*

कहीं कोई छिपा एजेण्डा तो नहीं है आपका ... ?

मगर ये सब अंदाजिया बातें हैं। कमेटी ने अपनी योजना कभी समाज के सामने रखी नहीं, और इस पुस्तक में प्रकाशित करने के लिये, दो माह का समय देकर पूछने पर भी मुझे आपकी कमेटी ने कुछ भी बताया नहीं। मेरें २१ अगस्त ९९ के पत्र का, जो इस पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित है, मुझे जो उत्तर मिला वह था मेरे खिलाफ कुण्डलपुर कमेटी के अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई के हस्ताक्षर से जारी किया गया 'निन्दा-प्रस्ताव'। समाज विचार करे कि ऐसी स्थिति में, कमेटी के मंतव्य को समझने के लिये, मेरे पास सिवा अंदाज लगाने के क्या उपाय था ?

मुझे अपने लेखन में अंदाज-बयानी करने का न तो शौक है, और न वह मेरी आदत है, पर मैं क्या करूं ? आज बावन साल से मैं श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर का इतिहास छापता और वितरित करता आया हूं। आज वहां जो अप्रिय और दुर्भाग्यपूर्ण घटित हो रहा है, उसे समाज के सामने रखना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं और इस पुस्तक के माध्यम से वही कर रहा हूं।

एक पुरानी कहावत है - **'जब हांथी हिरात है, तब गगरी में हांत डारने परत'**। बुन्देलखण्डी की इस कहावत का अर्थ है कि 'खोये हुए हाथी को तलाशते समय, आश्वस्त होने के लिये, घड़े में भी हाथ डाल कर देख लेने की मानसिकता बन जाती है।' मानव स्वभाव की यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसी मानसिकता में उलझा हुआ मेरा मन यही तलाशने की कोशिश क़र रहा है कि कुण्डलपुर को इस तरह बरबाद करने के पीछे आपका उद्देश्य क्या है ?

कहीं शासन देवताओं को लेकर कोई बात ... ?

बड़ेबाबा का सिंहासन एक अलग शिला का बना हुआ है। उस विशाल सिंहासन पर भगवान ऋषभदेव के शासन यक्ष गोमुख और देवी चक्रेश्वरी की एक हाथ से भी बड़ी अवगाहना वाली सुन्दर मूर्तियां बनी हैं। मैं आशंकित हूं कि कहीं बड़ेबाबा को नये मन्दिर में स्थानान्तरित करते समय इन शासन देवताओं के बारे में आपका कोई छिपा एजेण्डा तो नहीं है ? मेरी यह शंका एकदम निराधार नहीं है, क्योंकि आजकल कुछ लोग तेरापंथ और बीसपंथ का हठाग्रह करके, शासन देवताओं के पक्ष-विपक्ष में समाज को उलझाते सुने जाते हैं। आपने समाज को यह नहीं बताया कि बड़ेबाबा को नई जगह ले जाते समय उनके शासन यक्ष गोमुख और देवी चक्रेश्वरी के साथ आप क्या व्यवहार करेंगे ? उन्हें साथ में ले जायेंगे या कहीं और स्थापित करके बड़ेबाबा को कोई नई पहचान आप देना चाहते हैं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

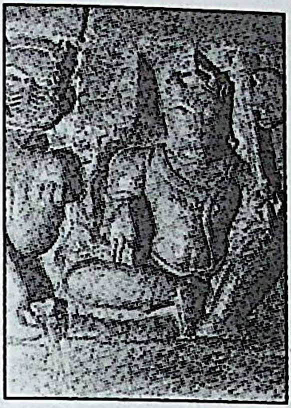
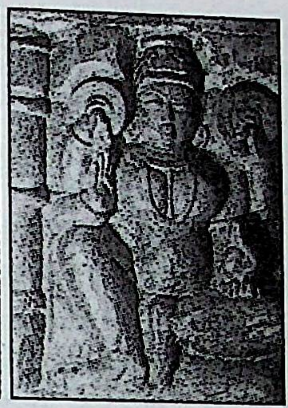

बड़ेबाबा के सिंहासन में अंकित शासन देवता गोमुख और देवी चक्रेश्वरी।
क्या अब इन से अलग स्थापित किये जायेंगे बड़ेबाबा ?

कहीं कुण्डलपुर की प्रतिष्ठा को गिराने के लिये तो नहीं ... ?.

श्रीक्षेत्र के साथ आपने जो किया है वह हम देख रहे हैं, पर अभी आगे आप क्या करने जा रहे हैं उसे देखने-जानने का हमारे पास कोई उपाय नहीं है। हमारे पत्र के लिये हमारे विरुद्ध निन्दा-प्रस्ताव का नाटक करके आपने हमें वह लिखने के लिये उत्तेजित किया है जो हम लिखना नहीं चाहते थे। अपने खिलाफ पढ़कर सबको गर्मी आ जाती है। हमारी भी सहनशक्ति अनन्त नहीं है, इसलिये हमारे अशान्त मन में ये कुशंकाएं उठना स्वाभाविक है।

पछले पचास साल में श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर का चहुंमुखी विकास हुआ है। क्षेत्रकी महिमा बढ़ती जा रही थी और उसी प्रकार उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ रही थी। पर इधर कुछ वर्षों से, न जाने क्यों, कुछ लोग क्षेत्र की प्रगति से प्रसन्न नहीं थे और इसकी प्रतिष्ठा को गिराने की कोशिश कर रहे थे। जब वे वैसा कुछ नहीं कर पाये तब पड़ोस के जिले में एक नया कुण्डलगिरि बनाकर इस क्षेत्र की महिमा को कम करने की कोशिश की गई। लेकिन बड़ेबाबा की कीर्ति पर इस सबका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उनका जयकारा उतने ही जोर से होता रहा।

श्रीक्षेत्र के प्रति ईर्षा और द्वेष से प्रेरित उस योजना का कड़ा विरोध किया था। विरोध में पहला लेख हमारा ही था। पत्र-पत्रिकाओं में भी उसके पक्ष-विपक्ष में चर्चा हुई थी। पं. फूलचन्दजी सिद्धान्त शास्त्री और पं. जगन्मोहनलालजी शास्त्री ने उस दूसरे कुण्डलगिरि के विरोध में खुलकर लिखा था जिसे श्रीक्षेत्र के मंत्री श्री खेमचन्द सराफ ने १९८५ के क्षेत्र परिचय में छापा था। बजरिया वार्ड दमोह से ही श्री टीकमचन्द सिंघई, व्याख्याता ने सारे तथ्यों को उजागर करते हुए एक पर्चा निकाला था जो आज भी हमारे सामने है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज उन सारी बातों को याद करने पर हमारे मन में बार बार यह शंका उठ रही है कि -'कहीं ऐसा न हो कि जब उस योजना में सफलता नहीं मिली तब आपकी कमेटी ने बड़ेबाबा मन्दिर को गिराकर इस क्षेत्र की गरिमा को चोट पहुंचाने का यह दूसरा तरीका ढूंढ़ा हो। यदि हमारे मन की ये दोनों शंकाएं निर्मूल हैं तो **कृपा करके बताइये न कि इस 'विनाश-यज्ञ' में अभी आप कितने मन्दिरों की आहुति और देने वाले हैं और उससे क्या परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं ? इस सबके पीछे आपका उद्देश्य क्या है ?**

बड़ेबाबा के मन्दिर का शिखर तोड़ने और अनेक पूजित मन्दिरों को जमींदोज कर देने की आपकी शर्मनाक हरकतों को जब हम याद करते हैं, तब हमें अपने मन की ये शंकाएं भयभीत करने लगती हैं। यदि ऐसा नहीं है आप अपनी पूरी योजना समज को बताते क्यों नहीं ? इतने मात्र से शंकाओं-कुशंकाओं का कोहरा छट जायेगा। बड़ेबाबा के वे अनगिनते भक्त, जो आपकी करनी से चिन्तित और पीड़ित हैं, राहत महसूस करेंगे। आप ऐसा करते क्यों नहीं ? कौन सा भय, या कौन सी आशंका आपको यह दायित्व पूरा करने से रोक रही है ?

हम जानते हैं कि आपके मन में ऐसा कुछ नहीं होगा। आप भी तो उसी बाबा के भक्त हैं। हम अंत:करण से विश्वास करना चाहते हैं कि हमारे पीड़ित और अशान्त चित्त में उपजी ऐसी सारी शंकाएं गलत हों और श्री क्षेत्र को किसी प्रकार की हानि पहुंचाने में आपकी कोई भागीदारी आगे कभी न हो। परन्तु इस अधीर और आकुल मन को हम कैसे समझायें ?

इसीलिये हम अपने और समाज के समाधान के लिये आपसे यह अपेक्षा करते हैं कि आप अपनी इस गोपनीयता को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनायें और हठाग्रह छोड़कर पूरी योजना समाज के सामने रखने का साहस जुटायें। समाज सेवा करने वालों के लिये समाज तो माता-पिता की तरह मान्य होती है। उससे कैंसी गोपनीयता और उसके प्रति कैंसा अहंकार ? सामाजिक काम समाज की मर्यादा के अनुरूप ही किये जाने चाहिये, उसी में शोभा है। आप जिस समाज के रत्न हैं, उसी के कंकड़-पत्थरों में हमारी भी गिनती है। तब फिर आप की ही चलेगी और हमारी सुनी भी न जायेगी ऐसा कैसे हो सकता है ? यह तो सामाजिक न्याय नहीं है।

चमन में रंगो-खुशबू के मिलन से बात बनती है,
हमीं हम हैं तो क्या हम हैं ? तुम्हीं तुम हो तो क्या तुम हो।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मित्रों के मंतव्य

पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी

पूर्व विधायक म.प्र.
63/3, मल्हारगंज, इन्दौर

प्रिय सिंघई श्री प्रकाशचन्द जैन
सादर जयजिनेन्द्र

आपका 9-6-99 का लिखा हुआ पत्र मुझे 15-6-99 को प्राप्त हुआ। पत्र पढ़कर मैं भाव विभोर हो गया। *समाज का प्रबुद्ध वर्ग पुरातत्वीय धरोहर को नष्ट करने के प्रयत्नों से ही सिहर उठता है। आपके हृदय में आंतरिक वेदना होना स्वाभाविक है।* जो व्यक्ति अपने जीवन में बड़े बाबा के पावन क्षेत्र से जुड़ा हो, उसके नष्ट करने के प्रयत्न से ही वह रो उठेगा, उसके नेत्रों से पीड़ा के अश्रु अपने आप बह निकलेंगे।

भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ खण्ड तीन मेरे सामने है, उसमें अत्यन्त ही खोजपूर्ण विवेचन कर उन्होने कुण्डलपुर क्षेत्र का वर्णन करते हुऐ लिखा है कि बड़े बाबा की प्रतिमा को जिस आततायी आक्रमणकारी ने खंडित करने के लिये प्रहार किया तो बड़े बाबा के अंगूठे से दूध की धारा बह निकली एवं सेना पर मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया परिणाम स्वरूप बादशाह की सेना उल्टे पांव लौट गई। फिर 17वीं शताब्दी में बुन्देलखण्ड के महान शासक महाराज छत्रसाल ने इस स्थान एवं मूर्ति का जीर्णोद्धार करवाया। आज तक इस चमत्कारिक प्रतिमा की जैन समाज ही नहीं अपितु पूरे क्षेत्र में अपनी प्रभावना है।

पूर्व में भी परमपूज्य आचार्य संत शिरोमणी विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनि श्री सुधासागरजी के मार्गदर्शन में **जैन समाज की महान पुरातत्वीय धरोहर देवगढ़, बजरंग गढ़ आदि क्षेत्रों को जीर्णोद्वार के नाम पर नष्ट कर वहां अर्वाचीन निर्माण कर दिया, इससे भारत शासन का पुरातत्व-विभाग समाज को किसी प्राचीन क्षेत्रके जीर्णोद्वारकी अनुज्ञा प्रदान नहीं करता है।**

जब सुना कि परमपूज्य आचार्य भगवंत की अनुमति से बड़े बाबा को अपने स्थान से हटाकर दूर विराजमान करने का आयोजन किया जा रहा है, मन में बड़ी वेदना हुई। पर मन मसोस कर रह जाना पड़ा कि वर्तमान युग के श्रेष्ठतम आचार्य की अनुमति से यह कार्य हो रहा है तो अब किसको कहें? जब हमारा छत्र ही पुरातत्वको नष्ट करनेकी अनुमति प्रदान करे तो कौन क्या कर सकता है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रिय प्रकाशचन्दजी, आपने अपने भावों को जग जाहिर करके समाज एवं धर्म की महान् सेवा की है, मुझे लगता है कि बड़े बाबा का अतिशयकारी चमत्कार इस कार्य को नहीं होने देगा।

अभी-अभी गत वर्ष ही वर्तमान युग के महान् अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी का सहस्त्राब्दी समारोह हुआ, बाबा के यहां तो बिल्कुल भी स्थान नहीं है, फिर भी हजारों व्यक्तियों ने अनुशासनबद्ध होकर अभिषेक किये, और आज भी नित्य ही हजारों धर्मप्राण व्यक्ति बाबा के चरण छूकर अपने को धन्य मानते हैं। **स्थान का नहीं यह तो विचारों का खेल है, समाज का धनाढ्य वर्ग यदि चाहे तो जो स्थान चुना है, वहां नवीन प्रतिमा विराजमान कर देवे।** दिल्ली में 'अहिंसा स्थल' पर स्व. लाला प्रेमचंदजी ने महान् अतिशयकारी भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान की है जहां देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु नित्य ही दर्शन करके अपने पुण्य का फल प्राप्त करते हैं।

प्रिय बन्धु, आपने जो कदम उठाया है, निश्चित ही एक महान कार्य है, आचार्य भगवंत और बड़ेबाबा आपको यश प्रदान करेंगे और मैं सोचता हूं कि संपूर्ण समाज भी आपके इस महान् धार्मिक कार्य में आपके साथ रहेगा।

मैं तो अस्वस्थता एवं शारीरिक कठिनाईयों के कारण सक्रिय नहीं हो सकता पर हृदय से आपके विचारों से सहमत हूं।

विनीत,

१६-६-१९९९. **बाबूलाल पाटोदी**

मैं तो किसी की राह का रोड़ा नहीं बना ?

प्रकाशचन्द्र सिंघई एडवोकेट,

एक बार मुझे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की मीटिंग में इन्दौर के एक सज्जन ने उलाहना दिया कि बुंदेलखण्ड प्राचीन तीर्थो की दृष्टि से बड़ा समृद्ध है इस कारण हम मालवावासी अल्प मत में पड़ जाते हैं। प्रति उत्तर में मैंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि पुरातात्विक महत्व की धरोहरों के हम स्वामी हैं परन्तु अध्यक्ष मंत्री बनने का सौभाग्य आप लोगों को ही प्राप्त होता है।

बुंदेलखण्ड की जैन समाज नोन, तेल, कपड़ा बेच कर अपना जीवन यापन करती है इस कारण समृद्ध धनी समाज नहीं है। दो पांच दस शहरों में कुछ गिने चुने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रईस मिल जावेंगे, कुछ बिगड़े रईस भी मिल जावेंगे, पर ऐसे कोई नहीं मिलेंगे जो लाखों करोड़ो रुपये दान देकर पुरातात्विक महत्व के तीर्थों की रक्षा कर सकें। जबकि बुंदेलखण्ड के तीर्थों के जीर्णोद्वार की महती आवश्यकता है।

आज बुंदेलखण्ड में प्राचीन पूजित मंदिर गिराये जा रहे हैं, प्राचीन विशाल मूर्तियों के विस्थापन के प्रयत्न चल रहे हैं। पुरानी मूर्तियों, शिलापट्टों की प्रशस्तियां मिटाई जा रही हैं। नई प्रशस्तियाँ खोदी जा रही हैं। पुरातत्व विभाग, शासन, पंजीयक सार्वजनिक न्यास से अनुमति लेना प्रबंधक अपनी बेइज्जती समझते हैं। राजाज्ञा की अवज्ञा गौरव बोध का विषय बन गया है। समाज की अनुमति लेना तो दूर, समाज की राय लेना भी हेय समझा जाता है।

समाज इस महा विनाश को टुकुर-टुकुर देख रही है क्योंकि क्षेत्रों के प्रबंधकों ने, समाज को मुनि संस्था का भय दिखाकर इस सीमा तक भयभीत कर दिया है कि विरोध करने पर धर्म विरोधी घोषित कर दिया जावेगा या निन्दा का प्रस्ताव पारित कर दिया जायेगा। इस भय से क्या जिला, क्या प्रांत, क्या अखिल भारतीय शीर्ष संस्थाओं के पदाधिकारी इतने भयाक्रांत है कि मुंह खोलने में डरते हैं।

प्रबंधकों की टोलियां कहीं कहीं बड़े गोपनीय ढंग से, कहीं दादागिरी से प्राचीन पूजित मंदिर नष्ट कर रही हैं। बुंदेलखण्ड की नोन, तेल कपड़ा बेचकर जीवन यापन करने वाली समाज अति प्रसन्न है कि उनके तीर्थों पर करोड़ों रुपया व्यय कर जीर्णोद्वार हो रहे हैं। पचास साल आगे की ओर उनकी दृष्टि नहीं है जब आने वाली पीढ़ी हमें कोसेगी कि कैसे भीरु लोग थे जिन्होने समाज विरोधी, धर्म विरोधी, मुनि संस्था विरोधी घोषित होने के भय से हमारी प्राचीन, समृद्ध पुरातात्विक महत्व की, सांस्कृतिक महत्व की अमूल्य धरोहरों को नष्ट होने दिया। हमें कंगाल बना दिया। इतना ही नहीं जैन धर्म की प्राचीनता को प्रमाणित करने वाले महत्वपूर्ण साक्ष्य भी नष्ट कर दिये।

नये तीर्थ बनें, नये मंदिर स्थापित हों, नित नये भवन बनें, इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? किन्तु दुःख तब होता है जब जैन धर्म की प्राचीनता का ढिंढोरा पीटने वाले लोग, प्राचीनता को प्रमाणित करने वाले प्राचीन पूजित मंदिरों और तीर्थों को नष्ट कर रहे हैं। **जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं। आज बुंदेलखण्ड के प्राचीन पुरातात्विक महत्व के तीर्थ हम आप सभी की ओर आशा भरी नजरों से बड़ी कातर दृष्टि से निहार रहे हैं कि समाज**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगे आकर हमारी प्राचीनता को नष्ट होने से बचावे। जैन धर्म की प्राचीनता को प्रमाणित करने वाली साक्ष्य को नष्ट होने से बचावें।

लगातार 35 वर्षों के प्रयासों के बाद शासन ने कुण्डलपुर पर्वत का 212 एकड़ रकबा क्षेत्र को आवंटित करके सुरक्षित रखने का आदेश प्रदान किया था। वर्ष 93-94 में सम्पन्न बंदोबस्त में उक्त 212 एकड़ पर पुनः कब्जा हथिया लिया या यह कहें कमेटी ने स्वयं कब्जा थाली में रखकर वन विभाग को परोस दिया। अब कमेटी पहाड़ की 212 एकड़ जमीन पाने हेतु नये सिरे से प्रयासरत है। पहले एक विभाग का अड़ंगा था, अब अनेकों विभाग आड़े आ रहे हैं।

मैं तो किसी की राह का रोड़ा नहीं बना

जैन समाज आभारी है अपने पूर्वजों का जिन्होंने 2500 वर्ष पुराने चरण मंदिर तथा उसकी बाराद्वारी एवं 1500 वर्ष पुराने बड़े बाबा मंदिर तथा बड़े बाबा की प्रतिमा वाले इस सिद्ध क्षेत्र को सुरक्षित रखा। इन महानुभावों में स्व.सेठ लालचंदजी, स्व. पन्नालाल लहरीजी, स्व. राजारामजी बजाज, स्व. गोरेलालजी सिंघई, स्व. राजारामजी सिंघई, स्व. रुपचंदजी बजाज, स्व. भागचंदजी इटोरया स्व. कपूरचंद विद्यार्थी का नाम उल्लेखनीय है। इन सभी सेवाभावी कार्यकर्ताओं ने कठिन परिस्थितियों में कठोर परिश्रम कर 37 कि.मी. की पैदल, बैलगाड़ी से यात्रा कर इस क्षेत्र को सुरक्षित रखा। दुख आज इस बात का है कि इन पूर्वजों में से कुछ पूर्वजों के वंशजों ने ही बड़े बाबा के इस पवित्र सिद्ध क्षेत्र के अस्तित्व को मिटाने का संकल्प लिया है। आज बड़े बाबा हमं सभी से पूछ रहे हैं।

मैं तो किसी की राह का रोड़ा नहीं बना
फिर क्यों मेरा वजूद मिटा रहे हैं लोग?

जो महानुभाव मुझ से सहमत हैं उनसे अनुरोध है कि बड़े बाबा के क्षेत्र को बचाने के लिये प्रतिदिन बड़े बाबा मंत्र की माला रोज फेरना शुरू करें, और इन प्रश्नों के उत्तर दें-

1. **क्या 1500 वर्ष प्राचीन बड़े बाबा मंदिर को गिराकर बड़ेबाबा की मूर्ति को नये मंदिर में विस्थापित करना उचित है?**
2. **क्या 2500 वर्ष प्राचीन श्रीधर केवली की सिद्ध स्थली चरण मंदिर व बाराद्वारी को गिराना उचित हुआ है ?**

-सिं. प्रकाशचंद जैन एडवोकेट,

असाटी वार्ड नं. २,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाज के समक्ष कुण्डलपुर चुनौती बनकर खड़ा है

माननीय नीरज जी,

सादर वन्दे,

विगत कई दिनों से आपको पत्र लिखने का बहाना ढूंढ रहा था सो उस लंबे इंतजार की घड़ी आज यकायक थम गई और कलम बिना चले रुक नहीं पाई। बहाना इसलिये क्योंकि कोई जान न पहचान उस पर विषय भी समझ से परे। किन्तु आज बहाने के साथ एक सार्थक विषय भी सामने है। **कई दिनों से हमारे जिले से लेकर संपूर्ण राष्ट्र की जैन समाज के समक्ष कुण्डलपुर तीर्थ क्षेत्र एक गंभीर चुनौती बनकर खड़ा हुआ हैं, जिसका हल कुण्डलपुर कमेटी के साथ-साथ संपूर्ण समाज भी अब तक नहीं खोज पाई है।**

मेरी तुच्छ बुद्धि ने कुण्डलपुर के वर्तमान परिदृश्य का जो आकलन किया है वास्तव में वह भविष्य में किसी बड़े खतरे का संकेत है जिस पर सम्पूर्ण जैन समाज चुप्पी साधे बैठा हुआ है। मैं यह नहीं कहता कि यह विषय जनमानस के हृदय पटल से लुप्त है, किन्तु खाली प्रतिक्रिया व्यक्त करने से समस्याओं का निदान संभव नहीं है इसके लिये खामोशी तोड़कर प्रत्यक्ष सामने आना होगा। इस दृष्टि से हमें आपको, हम सबको मिलकर कोई उपाय सोचना होगा, जिससे बड़े बाबा की आन बान शान के समक्ष कोई चुनौती उत्पन्न न हो अन्यथा परिणाम की कल्पना मुझसे बेहतर आप कर सकते हैं।

मुझे आपके बारे में उतना ज्ञान तो नहीं किन्तु अपने बड़ों से क्षेत्र के प्रति आपके सेवाभाव के बारे में अवश्य सुना है। आपकी लेखनी जो आपकी सबसे बड़ी पहचान है उसके माध्यम से भी आपको जानने समझने का अवसर मिला।

मेरी समझ में अब यह कार्य सिर्फ कमेटी के बस की बात नहीं है इस पर समूचे राष्ट्र के प्रबुद्ध एवं वरिष्ठ जनों को एकत्रित होना पड़ेगां जिसमें सभी की बराबर भूमिका ही किसी एक सुलझे हुए निष्कर्ष तक पहुंचा सकेगी। यह कार्य भी अगर शीघ्रातिशीघ्र हो तभी परिणाम वांछित हो सकेंगे क्योंकि समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। चूंकि समय पर किसी का वश नहीं है इसलिये समय के साथ यदि कार्य हो जाये तो बेहतर है। आपका,

मानव बजाज 'मनु'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुगल सम्राट भी जिसका कुछ नहीं बिगाड़ पाया

कुन्डलगिरि की स्थिति जानकर बेहद पीड़ा हुई। अब यह जन जन की पीड़ा बन चुकी है। प्रबुद्ध श्रद्धालु, प्रबंधकारिणी के सदस्य, समस्त भक्तजन व पीड़ित वर्ग सभी बेहद उद्वेलित हैं। किसी तरह दि. जैन तीर्थ क्षेत्र रक्षा समिति, दमोह जिले के भक्तजनों के मध्य आम सभा कुन्डलगिरि में आयोजित करें ताकि क्षेत्रीय जन अपनी अंतरंग पीड़ा व आक्रोश को अभिव्यक्ति दे सकें।

कुछ कारीगरों से ज्ञात हुआ है कि वास्तुविद् पच्चीकार की डिजाइन को ठीक से समझे वगैर गर्भगृह के सामने अष्ठकोणी नींव तैयार की गई थी जो दोषयुक्त साबित हुई जिसको छुपाने के लिये ही अन्य वास्तुविद् का सहारा लेकर अन्य आकर्षक डिजाइन तैयार कराई गई। ***अष्टकोणी मंडल की नींव के पूर्व तक प्रतिमा को खिसकाने व अन्यत्र मन्दिर में स्थापित करने की योजना किसी के स्वप्न तक में नही थी।***

प्राचीन स्थापना में कोई कमी नहीं कही जा सकती, क्योंकि वह पंचमकाल के प्रारंभ के कठोर तपस्वी व विद्वान मनीषियों के सान्निध्य में हुई होगी। **बड़ेबाबाकी प्रतिमा प्रारंभ से ही यक्ष-यक्षिणी व रक्षक देवों से सुरक्षित है जिसका मुगल सम्राट ओरंगजेब भी कुछ नहीं बिगाड़ सका। आज भी जो अंतरंग शुद्ध भाव से पूजा अर्चना करते हैं यही यक्ष-यक्षिणी व रक्षक देव उनकी मदद कर देते हैं।** ऐसी अतिशयकारी चमत्कारी सुन्दर कलात्मक दैवी स्थापना को टस से मस करना यक्ष-यक्षिणी व रक्षक देवों के विरुद्ध कार्य करने जैसा है।

मंत्रों व देवों की मदद से प्रतिमा की ढुलाई भले सरल बना दी जावे पर पाषाण का स्वभाव तो नहीं बदला जा सकता। **प्रतिमा में मस्तक पर और नाभि के पास जो बड़ा क्रेक दिख रहा है वहां से खंडित होना संभाव्य ह, क्योंकि पाषाण पर तनावों व दबावों को नहीं टाला जा सकता।** अभी भूमि समतल करने में ही अनंत जीवोंका सहांर हो चुका है। मैं नवीन स्थापना में इसे सबसे बड़ी हिंसात्मक अशुद्धि मानता हूं। प्राकृतिक परिवेश पूर्णतः बदल दिया गया है।

आप इसी प्रकार निष्पक्ष भाव से जन भावनाओं को आवाज देते रहियेगा। **सभी क्षेत्रीय जनोंकी भावनायें बड़े बाबाकी प्राचीन स्थापना को यथा स्थिति में रखने के पक्ष में हैं। मुगल सम्राट भी जिसका कुछ नहीं बिगाड़ पाया उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। बड़ेबाबा अचल-प्रतिष्ठित हैं।**

दिनांक - 20.8.99

सि. देवेन्द्र कुमार जैन
पुरानी बजरिया, हटा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह कालजयी प्रमिमा है, अक्षुण्ण बनी रहेगी

माननीय श्री नीरजजी,

मध्यप्रदेश के दमोह जिले में अवस्थित कुण्डलपुर जैन संस्कृति का अतिशय प्राचीन रमणीक एवं समृद्ध तीर्थक्षेत्र है। यहां इतिहास, मूर्ति एवं मन्दिर वास्तुकला के युग-यीन विकास के विभिन्न सोपानों के दर्शन सहज ही सुलभ हैं।

श्रीक्षेत्र की प्रसिद्धि में चार चांद लगाती है बड़ेबाबा की अतिशय भव्य और डेढ़ हजार साल प्राचीन प्रतिमा। कंधों पर सुशोभित केशराशि और शासन देवता गोमुख तथा देवी चक्रेश्वरी के अंकन से स्वतः प्रमाणित है कि यह प्रतिमा प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की है। इसका निर्माणकाल १५०० वर्ष पूर्व का है।

बड़ेबाबा के अनेक अतिशय देश और विदेश में विख्यात हैं। वस्तुतः यह कालजयी प्रतिमा है इसीलिये विभिन्न आततायियों और आक्रान्ताओं के कुत्सित प्रयासों को विफल करती हुई यह मूर्ति अक्षुण्ण बनी हुई है। कुण्डलपुर शायद ऐसा अकेला प्रसिद्ध तीर्थ है जिसके संबंध में कोई विवाद नहीं रहा किन्तु पिछले कुछ दिनों से इस क्षेत्र का नाम सुर्खियों में है। इसके बारे में तरह तरह की आशंकाएं और जिज्ञासाएं की जा रही हैं। प्रबंध समिति ने अनुरोध करने पर भी जन-मानस में व्याप्त कुशंकाओं के निवारण का कोई प्रयत्न नहीं किया।

यहां बड़ेबाबा का शिखर गिरा दिया गया है, उनके परिसर में चार मन्दिर गिरा दिये गये हैं, चहार दीवारी तोड़ दी गई है और उस स्थान पर एक नये मन्दिर का शिलान्यास हो चुका है। नव-निर्माण के लिये चट्टानों को अंधाधुंध तोड़ने और उत्खनन करने से बड़ेबाबा की मूर्ति में विभिन्न अंगों पर लम्बी-लम्बी गहरी दरारें दिखाई देने लगी हैं तथा पुरानी दरारों की गहराई बढ़ गई है। इससे इस पन्द्रह सौ वर्ष प्राचीन मूर्ति की सुरक्षा को लेकर समाज में चिन्ता है। उठाने पर इसके बिखर जाने की आशंका भी बनी हुई है।

देश के प्रतिष्ठित पुरातत्व-वेत्ताओं और प्रतिष्ठाचार्यो का यह मत है कि बड़ेबाबा की मूर्ति को वर्तमान मूल स्थान पर सुरक्षित रखना ही श्रेयस्कर होगा। क्या कुण्डलपुर क्षेत्र के कर्ता-धर्ता अपने अहं को तिलांजली देकर पुरातत्व के इन अनमोल प्रतिमानों की रक्षा करेंगे?

भवदीय,

दमोह, २० फरवरी २००० — (डा.) भागचन्द्र 'भागेन्दु'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया शंका समाधान करें

माननीय अध्यक्ष महोदय,
श्री दिग. जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलगिरि, कुण्डलपुर कमेटी,
समस्त सदस्यगण, प्रबंधकारिणी समिति एवम् परामर्शदात्री समिति,

विषय :- **बड़े बाबा के मंदिर को क्षतिग्रस्त कर मंदिर के स्थान परिवर्तन करने के निर्णय से उत्पन्न शंकाओं के समाधान हेतु।**

माननीय महोदय,

कृपा कर निम्न शंकाओं का समाधान करने का कष्ट करें -

1. क्या हजारों साल से धर्मावलंबियों के आस्था एवं विश्वास के केन्द्र बिन्दु 'बड़े बाबा मंदिर' को ध्वस्त कर नये स्थान पर स्थापित करने जैसे बड़े कदम पर देश की सकल जैन समाज की सहमति है ?
2. **अतिशयकारी बड़े बाबा की मनोहारी प्रतिमा में रातों-रात कौन सी विकृति उत्पन्न हो गई जिससे समाज और राष्ट्रको खतरा उत्पन्न हो गया है जिसके चलते देवी देवताओं के कोप को अनदेखा किया जा रहा है ? मूर्ति स्थापना के मूल स्थान को बदला जा रहा है।**
3. क्या कमेटी ने अतिशयकारी, प्राचीन बड़े बाबा की मूर्ति को किसी के कुचक्र में फंसकर क्षतिग्रस्त करने की योजना बनाई है ? क्या इतने महत्वपूर्ण कार्य के लिये समाज की सहमति आवश्यक नहीं थी ?
4. **यदि बड़ेबाबा मंदिरको हटाना ही था तो समाज के अवलोकनार्थ नये एवं पुराने स्थलके नक्शे क्यों नहीं प्रकाशित किय गये ? क्या यह सब कुचक्र, सिंहद्वार की भूलों को छिपाने के लिये किया जा रहा है?**
5. देवताओं द्वारा स्थान एवं पूजित मूर्ति के स्थान परिवर्तन के समय अकस्मात प्रचंड प्रकोप के समय उसके शमन के लिये क्या उपाय हैं ? क्या कमेटी औरंगजेब वाली घटना को विस्मृत कर चुकी है ?
6. जैसी जनचर्चा है कि कुछ अल्पबुद्धि स्वार्थी लोग कुण्डलपुर कमेटी में जगह पा गये हैं। **वे अल्पज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के अभाव में बड़ेबाबा प्रांगण में कराई गई गलत खुदाई एवं बड़े बाबा मंदिर को क्षतिग्रस्त करने के कृत्य पर पर्दा डालने के लिये** अधिकार का दुरुपयोग कर, समाज को दिग्भ्रमित कर, समाज को आर्थिक क्षति पहुंचाने के साथ-साथ **बड़े बाबा की मूर्ति को जानबूझ कर खंडित करा रहे हैं ?**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

7. बिना सोचे समझे निर्माण किए गए 'सिंहद्वार' पर आए डेढ़ करोड़ रुपये के अपव्यय के लिये कौन जिम्मेदार है ? अब सिंहद्वार को मिटाने का निर्णय लिया गया है ? उसमें जो व्यय आयेगा उसके लिंये कौन जिम्मेदार होगा?
8. आवेदक को सिंहद्वार के एस्टीमेट एवं प्लान की फोटो प्रति चाहिये, तथा बड़े बाबा मंदिरके नये प्रांगणके एस्टीमेट प्लानकी फोटो कापी चाहिये है। उसमें आने वाला समस्त व्यय आवेदक देने को तैयार है।

अतः श्रीमान से अनुरोध है कि समाजकी शंकाओं के समाधान के लिये उक्त सभी बिन्दुओं पर कुण्डलपुर कमेटी लिखित समाधान प्रकाशित करें, तथा आवेदक से फोटोकापी का व्यय लेकर सिंहद्वार का मूल एस्टीमेट प्लान एवं बड़े बाबा के प्रस्तावित नये मंदिरका एस्टीमेट प्लानकी फोटोकापी प्रदान करें।

विनीत
(हेमंत जैन)

संतोषी माता मंदिर के पास,
डिग्री कालेज के पीछे
सिविल वार्ड नं. 8, दमोह
दिनांक 4 सित. 1999

❖ ❖ ❖

मूर्ति का स्थान परिवर्तन नहीं होगा, अपने को अकेला न समझें

आदरणीय सिंघई श्री प्रकाशचंद जी जैन,
सादर जयजिनेन्द्र,

बड़े बाबा कुण्डलपुर के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर काफी खेद हुआ कि किस प्रकार चंद लोग हमारी सांस्कृतिक धरोहर के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। मैं इसे रुकवाने में अपनी सार्थक भूमिका अवश्य निभाऊंगा आप निश्चिंत रहें। **मूर्ति का स्थान परिवर्तन नहीं होगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।** मुझे विवरण से सूचित करते रहें।

मैं अभी 29.10 को इंदौर जा रहा हूँ, वहां भी चर्चा करुंगा। यह व्यथा आपकी अकेले की नहीं - हम सब की है, अतः अपेन को अकेला न समझें।

शेष कुशल ।

सधन्यवाद, आपका ही,
चिरंजीलाल बगड़ा
सम्पादक - दिशाबोध मासिक, कलकत्ता.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीनता को मिटाना सर्वथा हेय है

मान्य शाह श्री प्रकाशचन्द्रजी,

आपका मंतव्य मेरी दृष्टि का पोषक है। नवीनता के जुनून में प्राचीनता को मिटाने का क्रम सर्वथा हेय है। मुनिवरों को तो प्राचीनता का प्रहरी होना चाहिये। आज यह स्थिति क्यों बन रही है, कोई तर्क,या विचारधारा समझ में नहीं आती। पुराने तीर्थों का संगमरमरीकरण, नये करोड़ों के तीर्थों का निर्माण और प्राचीनता के प्रति उदासीनता सभी कार्यों में दिख रही है। फिर हर नया तीर्थ आधा-अधूरा रह जाता है। प्रारम्भ होता है और करोड़ों की योजना में फंस जाता है। यह और चिन्ता की बात है कि आज स्पष्ट होना भी गुनाह होता जा रहा है। आपकी आवाज का प्रभाव होगा ऐसा विश्वास है।

सादर,

विदिशा, २३-६-९९. -राजेन्द्रकुमार जैन,

क्षेत्रीय जनता में भारी असंतोष व चिन्ता है

आदरणीय नीरजजी,

कुण्डलपुर के प्रकरण में आपके विचारों से मैं अंतरंग से सहमत हूं। भाई प्रकाशचन्द्रजी सिंघई भी बड़ेबाबा को खिसकाने की योजना से बेहद दुखी हैं। क्षेत्रीय जन-भावनाओं को भारी ठेस पहुंच रही है व समाज नेतृत्व के अभाव में किंकर्तव्य-विमूढ़ हो रही है। क्षेत्रीय जनों को इस प्राचीन स्थापना से अनुराग है। वे शताब्दियों से पूज्य इस दैवी स्थापना को सरकाने-हटाने में अशुद्धि व अशुभ की कल्पना कर रहे हैं। प्राचीन समोशरण में उनकी अडिग आस्था है।

जिनालय का उद्भव ही जैनों से हुआ। वे हमारी प्राचीनता के प्रमाण हैं। यदि हम इन साक्ष्यों को नष्ट करेंगे तो हमारी प्राचीनता पर प्रश्नचिन्ह लग जायेंगे। मन्दिर और मूर्तियों के अवशेष ही हमारी प्राचीनता की पुष्टि करने वाले प्रमाण हैं। अगर हम वर्तमान सौन्दर्य बोध के वशीभूत नवीनीकरण करते चले जायेंगे तो आने वाली पीढ़ियां इस श्रमण संस्कृति को बीसवीं-इक्कीसवीं सदी का उद्भव ही मानेंगी।

कुण्डलगिरि की प्राचीनता और श्रेष्ठता अब विश्व व्याप्त है। बड़ेबाबा अब मात्र दमोह जिले के नहीं रहे, सम्पूर्ण जैन समाज की आस्था के केन्द्र बन चुके हैं। हम क्षेत्रीय संकीर्ण बहुमत से लिये गये निर्णयों को अखिल भारतीय जैन समाज पर कैसे थोप सकते हैं? इस प्रकरण में समाज आपके साथ है।

भवदीय,

शक्ति भण्डार, दमोह. -चन्द्रकुमार बजाज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुराना निर्माण तोड़ने की जिद छोड़ें

गत कई बर्षों से और हाल ही में ही एक वर्ष से श्री कुंडलपुर के बड़े बाबा के मंदिर में अकारण ही विवादपूर्ण स्थिति पैदा कर दी गई है। धन के ऊपर धर्म प्रतिष्ठित होते आया है, क्योंकि धन के मद को धर्म ही संयत करता है। लेकिन आज धर्म का आधार सिर्फ धन ही रह गया है। जैसी हमारी आज की धर्म विहीन कमाई है वैसा ही हमारा धर्म का स्वरूप भी है। हम सोचते हैं कि हम अपने धन के आधार पर मंदिर बना सकते हैं श्रद्धा और आस्था बना सकते है। वह आस्था और श्रद्धा धर्म की नहीं होगी लेकिन धन की होगी, धन पर आधारित होगी। तब हम एक बड़ेबाबा छोड़ अनेक बड़ेबाबा का निर्माण कर लेंगे। **करीब 400 वर्ष पूर्व बादशाह औरंगजेब की छेनी मूर्ति को नहीं तोड़ सकी उसका प्रमुख कारण था हमारी आस्था, श्रद्धा और हमारा आत्म बल -उसमें जुड़ गया बड़ेबाबा का अतिशय।** यह हमारी आस्था श्रद्धा ही है जो आज हमें पुराने निर्माण को तोड़ने की इजाजत नहीं देता।

यदि पैसे के आधार पर आज पुराना निर्माण तोड़ कर नया निर्माण किया जा रहा है, तब आने वाले 100-200 सालों में हमारा धन अधिक बढ़ेगा तब इस नये निर्माण को भी तोड़ देंगे। इस निर्माण के अभिमान में हम आस्था रहित निर्माण करके फिर नया निर्माण कर देंगे। हमारी आस्थायें धन के साथ बदलती रहेंगी, आस्थाओं का स्थायित्व कहीं नहीं होगा।

क्या हम यही तोड़ने का आदर्श और परंपरा आने वाली पीढ़ी के सामने छोड़ जावेंगे ? आज जिस ईर्ष्या, द्वेष और अभिमान से हम जकड़े हुये हैं उससे मुक्ति नहीं पा रहे हैं, उससे भी भयंकर स्थिति आने वाली पीढ़ी को भोगना पड़ेगी। यदि हमारा यही आदर्श है तो मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च इनका क्या उपयोग है ? देश और विदेशों में पुराने मंदिर गुरुद्वारे, मस्जिद, चर्च सुरक्षित रखे जाने के लिये बहुत कुछ किया जाता है, लेकिन एक हम हैं कि हम अपना पुराना निर्माण तोड़कर नये निर्माण में विश्वास कर रहे हैं।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे चर्च हमारी मानसिक विकृति को दूर करने का एक साधन है। जब मंदिर का हमारी इच्छा के अनुरूप उसका रूप बदला जाये तब हमारी आस्था मंदिर नहीं हमारी इच्छा और धन है। मंदिर में जाने पर हमारा उद्देश्य हमारी इच्छाओं का शमन, दमन होना चाहिए। ऐसी स्थिति में - पुराना निर्माण तोड़ना आवश्यक नहीं नया निर्माण उसी पूर्व आस्था, श्रद्धा पर आधारित होकर किया जा सकता है। लेकिन कुंडलपुर के बड़ेबाबा का मंदिर तोड़कर निर्माण करना किस आस्था पर आधारित है ? वृद्ध मां-बाप को युवा संतान के सामने उनका अस्तित्व समाप्त करने का ही आदर्श रहेगा वे भी उनको समाप्त कर देंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहा जा रहा है कि बड़ेबाबा की मूर्ति मंत्रों के बल पर फूल की तरह सरक कर नये मंदिर में विराजमान हो जावेगी। ऐसी स्थिति में पुराना निर्माण तोड़ने की क्या आवश्यक्ता है ? उसे तो और भी एक स्मारक या स्मरणीय घटना के साक्षी के रूप में कायम रखना चाहिये। अंतिम श्रुतकेवली श्रीधर स्वामी के नाम पर इतिहास में प्रतिष्ठित उक्त निर्माण को अब लोग नकारने को तैयार हो रहे हैं। यह प्रश्न करने लगे हैं कि इसका प्रमाण क्या है ? यह पुराना निर्माण ही अपनी कथा गाता कहता है और आपके सामने अडिग खड़ा है। दूसरी ओर **आपका यह कहना कि पुराना निर्माण है इसलिये मंत्र विद्या से हम उसे सुरक्षित स्थानांतरित करेंगे तो बड़े बाबा की मूर्ति में जो दरारें या कुछ हिस्से टूट गये हैं वे भी तो मंत्र विद्या से सुधारे जा सकते हैं ? उनकी मरम्मत और पूर्व आकृति वापिस लाने का काम पहले किया जाना चाहिये।**

जिस समय यह पुराने चरण मंदिर का निर्माण 2500 वर्ष पूर्व हुआ था, उस समय आज के निर्माण के साधन उपलब्ध नहीं थे। फिर भी उन लोगों ने अपनी बुद्धि, श्रद्धा, श्रम और निर्माण कौशल से इतनी ऊंचाई पर जाकर निर्माण किया उस कौशल को देखने के लिये आज जो हमारे पास प्रमाण हैं उन्हें नष्ट करने का क्या औचित्य है ?

कुंडलपुर या कुंडलगिरि नवनिर्मित न होकर 2500 वर्ष पुराना या उसके पूर्व का है। विक्रम संवत् 1757 में महाराज छत्रसाल ने इसका जीर्णोद्धार कराया। बड़े बाबा के कुंडलाकार पर्वत श्रेणियों पर 63 शिखरबंद सैंकड़ों साल पुराने जिन मंदिर हैं।

उपरोक्त तथ्य अंत में इसलिये कहे गये हैं कि **क्षेत्र की कमेटी इस क्षेत्र के इतिहास के संबंध में प्राचीनता का इतिहास जनता के सामने रखने की निष्ठापूर्वक कोशिश करे, पुराना निर्माण तोड़ने की अपनी जिद छोड़ दे।**

जवाहर गंज, जबलपुर — **डा. देवकुमार सिंघई**
सौ. श्रीमती चन्द्रानी सिंघई

प्राचीनता की रक्षा की जावे

साप्ताहिक 'क्रांति बोल' पत्र के माध्यम से बड़े बाबा कुंडलपुर के मंदिर के बारे में विभिन्न लोगों के मत, विचार एवं बड़ेबाबा के इतिहास, निर्माण कार्य आदि के बारे में सभी जानकारियां मिलीं, जिसकी आम आदमी को जानकारी नहीं थी। बुंदेलखण्ड में कुंडलपुर स्थित बड़ेबाबा की मूर्ति न केवल अतिशयपूर्ण वरन जैन एवं जैनेतर समाजों के लिए आस्था का प्रतीक है। वहां सभी लोग श्रद्धा भाव से अपनी मनोकामना पूर्ण कर शांति का अनुभव करते हैं। **कतिपय लोगों ने पूर्वजों के नामों**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं प्रमाणों को नष्ट कर अपने कार्यकाल को अविस्मरणीय बनाने की कुचेष्टा कर बड़ेबाबा की भव्य एवं प्राचीन मूर्ति को 200 फुट पीछे स्थानांतरित करने का प्रयास किया है। वे अपने उस कार्य में सफलीभूत होवें या न होवें परन्तु इससे बड़ेबाबाकी मूर्तिकी दरारें, रेखाएं एवं पत्थर का क्षरण दिखकर चिंता होती है।

प्राचीन मूर्तियां एक धरोहर हैं, भविष्य का इतिहास बनती हैं एवं आनेवाली पीढ़ियां उनसे उनके बारे में जानकारियां प्राप्त करती हैं। आज की पीढ़ी जब इस प्रकार से धर्मायतनों में अपने पूर्वजों द्वारा किए गए निर्माणों, सुधार जीर्णोद्धार आदि से संबंधित शिलालेखों को देखती है तो श्रद्धा के अलावा उन्हें उस स्थान से भावनात्मक लगाव भी होता है। कुण्डलपुर में चल रहे कार्यों के बारे में समस्त समाज की राय से ही नवनिर्माण या परिवर्तन किए जावें। अतिशय एवं प्राचीन मंदिरों एवं मूर्तियों के स्वरूप में एवं प्राचीनता की रक्षा की जावे जिससे वे इतिहास की साक्षी के रूप में विद्यमान रहें। **मैं व्यक्तिगत रूप से कुंडलपुर में बड़ेबाबा की मूर्ति एवं मंदिर में किसी प्रकार के भी परिवर्तन के विरुद्ध हूं। आपने समाचार पत्रों के माध्यम से समस्त समाज को इस बारे में जानकारियां प्रदान कीं। उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। धन्यवाद !**

लक्ष्मी एम्पोरियम
जवाहर गंज, जबलपुर

आनंद कुमार जैन

पुरातत्व में छेड़छाड़ से पीड़ा होती है

कल क्रांतिबोल का कुंडलपुर विशेषांक मिला। जैन पुरातत्व की सारी कहानी पढ़कर बड़ा दुख हुआ। देवगढ़ के पुरातत्व के विनाश का उजागर मैंने किया था और समाज से बड़ी धमकियां और निंदात्मक चिट्ठियां मिली थीं, पर जब पता चला कि शासन देवगढ़ को अपने संरक्षण में लेने को तैयार है तो उस महापक्षक से बचने के पीछे मेरी लेखनी सहायक हुई थी। यदि मुझे कुछ साहित्य उपलब्ध करा सकें तो मेरी लेखनी पुन: मुखर हो सकती है।

पुरातत्व में छेड़छाड़ से मुझे बड़ी पीड़ा होती है। ऐसी ऐतिहासिक अतिशय प्रतिमा में दरारें निश्चय ही सारे जैन समाज के लिये चिन्ताकी बात है। बड़ेबाबा की प्रतिमा का मूल स्वरूप यवनों द्वारा विनष्ट हुआ है। अभी रायसेन की प्राचीन कलात्मक काष्ठ वेदियोंको जलाकर संगमरमर की वेदी जड़ दी है। जिन्हें इतिहास पुरातत्व आदि का ज्ञान नहीं होता केवल नवीनता की चकाचौंध में ऐसे लोग महत्वपूर्ण प्राचीनताका नाश कर देते हैं। लोद्रवा (राज. के पंचों ने वह बैलगाड़ी अभी तक सुरक्षित रखी है जिससे उनके पूर्वजों ने शिखर जी की यात्रा की थी।

भोपाल 02.12.99

कुन्दन लाल जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस विनाश को टालिये

आपके द्वारा प्रेषित 'क्रांति बोल' का कुण्डलपुर विशेषांक प्राप्त हुआ। आप बधाई के पात्र हैं कि आपने विशेषांक निकाल कर कुंडलपुर के बड़ेबाबा के भक्तों की कुंभकर्णी निद्रा को भगाने तथा बड़ेबाबा के मंदिर के ऐतिहासिक मूलरूप को सुरक्षित रखने की सार्थक पहल कर भयंकर होने वाले सामाजिक विनाश एवं पुरातात्विक विनाश से भक्तों को बचाया। यह ऐसा विध्वंशकारी कार्य हो रहा है जिसका विश्व में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। मैं भी इसके विरोध में हूं।

श्री अध्यक्ष, दि. जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र कुंडलपुर को संपूर्ण भारतवर्ष की एवं संपूर्ण विश्व की जैन समाज तथा भक्तों का सम्मान रखते हुए अवैध कार्य तुरंत बंद कर देना चाहिए। आदरणीय प्रकाशचन्द्रजी सिंघई, एडवोकेट बधाई के पात्र हैं जो इस निंद्य कार्य को रोकने में संलग्न हैं।

'क्रांति बोल' पत्रिका के कुण्डलपुर विशेषांक में बड़ेबाबा के मंदिर कुण्डलपुर के विषय में जो विस्तृत जानकारी दी है उससे स्पष्ट हो गया है कि नवीन निर्माण कार्य बड़े बाबा की मूर्ति के अस्तित्व के लिये बड़ा खतरा है। इससे ऐतिहासिक पुरातत्व की संपदा का विनाश तथा विश्व का जैन समाज की संस्कृति की धरोहर का विध्वंस स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। कुण्डलपुर के बड़े बाबा के मंदिर की अस्तित्व की रक्षा के लिये आपका प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

उड़ीसा शैली का नवीन मंदिर उचित स्थान खोज कर कुण्डलपुर में बनाया जा सकता है तो बनाने वाले बनवा लें। पुराने मंदिर को नष्ट करना घोर पाप है। मैं आप के साथ हूं। आप जो कदम उठायेंगे, भक्त समाज पूर्णतया साथ देगी। आप को बड़ेबाबा की भक्ति और यश प्राप्त हो, ऐसी हार्दिक कामना है।

7 लखेरापुरा, भोपाल — **हीरालाल पाण्डेय**

आपका प्रयास अभिनंदनीय है

आपने क्रांति बोल का कुंडलपुर विशेषांक भेजा इसके लिये धन्यवाद। आपने यह विशेषांक निकालकर जैन समाज का महान उपकार किया है। कुंडलपुर सिद्ध क्षेत्र के बड़ेबाबा के मंदिर के संबंध में जो पूरी जानकारी दी है वो समाज की आंख खोलने वाली है। आपका संपादकीय सत्य का दर्शन कराता है इसके लिये आपको हार्दिक साधुवाद। प्राचीन स्मारक की रक्षा के हेतु आपका प्रयास अभिनंदनीय है।

44 इब्राहिमपुरा, भोपाल — **राजमल पवैया**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह चिनगारी मशाल बनेगी

जैन नाम को अलंकृत करने वाले तथा-कथित जैन बड़ेबाबा कुण्डलपुर की पुरातात्विक धरोहर को जमींदोज करने में लगे हैं और तीर्थ संरक्षिणी कमेटी/महासभा/परिषद, बड़े बड़े जलसे/ पुष्प माल्यार्पण, मंचीय नाटकीय मंचन की जुगलबंदी और जुगाली में लगे हैं। क्या कोई जैन समाज पर आपातकाल नहीं लगाया जा सकता ?

इस प्रकरण पर 'क्रांतिबोल' प्रकाशित करके आपने दमदार पहल की है। चिनगारी अब मशाल बनने जा रही है, सार्थक प्रयास निष्फल कभी नहीं होते। इस की कुछ प्रतियां भिजवायें यह तो एक इतिहास का दस्तावेज बनेगा।

पुरातात्विक छेड़छाड़ देशद्रोह और कानूनी दंडनीय अपराध है। आपकी यह छोटी सी पहल और सार्थक प्रयास इतिहास की मशाल बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है। आपकी पुरजोर कोशिश रंग लायेगी और बड़ों बड़ों की बखिया उधेड़कर गिलाफों मे छिपे चेहरे उजागर हो जाएंगे। बहुत बहुत बधाई !

ग्वालियर **(डॉ.) अभय प्रकाश जैन**

सब आपको सहयोग करेंगे

क्रांति बोल पत्रिका का कुंडलपुर विशेषांक पढ़ा। बड़े बाबा के मंदिर के पुरातात्विक इतिहास को ध्वंस करने का प्रयास अत्यंत निंदनीय एवं अनुचित है। हम किये जाने वाले नये निर्माण कार्य को ध्वंसक मान कर विरोध करते हैं। नया मंदिर निर्माण बिना किसी विध्वंस के कुंण्डलपुर पर्वत के आस पास हो सकता था। आपने जो बड़ेबाबा के मंदिर और मूर्ति की रक्षा के लिये कदम उठाये हैं उनकी हम प्रशंसा करते हैं और सफलता की कामना करते हैं।

आप जो भी कदम उठा रहे हैं, या उठायेंगे, उनका हम समर्थन करेंगे। साथ में हमारी महिला समाज आवश्यक्ता पड़ने पर अनशन-सत्याग्रह आदि में सहयोग करने को तैयार है। सहयोगार्थ यथा समय सूचित करने का कष्ट करें। पुनः धन्यवाद !

आपने कुंडलपुर विशेषांक जैन पत्र पत्रिकाओं को भिजवाया होगा। दि. जैन मंदिर पंचायतों को भी भेजा होगा। सब आप को सहयोगे करेंगे। आप स्वयं विज्ञ और कर्मठ हैं। इत्यलम्

अ. भा. स्याद्वाद शि. परिषद **चन्द्रप्रभा देवी**
शाखा-भोपाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुराने की तोड़-फोड़ अनुचित है

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे 89 में विद्वतपरिषद की बैठक में आप से मुलाकात हुई थी। इसके बाद अनेकों बार कुंडलपुर गया। विगत प्रवास में पुराने मंदिर की तोड़ फोड़ की पीड़ा से असंतुलित एवं पीड़ित हो गया था। मैंने भाई नीरज जी को भी पत्र लिखा था। अभी परिषद के हीरक जयंती समारोह में श्री महावीरजी गया था। वहां पुरातत्व की रक्षा की चर्चा में यह आया कि भवनों से जो बचा था उसे हमने अपने हाथों से नष्ट कर दिया। किसी महानुभाव ने सूचना दी कि कुंडलपुर का कार्य सरकार ने रोक दिया है।

उत्सुकतावश अमलाई लौटते समय दो घंटे दमोह रुका। भाई श्री संतोष जी से मिला, चर्चा की। उन्होंने बताया कि अभी काम चालू है। चर्चा से यह भी ध्वनित हुआ कि पुरातत्व विभाग ने पुलिस रिपोर्ट की है, जिसकी पूंछताछ चालू है। मंत्री जी ने यह भी बताया कि कोई महाशय निर्माण के विरुद्ध हाईकोर्ट से स्टे लाने वाले थे, वह कार्यक्रम निरस्त हो गया है। विशेष विवरण नहीं मिला। क्रांति बोल का अंक पढ़ा उससे ज्ञात हुआ कि आपने भी मंत्री जी को नोटिस दिया है। हो सकता उनका संकेत उसकी ओर हो।

उन्होने निर्माण के संबंध में मेरा मत जानना चाहा। मैंने कहा हमें अपनी संस्कृति की छाप पृथक मंदिर बना कर करना चाहिये। पुराने की तोड़फोड़ अनुचित है फिर बड़े बाबा को अन्यत्र ले जाना मूर्ति के साथ अविनय और ध्वंश की जोखिम भरा है। उनसे अनुरोध किया कि वे ऐसा नव निर्माण न करें। कृपया वहां की वस्तुस्थिति से अवगत करावें।

अमलाई (शहडोल) **डा. आर. के. बंसल**

पुरातत्व विभाग भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण और शक्ति-सम्पन्न विभाग है। वह हमारे पुरखों की छोड़ी हुई अनमोल धार्मिक तथा ऐतिहासिक धरोहरोंका रक्षक है, भक्षक नही। वह हमारा सहयोगी है, विरोधी नहीं। हमारी पुरा-सम्पदा की सुरक्षा और रख-रखाव सुनिश्चित करने के लिये यह विभाग हमारे लिये एक उपकारी मित्र जैसा है।

अगर कमेटी के द्वारा पुरातत्व-विभाग के परामर्श को मानने की नैतिकता बरती जाती तो मन्दिरों का इस तरह विनाश नहीं हुआ होता। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कमेटी हमेशा पुरातत्व विभाग के पत्रों-अनुरोधों की अनदेखी करती रही। विभाग हमारी आंखों में उंगली डालकर हमें हमारी प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिये सावधान कर रहा था और हम उसे अपने हाथों नष्ट करने में लगे थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बौरा गया है जैन समाज

गत दिनों कुण्डलपुर के बारे में अनेक प्रकार की चर्चायें सुनने में आईं। मैंने यह उचित समझा कि इस धार्मिक स्थान पर कुछ भी लिखने के पहले स्वयं वहां जाकर सही जानकारी लेकर ही कलम चलाना ठीक होगा। कुण्डलपुर पहुंच कर मैं वहां का दृश्य देखकर स्तम्भित रह गया। मुझे लगा कि यहां तो जैन समाज यह दोहा चरितार्थ कर रही है कि -

कनक कनक तैं चौगुनी मादकता अधिकाय,
यह खायें बौरात है, वह पायें बौराय।

मैंने पाया कि बड़ेबाबा का ऊंचा शिखर गायब है। उसे ध्वस्त कर उस जगह एक छोटा शिखर बना दिया गया है। उस प्रांगण में विराजमान तीन मन्दिर नींव से खोदकर फेंक दिये गये हैं। पहले जिन सीढ़ियों से होकर बड़ेबाबा मन्दिर में प्रवेश करते थे वे सीढ़ियां गायब हैं और सीढ़ियों के बाजू में स्थित सैकड़ों वर्ष प्राचीन मन्दिर का भी नामो-निशान तक नहीं है। चहार दीवारी का उत्तर-पश्चिम का अधिकांश भाग गिराया जा चुका है। एक मन्दिर, शायद उसका क्रमांक १८ है, आधा-अधूरा खड़ा है। बड़ेबाबा मन्दिर के मण्डप की दो सुन्दर कलापूर्ण वेदियां भी नष्ट कर दी गई हैं।

प्रवेशद्वार के आगे उत्तर-दक्षिण में पत्थरों की दीवार खड़ी कर दी गई है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह तो सिंहद्वार है। उस दीवार में कहीं कोई द्वार था ही नहीं। मुझे तो वह बड़े आलों वाली दीवार ही दिखाई दी। पीछे वह स्थान भी मुझे दिखाया गया जहां नया मन्दिर बनाकर बड़ेबाबा को विराजमान करने की योजना बताई जाती है।

यह सब देख सुन कर मेरा सिर चकराने लगा। मेरे मुंह से निकल पड़ा - **'यह तो पुरातत्व और इतिहास का विनाश ही नहीं, महाविनाश है। लगता है जैन समाज के पास अनैतिक कमाई का इतना पैसा आ रहा है कि वह बौरा गया है और अपने ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के मन्दिरों को अपने हाथों से नष्ट करने पर तुला है।'**

पन्द्रह सौ वर्ष प्राचीन ऐसी चमत्कारी मूर्ति को, जिसे जैन-अजैन सभी लोग श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं, उसे विस्थापित करना मेरे मत में किसी भी प्रकार उचित एवं व्यावहारिक नहीं माना जा सकता।

-जगदीश मलिक (प्रसिद्ध पत्रकार)
सम्पादक- 'क्रान्ति बोल' साप्ताहिक, दमोह.

(कुण्डलपुर विशेषांक के सम्पादकीय से साभार उद्धृत)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भले ही बड़े बाबा नये जिनालय में छोटे दिखें

कुण्डलपुर के बड़े बाबा को दो सौ फुट पीछे ले जाने के संदर्भ में तो यही कहना है कि हम सभी इस प्राचीन प्रतिष्ठा से अत्यंत प्रभावित व संतुष्ट हैं। हमारी अपनी संवदेनशील भावनायें आज की तोड़-फोड़ से तो हमें ऐसी अंतरंग पीड़ा हो रही है जैसे हमें कोई अपने ही घर से बेदखल कर रहा हो। हो सकता है आपकी नजर में हमारा विश्वास व भक्ति अंधी हो। देश के कई बड़े बड़े विद्वानों का भी मत है कि बड़े बाबा के बिम्ब को यथा-स्थिति में ही रखा जाना चाहिये।

वर्तमान में यहां बन चुके सिंहद्वार से अब जिनालय का समग्र रूप सौन्दर्य छिप गया है। उसे निहारने मात्र के लिये बड़ेबाबा जिनालय को 200 फुट पीछे स्थापित किया जाना है क्योंकि हम स्वयं 200 फुट पीछे जाकर जिनालय का बाहरी सौन्दर्य निहारने का कष्ट नहीं उठाना चाहते। अब जिनालय बड़ा बनाया जाना है भले ही बड़े बाबा वहां छोटे दिखें। छोटे गर्भगृह में अपेक्षाकृत बड़ा जिनबिम्ब भक्तको अपने छोटेपन का अहसास कराता है और बड़ा बनने की प्रेरणा मिलती है। इसे स्वयं की प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनावें, पुनर्विचार करें।

- एक श्रद्धालु

❖ ❖ ❖

अपने प्राचीन तीर्थों-मन्दिरों और मूर्तियों के साथ, ऐसी विनाशक मनमानी किसी भी प्रकार बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिये। यह विकास का सूचक नहीं, विनाश का श्रीगणेश है, इस बात को समय रहते गम्भीरता से समझने की आवश्यक्ता है। इस आधुनिक विकास के नाम पर ठगाये जाकर, पिछले दस-बारह वर्षों में अनेक क्षेत्रों पर, बहुत कुछ खो चुका है दिगम्बर जैन समाज।

अंतिम अरदास-

हम साधर्मी हैं, श्रावक हैं हमारे बैर-भाव चिरस्थायी नहीं हो सकते। एक दिन अवश्य हमारी बुद्धि जागेगी और हमारे सोच में परिवर्तन होगा। हम तने भी रहे तो कभी हमारी अगली पीढ़ी, हमारी दुर्बुद्धि पर हंसेगी और गले मिलकर हमारे पापों का प्रयश्चित करेगी। इसलिये हमें लड़ते-झगड़ते भी सौजन्य नहीं खोना चाहिये। स्तर-विहीन प्रहार हमें शोभा नहीं देते इसलिये -

दुश्मनी जम कर करें, पर इतनी गुंजाइश रखें,
जब कभी फिर दोस्त बन जायें तो शरमिन्दा न हों।

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैसर्गिक सौन्दर्य भी तार्थ की शोभा है

जैन उपासना पद्धति में प्रकृति का सान्निध्य सहायक माना गया है। तपस्या के लिये जैन साधकों ने पर्वत कन्दराओं को सर्वाधिक महत्व दिया है। इसीलिये हमारे अधिकांश महत्वपूर्ण तीर्थ प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पर्वतों पर होते हैं। कैलाशगिरि, सम्मेदाचल, गिरनार, शत्रुंजय, माउण्ट आबू, पावागढ़, तारंगा, मांगीतुंगी और मुक्तागिरि आदि हमारे अनेक प्रसिद्ध तीर्थ पर्वतों पर ही हैं। प्राकृतिक शोभा की दृष्टि से हमारा कुण्डलपुर भी उसी गिनती में आता है। लगता है पर्यावरण की इसी पवित्रता के कारण अंतिम केवली श्रीधर स्वामी ने कर्म-दहन के लिये इस एकान्त अटवी को चुना होगा।

कालान्तर में कुछ लोग आये जिन्होने, माथे पर मुकुट पहनाने की तरह, इस सुन्दर पर्वत माला के मस्तक पर बड़ेबाबा को नगीने की तरह जड़ दिया। कुछ शताब्दियों के बाद बड़ेबाबा एक बार काल की भंवर में नजरों से ओझल हो गये, पर एक भट्टारक स्वामीजी और उनके ब्रम्हचारी शिष्य ने उन्हें पुनः प्रतिष्ठित किया। फिर महाराजा छत्रसाल ने बड़ेबाबा के चरणों में माथा झुकाया। उसने मन्दिर का नवीनीकरण भी कराया और वार्षिक मेले की परम्परा डाली। महाराजा छत्रसाल के इस भक्ति-समर्पण का शिलालेख भी मन्दिर में लगा था।

सैकड़ों सालों से बड़ेबाबा की भक्ति के रस में सराबोर लोग आते गये और श्रीधर स्वामी की सिद्ध-भूमि का श्रृंगार होता रहा। धीरे-धीरे इस पर्वतमाला का मस्तक अमल-धवल जिनालयों की 'मन्दिर-माला' से सुशोभित हो गया।

यह चमत्कार एक दिन में नहीं हुआ। एक साल में नहीं हुआ और एक शताब्दी में भी नहीं हुआ। इस पर्वत को सजाने में हमारे पुरखों को सैकड़ों साल लगे और इसके लिये हमारी कई पीढ़ियों का पसीना बहा। पर, सिंघईजी, आप बड़े पुरुषार्थी निकले, आपको इसकी शोभाश्री नष्ट करने में एक दो वर्ष भी नहीं लगे। आज यह आहत और कराहता कुण्डलपुर आपकी आस्था-विहीन और जिद्दी मनोवृत्ति का प्रतीक बनकर खड़ा है। अपने शास्वत तीर्थ का यह अच्छा श्रृंगार किया है आपने।

❖ ❖ ❖

> जो कुछ भी नहीं करता, वही भर आलसी नहीं है। आलसी वह भी है जो अपने काम से भी अच्छा काम कर सकता है, परन्तु करता नहीं।
>
> – महात्मा गांधी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

5345
CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुन्देलखण्ड की जैन समाज से विनय

श्रीक्षेत्र कुण्डलपुर में हो रहे कड़ुवे अनुभवों के आधार पर मैं समस्त जैन समाज से, खासकर बुन्देलखण्ड की जैन समाज से यह विनय करना चाहता हूं कि हमें अपने तीर्थों-मन्दिरों की प्राचीनता को बचाने के लिये बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। बुन्देलखण्ड का जैन समाज अधिक सम्पन्न समाज नहीं रहा, परन्तु श्रद्धा और भक्ति के मामले में वह बहुत सम्पन्न रहा है। हमारे पूर्वजों ने भले ही छोटे मन्दिर बनवाये हों और भले ही वे सालों तक उनकी पुताई भी न करा पाये हों, पर उन्होने धन की चकाचोंध के सामने अपने तीर्थ कभी समर्पित नहीं होने दिये। उन्होने अपने मन्दिरों की प्राचीनता की रक्षा की और उस बीते जमाने की कला को जीवित रखा।

आज कई प्रदेशों में हमारे तीर्थ तरह- तरह के विवादों में उलझे हुए हैं। कहीं वीतरागता की उपेक्षा करके मन्दिर में रागी-द्वेषी देवी-देवताओं की आराधना हो रही है और कहीं श्वेताम्बर भाइयों के द्वारा हमारे तीर्थों को तरह- तरह के विवादों में घसीटा जा रहा है। बुन्देलखण्ड की जैन समाज की यह विशेषता रही कि उसने इस प्रकार के सारे उपद्रवों से अपने तीर्थों को बचाया और उनकी वीतराग-छवि को धूमिल नहीं होने दिया। यह हमारे पुरखों की श्रद्धा-भक्ति का प्रमाण है।

दुर्भाग्य से आज आधुनिकता की दौड़ में कुछ लोग पवित्र तीर्थों की महत्ता को फुट या मीटर में नापने लगे हैं। उन्हें लगता है कि मन्दिर की विराटता ही सबसे महत्वपूर्ण है। मैं इस नई प्रवृत्ति की आलोचना नहीं करना चाहता। पीड़ा तब होती है जब ऐसे नव-निर्माण के लिये प्राचीन मन्दिरों को गिराया जाता है। एक दर्जन से अधिक मन्दिरों की सूची मेरे पास है जो अभी सैकड़ों साल जीवन्त बने रह सकते थे, पर नव-निर्माण की भेट चढ़कर असमय में हमारे ही हाथों नष्ट कर दिये गये। इसका ताजा उदाहरण एक बार कुण्डलपुर आकर देखना चाहिये।

चिन्ता की बात यह है कि अब बुन्देलखण्ड के भी कुछ तीर्थ ऐसी प्रवृत्ति के शिकार बनने लगे हैं। कुण्डलपुर उनमें से एक है। जहां जमीन की तंगी हो वहां तो नया बनाने के लिये पुराने को गिराना समझ में आ भी सक ता है, पर, कुण्डलपुर जैसे तीर्थ पर, जहां दो-ढाई सौ एकड़ भूमि उपलब्ध है, वहां एक नया मन्दिर बनाने के लिये आठ-दस प्राचीन पूजित मन्दिरों का गिराया जाना और बड़ेबाबा का मन्दिर मिटाकर बाबा को विस्थापित करना समझ में आने जैसी बात नहीं है। यह उपसर्ग तब और भारी प्रतीत होने लगता है जब हम देखते हैं कि इस पूरे काम में समाज की कोई भागीदारी नहीं है और पुरातत्व कानून तथा राजस्व कानून की धज्जियां उड़ाकर, कमेटी के कुछ हठाग्रही भाईयों के द्वारा मनमाने ढंग से सारे काम किये जा रहे हैं।

मैं समाज से विनय पूर्वक यह कहना चाहता हूं कि अपनी प्राचीन धरोहर की रक्षा के लिये हमेशा जागरूक रहें। नव-निर्माण जहां आवश्यक हों वहां किये जायें, परन्तु उसके लिये प्राचीनतां के विनाश को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिये।

विनीत,- **नीरज जैन,**

❖ ❖ ❖

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

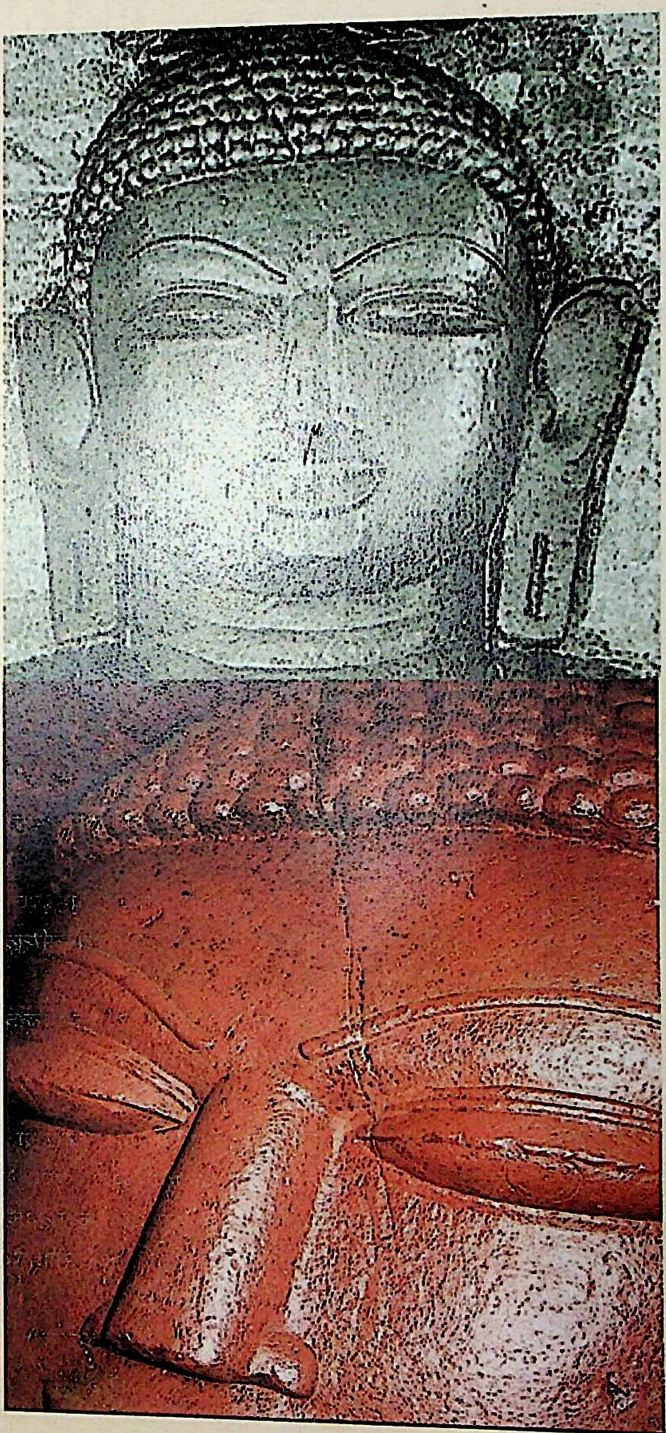

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीरज जैन

जन्म : ग्राम रीठी, जिला-जबलपुर, मध्यप्रदेश
31 अक्टूबर 1926

अतीत : जटिल संघर्षों से भरा, साहस से ओत:प्रोत ।
45 वर्ष की आयु में छोटे बेटे के साथ कॉलेज में दाखिला लेकर बी.ए. किया, फिर स्वाध्या[illegible] श्रेणी में एम.ए. ।
कविता और शेरो-शायरी में रूचि । पत्रकारिका तथा [illegible]-दर्शन के अध्ययन और लेखन की लगन ।
संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू तथा गुजराती का अभ्यास ।
धर्म प्रचार के लिये देश-विदेश का कई बार व्याप[illegible] भ्रमण ।
प्राचीन इतिहास और पुराविद्या के लिये समर्पित ।
स्थापत्य एवं मूर्ति कला की फोटोग्रॉफी और चित्र संकलन में संलग्न ।

साहित्य : विश्व-प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्रवणबेलगोल पर विशेष शोध ।

सृजन : 'महोत्सव-दर्शन',, 'गोमटेश-गाथा' तथा 'परम दिगम्बर गोमटेश्वर' 'कराहता कुण्डलपुर' आदि विख्यात कृतियों के प्रणेता । गोमटेश गाथा मराठी तथा कन्नड़ में अनूदित ।
'खुजराहो के जैन मन्दिर' अंग्रेजी में अनूदित । कुण्डलपुर, देवगढ़, चित्तौड़ दर्शन, नवागढ़ आदि अनेक तीर्थों पर परिचय पुस्तिकाएं प्रकाशित ।
'मानवता की धुरी' तथा 'अहिंसा और अपरिग्रह' प्रसिद्ध पुस्तकें ।
अहिंसा और अपरिग्रह गुजराती में भी अनूदित/प्रकाशित ।
शतधिक शोध निबंधों और रेडियो वार्ताओं का श्रेय ।
ओजस्वी वक्ता और जैन दर्शन तथा धर्म के प्रभावक व्याख्याता ।
दिसम्बर 1993 में गोमटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक की रनिंग कमेण्ट्री के कारण देशी-विदेशी टेलीविजन पर ख्यातिप्राप्त ।
अनेक समाजसेवी संस्थाओं, तीर्थ क्षेत्र समितियों तथा साहित्यिक गतिविधियों से सम्बद्ध ।

शान्ति सदन, कम्पनी बाग, सतना म.प्र. ४८५ ००१ (भारत)
दूरभाष : ०७६७२-३४०९९, फैक्स : ०७६७२-३४५९९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi